हिंदी

कुमारभारती

नौवीं कक्षा

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया। दि. ३.३.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई।

हिंदी
कुमारभारती
नौवीं कक्षा

मेरा नाम ______________ है।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

संलग्न 'क्यू आर कोड' तथा इस पुस्तक में अन्य स्थानों पर दिए गए 'क्यू आर कोड' स्मार्ट फोन का प्रयोग कर स्कैन कर सकते हैं। स्कैन करने के उपरांत आपको इस पाठ्यपुस्तक के अध्ययन-अध्यापन के लिए उपयुक्त लिंक/लिंक्स (URL) प्राप्त होंगी।

प्रथमावृत्ति : २०१७

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे – ४११००४
इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

हिंदी भाषा समिति

डॉ.हेमचंद्र वैद्य – अध्यक्ष
डॉ.छाया पाटील – सदस्य
प्रा.मैनोद्दीन मुल्ला – सदस्य
डॉ.दयानंद तिवारी – सदस्य
श्री संतोष धोत्रे – सदस्य
डॉ.सुनिल कुलकर्णी – सदस्य
श्रीमती सीमा कांबळे – सदस्य
डॉ.अलका पोतदार – सदस्य – सचिव

हिंदी भाषा अभ्यासगट

श्री रामहित यादव
सौ. वृंदा कुलकर्णी
डॉ. वर्षा पुनवटकर
श्रीमती माया कोथळीकर
श्रीमती रंजना पिंगळे
श्री सुमंत दळवी
डॉ. रत्ना चौधरी
श्रीमती रजनी म्हैसाळकर
श्रीमती पूर्णिमा पांडेय
श्रीमती अर्चना भुस्कुटे
डॉ. बंडोपंत पाटील
श्रीमती शारदा बियानी
श्री एन. आर. जेवे
श्रीमती निशा बाहेकर
डॉ. आशा वी. मिश्रा
श्रीमती मीना एस. अग्रवाल
श्रीमती भारती श्रीवास्तव
श्री प्रकाश बोकील
श्री रामदास काटे
श्री सुधाकर गावंडे
श्रीमती गीता जोशी
डॉ. शोभा बेलखोडे
डॉ.शैला चव्हाण
श्रीमती रचना कोलते
श्री रविंद्र बागव
श्री काकासाहेब वाळुंजकर
श्री सुभाष वाघ

प्रकाशक :
श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ
प्रभादेवी, मुंबई–२५

संयोजन :
डॉ.अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : आभा भागवत
चित्रांकन : श्री राजेश लवळेकर

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री राजेंद्र चिंदरकर, निर्मिति अधिकारी
श्री राजेंद्र पांडलोसकर, सहायक निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग,पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव
मुद्रणादेश : N/PB/2017-18/0.50
मुद्रक : M/S. S GRAPHIX INDIA PVT. LTD., MUMBAI

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता

और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन - अधिनायक जय हे
भारत - भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

प्रिय विद्‌यार्थियो,

नौवीं कक्षा में आप सबका हार्दिक स्वागत है । हिंदी कुमारभारती आपकी प्रिय भाषा की पाठ्‌यपुस्तक है । नौवीं कक्षा की इस पुस्तक को आपके सजग हाथों में सौंपते हुए हमें अत्यधिक आनंद हो रहा है ।

मित्रो, हम सब आपस में बातचीत करने एवं संपर्क के लिए हिंदी भाषा का उपयोग करते हैं । हिंदी हमारी मातृभाषा होने के साथ-ही-साथ हमारे राष्ट्र भारत संघ की राजभाषा भी है । अतः अपने विचार, भाव, कल्पना को दूसरों तक योग्य एवं प्रभावी रूप से संप्रेषित करने के लिए इस भाषा पर प्रभुत्व होना अत्यंत आवश्यक है । इस पुस्तक का गंभीरता से अध्ययन करने और इसका नियमित प्रयोग करने से आपकी भाषा पर प्रभुत्व रखने की क्षमता का निश्‌चित ही विकास होगा ।

इस पाठ्‌यपुस्तक में कविता, गीत, गजल, नई कविता, कहानी, निबंध, पत्र, हास्य-व्यंग्य, एकांकी आदि विविध साहित्यिक विधाओं के साथ मराठी भाषा की लोकप्रिय विधा 'भारूड' का भी समावेश किया गया है । हिंदी की बोलियों से परिचय हेतु कवित्व, सवैयों को इस पुस्तक में स्थान दिया गया है । यह सब पढ़कर आप हिंदी साहित्य के विपुल वैभव से भी परिचित होंगे । भाषा नवनिर्मिति का एक साधन है । आपकी नवनिर्मिति के आनंद में वृद्‌धि हेतु इस पुस्तक में अनेक भाषाई कृतियों को भी समुचित ढंग से समाविष्ट किया गया है ।

इन कृतियों का नियमित अभ्यास अवश्य करें जिससे आपकी विचारशक्ति, कल्पना शक्ति एवं सृजनशीलता में अभिवृद्‌धि हो सके । इन कृतियों से आपकी लेखन क्षमता और भाषाई अभिरुचि का निश्चय ही विकास होगा । दैनिक व्यवहार में आधुनिक तंत्रज्ञान का उपयोग भी अत्यंत आवश्यक है । हिंदी के माध्यम से इन साधनों के उपयोग के लिए अनेक संदर्भ, संकेत स्थल एवं पाठ्‌य सामग्री भी दिए जा रहे हैं । हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप सब इनका समुचित उपयोग करेंगे ।

आपकी कल्पनाशक्ति एवं विचारों को तीव्रतर गति देने वाली इस पाठ्‌यपुस्तक के बारे में आप अपनी राय अवश्य दें ।

आप सबको हार्दिक शुभेच्छाएँ

(डॉ. सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ पुणे-०४

पुणे
दिनांक :- २८ अप्रैल २०१७
अक्षय तृतीया

❋ अनुक्रमणिका ❋

पहली इकाई

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	समय की शिला पर	नवगीत	शंभूनाथ सिंह	१-२
२.	सींकवाली	वर्णनात्मक कहानी	सुनीता	३-८
३.	अच्छा पड़ोस	हास्य व्यंग्य निबंध	अरुण	९-१३
४.	शौर्य (पूरक पठन)	कवित्त	भूषण	१४-१६
५.	बर्फ की धरती	यात्रा वर्णन	कृष्णा सोबती	१७-२२
६.	नदी और दरिया	गजल	दुष्यंत कुमार	२३-२४
७.	मातृभूमि का मान	एकांकी	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२५-३२
८.	हिरणी (पूरक पठन)	चित्रात्मक कहानी	डॉ. रत्नकुमार सांभरिया	३३-३७
९.	मधुर-मधुर मेरे दीपक जल	कविता	महादेवी वर्मा	३८-३९
१०.	पृथ्वी-आकाश	पत्र	श्रीराम परिहार	४०-४५
११.	दिवस का अवसान	महाकाव्य (अंश)	अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	४६-४८
१२.	झलमला (पूरक पठन)	लघुकथा	पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी	४९-५१
१३.	क्या सचमुच आजाद हुए हम ?	गीत	कर्नल डॉ. वीरेंद्र प्रताप सिंह	५२-५४

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	वसंत-वर्षा	सवैया	पद्माकर भट्ट	५५-५७
२.	ताई	संवादात्मक कहानी	विश्वंभरनाथ शर्मा	५८-६५
३.	गोदान	उपन्यास (अंश)	प्रेमचंद	६६-७२
४.	निर्मल जिंदगी (पूरक पठन)	भारूड़	रमेश यादव	७३-७४
५.	चेतना	साक्षात्कार	डॉ. अब्दुल कलाम	७५-७९
६.	नवनीत	दोहरे	संत तुकाराम	८०-८१
७.	सपनों से सत्य की ओर (पूरक पठन)	भाषण	आनंद बनसोडे	८२-८८
८.	मित्रता	सत्य कहानी	चेतना	८९-९३
९.	बादल को घिरते देखा है	नई कविता	नागार्जुन	९४-९६
१०.	क्रोध (पूरक पठन)	मनोवैज्ञानिक निबंध	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	९७-१०१
११.	अद्‌भुत वीर	खंडकाव्य (अंश)	रामधारी सिंह 'दिनकर'	१०२-१०४
१२.	सच का सौदा	चरित्रात्मक कहानी	सुदर्शन	१०५-११२
१३.	विप्लव गान	कविता	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	११३-११४
	रचना विभाग			११५-१२०

भाषा विषयक क्षमता

यह अपेक्षा हैं कि नौवीं कक्षा के अंत तक विद्‌यार्थियों में भाषा विषयक निम्नलिखित क्षमताएँ विकसित हों ।

क्षेत्र	क्षमता
श्रवण	१. गद्‌य-पद्‌य की विविध विधाओं का श्रवण द्‌वारा आनंदपूर्वक रसास्वादन करना । २. आँचलिक और राष्ट्रीय सामाजिक समस्याओं को सहानुभूतिपूर्वक सुनना /सुनाना । ३. विविध संचार सेवाओं से प्राप्त जानकारी का विश्लेषण एवं मूल्यांकन करते हुए सुनना/सुनाना । ४. सुने हुए अंशों पर चिकित्सक प्रतिक्रिया देना । ५. सुनी हुए प्रभावी प्रस्तुति की प्रशंसा करना और प्रस्तुति को प्रभावी बनाने वाले मुद्‌दों का आकलन करना । ६. सुनते समय कठिन लगने वाले शब्दों, मुद्‌दों, अंशों का अंकन करना ।
भाषण-संभाषण	१. कार्यक्रमों में सहभागी होकर अपना मंतव्य प्रकट करना । २. अपने मित्रों, बड़ो के साथ हिंदी में बातचीत करना । अपने भाषण-संभाषण के समय उच्चारण में सुधार करना । ३. पठित सामग्री के विचारों पर चर्चा करना तथा पाठ्‌येतर सामग्री का आशय बताना । ४. उचित आरोह-अवरोह के साथ गद्‌य-पद्‌य, स्वकथन की प्रभावपूर्ण प्रस्तुति । ५. किसी कृति/उपक्रम/प्रक्रिया की स्पष्ट एवं क्रमबद्‌ध प्रस्तुति । ६. किसी वस्तु, व्यक्ति, स्थिति, संवेदना आदि का स्पष्ट वर्णन और सरल व्याख्या करना । ७. उद्‌धरण, मुहावरे, कहावतें आदि का भाषण-संभाषण में प्रयोग करना। ८. विनम्रता और दृढ़ता से किसी विचार के बारे में मत व्यक्त करना और सहमति-असहमति प्रकट करना ।
वाचन	१. पाठ्‌य, पाठ्‌येतर सामग्री के केंद्रीय भाव को समझते हुए मुखर एवं मौन वाचन करना । २. विविध पुरस्कार प्राप्त साहित्यकारों की जानकारी तथा जीवनियों का संपूर्ण वाचन करना। ३. लिखित अंश का वाचन करते हुए उसकी अचूकता, स्पष्टता, पारदर्शिता, अलंकारिक भाषा की प्रशंसा करना । ४. विचारों की भिन्नता, तुलना, विरोध को समझने के लिए वाचन करना । ५. साहित्यिक लेखन, अपने पूर्व ज्ञान एवं स्वःअनुभव के बीच मूल्यांकन करते हुए सहसंबंध स्थापित करना । ६. लेखन के उद्‌देश्य का आकलन करते हुए उसके स्रोत की प्रामाणिकता का पता लगाकर उचित निर्णय लेना।
लेखन	१. हिंदी के व्यावहारिक उपयोग-प्रयोग को समझकर व्यावसायिक पत्र आदि प्रकारों का लेखन करना । २. कहानी का एकांकी में तथा संवादों का कहानी में रूपांतरण करना । नियत प्रकारों पर स्वयंस्फूर्त लेखन करना । पठित सामग्री पर आधारित प्रश्नों के अचूक उत्तर लिखना । ३. गद्‌य-पद्‌य पर आधारित प्रश्न निर्मिति एवं उत्तर लेखन करना । ४. स्वच्छ, शुद्‌ध, मानक, सजावटी लेखन एवं सहज पुनरावलोकन करके शुद्‌धीकरण करना । ५. किसी विचार, भाव का सुसंबद्‌ध प्रभावी लेखन करना, व्याख्या करना, संक्षिप्त भाषा में अपनी अनुभूतियों, संवेदनाओं की संक्षिप्त अभिव्यक्ति करना । ६. किसी भाव, विचार को विस्तारित रूप देते हुए स्वयं के अनुभव का दूसरों के अनुभव से संबंध स्थापित करते हुए तुलनात्मक लेखन करना । ७. उचित प्रारूप में घटना, प्रसंग, सर्वेक्षण का वृत्तांत, टिप्पणी लेखन करना । (डायरी आदि) ८. किसी पुस्तक, चित्रपट, दूरदर्शन के कार्यक्रम नाटक आदि की समीक्षा करना । ९. लेखन को प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न तकनीकी, उद्‌धरण, कहावतें, मुहावरे, अलंकारिक शब्दावली का उचित उपयोग करना ।

अध्ययन कौशल	१. श्रवण और वाचन के समय स्वयं के संदर्भ के लिए आवश्यकतानुसार टिप्पणियों के माध्यम से पुनः स्मरण करना । २. उपयोगी शब्द उद्धरण, मुहावरे-कहावतें, भाषाई सौंदर्यवाले वाक्य, सुवचन दोहे आदि का संकलन एवं उपयोग । ३. विभिन्न अनौपचारिक तथ्यों का मातृभाषा से हिंदी और हिंदी से मातृभाषा में अनुवाद करना । ४. साक्षात्कार, अतिरिक्त सूचना तथा निर्धारित उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्न निर्मिति करना । ५. सूचनाओं को प्रस्तुत करने के लिए समुचित आलेख का चुनाव कराना ।
व्याकरण	१. पुनरावर्तन-कारक, वाक्य परिवर्तन एवं प्रयोग- वर्ण विच्छेद/ वर्ण मेल (सामान्य), काल परिवर्तन, पर्यायवाची-विलोम, उपसर्ग-प्रत्यय, २. अलंकार, छंद परिचय ३.विकारी, अविकारी शब्दों का प्रयोग ४. **अ.** विरामचिह्न (..., × × × , -०-, .) **ब.** शुद्‌ध उच्चारण प्रयोग और लेखन (स्रोत, स्त्रोत, शृंगार) ५. मुहावरे-कहावतें प्रयोग, चयन

शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक बातें ....

अध्ययन-अनुभव देने से पहले पाठ्‌यपुस्तक में दिए गए अध्यापन संकेतों, दिशा निर्देशों को अच्छी तरह समझ लें । भाषिक कौशलों के प्रत्यक्ष विकास के लिए पाठ्‌यवस्तु 'श्रवणीय', 'संभाषणीय', 'पठनीय' एवं 'लेखनीय' में दी गई हैं । पाठ पर आधारित कृतियाँ 'पाठ के आँगन' में आई हैं । जहाँ 'आसपास' में पाठ से बाहर खोजबीन के लिए है, वहीं 'पाठ से आगे' में पाठ के आशय को आधार बनाकर उससे आगे की बात की गई है । 'कल्पना पल्लवन' एवं 'मौलिक सृजन' विद्‌यार्थियों के भावविश्‍व एवं रचनात्मकता के विकास तथा स्वयंस्फूर्त लेखन हेतु दिए गए हैं । 'भाषा बिंदु' व्याकरणिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है । इसमें दिए गए अभ्यास के प्रश्न पाठ से एवं पाठ के बाहर के भी हैं । विद्‌यार्थियों ने उस पाठ से क्या सीखा, उनकी दृष्टि में पाठ, का उल्लेख उनके द्‌वारा 'रचना बोध' में करना है । 'मैं हूँ यहाँ' में पाठ की विषय वस्तु एवं उससे आगे के अध्ययन हेतु संकेत स्थल (लिंक) दिए गए हैं । इलेक्ट्रॉनिक संदर्भों (अंतरजाल, संकेतस्थल आदि) में आप सबका विशेष सहयोग नितांत आवश्यक है । उपरोक्त सभी कृतियों का सतत अभ्यास कराना अपेक्षित है । व्याकरण पारंपरिक रूप से नहीं पढ़ाना है । कृतियों और उदाहरणों के द्‌वारा संकल्पना तक विद्‌यार्थियों को पहुँचाने का उत्तरदायित्व आप सबके कंधों पर है । 'पूरक पठन' सामग्री कहीं न कहीं पाठ को ही पोषित करती है और यह विद्‌यार्थियों की रुचि एवं पठन संस्कृति को बढ़ावा देती है । अतः 'पूरक पठन' सामग्री का वाचन आवश्यक रूप से करवाएँ ।

आवश्यकतानुसार पाठ्‌येतर कृतियों, भाषिक खेलों, संदर्भों, प्रसंगों का भी समावेश अपेक्षित है । आप सब पाठ्‌यपुस्तक के माध्यम से नैतिक मूल्यों, जीवन कौशलों, केंद्रीय तत्वों के विकास के अवसर विद्‌यार्थियों को प्रदान करें। क्षमता विधान एवं पाठ्‌यपुस्तक में अंतर्निहित सभी संदर्भों का सतत मूल्यमापन अपेक्षित है । आशा ही नहीं पूर्ण विश्‍वास है कि शिक्षक, अभिभावक सभी इस पुस्तक का सहर्ष स्वागत करेंगे ।

१. समय की शिला पर

– शंभूनाथ सिंह

संभाषणीय

'समय बड़ा बलवान' इस विषय पर चर्चा कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● विद्‌यार्थियों को चर्चा के लिए मुद्‌दे दे । एक-एक मुद्‌दा लेकर विद्‌यार्थियों से चर्चा करें । ● आवश्यक सुवचन, लोकोक्तियाँ, मुहावरे आदि का प्रयोग करते हुए अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करें ।

समय की शिला पर मधुर चित्र कितने
किसी ने बनाए, किसी ने मिटाए ।।

किसी ने लिखी आँसुओं से कहानी
किसी ने पढ़ा किंतु दो बूँद पानी
इसी में गए बीत दिन जिंदगी के
गई घुल जवानी, गई मिट निशानी ।
विकल सिंधु साथ के मेघ कितने
धरा ने उठाए, गगन ने गिराए ।।

शलभ ने शिखा को सदा ध्येय माना
किसी को लगा यह मरण का बहाना
शलभ जल न पाया, शलभ मिट न पाया
तिमिर में उसे पर मिला क्या ठिकाना ?
प्रेम-पंथ पर प्राण के दीप कितने
मिलन ने जलाए, बिरह ने बुझाए ।।

भटकती हुई राह में वंचना की
रुकी शांत हो जब लहर चेतना की
तिमिर आवरण ज्योति का वर बना तब
कि टूटी तभी शृंखला साधना की ।
नयन-प्राण में रूप के स्वप्न कितने
निशा ने जगाए, उषा ने सुलाए ।।

सुरभि की अनिल पंख पर मौन भाषा
उड़ी वंदना की जगी सुप्त आशा
तुहिन बिंदु बनकर बिखर पर गए स्वर
नहीं बुझ सकी अर्चना की पिपासा ।
किसी के चरण पर वरण फूल कितने
लता ने चढ़ाए, लहर ने बहाए ।।

—०—

परिचय

जन्म : १७ जून १९१६ रावतपार, देवरिया (उ.प्र.)

मृत्यु : ३ सितंबर १९९१

परिचय : शंभूनाथ सिंह जी नवगीत परंपरा के शीर्ष प्रवर्तक, प्रगतिशील कवि के रूप में जाने जाते हैं । बहुमुखी प्रतिभा के धनी आप कहानीकार, समीक्षक, नाटककार और पुरातत्वविद भी थे ।

प्रमुख कृतियाँ : रूप रश्मि, छायालोक (पारंपरिक गीत संग्रह) समय की शिला, जहाँ दर्द नीला है, वक्त की मीनार पर (नवगीत संग्रह) उदयाचल, खंडित सेतु (नई कविता संग्रह), रातरानी, विद्रोह आदि (कहानी संग्रह), धरती और आकाश, अकेला शहर (नाटक)।

पद्‌य संबंधी

नवगीत : यह गीत का ही विकसित रूप है । इसमें परंपरागत भावबोध से अलग नवीन भावबोध तथा शिल्प प्रस्तुत किया जाता है । कवि आवश्यकतानुसार नए प्रतीकों के माध्यम से काव्य प्रस्तुत करता है ।

प्रस्तुत नवगीत में कवि ने लिखने-पढ़ने में अंतर, अंधकार के प्रकाश में परिवर्तन, आँखों में तैरते सपनों की स्थिति, प्रार्थना की प्यास आदि मनोभावों को बड़े ही मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया है ।

शब्द संसार

विकल (वि.सं.) = व्याकुल
वंचना (स्त्री.सं.) = धोखेबाजी
शलभ (पुं.सं.) = पतंगा
पिपासा (स्त्री.सं) = तृषा, प्यास

श्रवणीय

यू ट्यूब/अंतरजाल से सुमित्रानंदन पंत की कोई कविता सुनिए और उसका संक्षेप में आशय बताइए ।

आसपास

'संचार माध्यम द्‌वारा समय का पालन अचूकता से किया जाता है' इसपर चर्चा कीजिए ।

लेखनीय

आजादी की प्राप्ति में 'स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान' पर निबंध लिखिए ।

पठनीय

'व्यक्तित्व विकास में समय का व्यवस्थापन' विषय पर समाचारपत्र/लेख पढ़िए तथा उसपर टिप्पणी बनाइए ।

कल्पना पल्लवन

'विश्वबंधुता आज की माँग', इस विषय पर अपना मत लिखिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(क) आकृति पूर्ण कीजिए :

विशेषताएँ
- चित्र
- कहानी

(ख) संगीत, लय निर्माण करने वाली शब्द जोड़ियाँ लिखिए ।

(ग) 'नयन – प्राण में रूप के स्वप्न कितने निशा ने जगाए,
उषा ने सुलाए' इन पंक्तियों से अभिप्रेत अर्थ लिखिए ।

(२) कविता से प्राप्त संदेश लिखिए ।

पाठ से आगे

'नियमितता से सफलता की ओर', इसपर अपने विचार स्पष्ट कीजिए ।

मैं हूँ यहाँ

kavitakosh.org/kk/शंभुनाथ_सहि

रचना बोध

....
....
....

२. सींकवाली

–सुनीता

श्रवणीय

'वैष्णव जन ते तेणे कहिए' पद सुनिए तथा उसका आशय सुनाइए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● विद्‌यार्थियों को पद सुनाइए । ● पद में आए कठिन शब्द बताने के लिए कहें । ● पद का आशय सुनाने के लिए कहें । ● गुट बनाकर प्रस्तुति के लिए प्रेरित करें ।

सारा गाँव उन्हें कहता सींकवाली ताई । बड़े भी, छोटे भी, सभी इसी नाम से बुलाते । सालवन गाँव में जब से ब्याहकर आई थीं ताई तबसे उनके गाँव का सींक उनके नाम से जुड़ गया । ऐसा जुड़ा कि खुद अपना नाम तक उन्हें याद नहीं ।

कोई पचास बरस तो हो ही गए सींकवाली ताई को इस गाँव में आए । तब सोलह बरस की थीं । अब सत्तर से कुछ ही कम होंगी । इस बीच कौन-सा दुख नहीं झेला उन्होंने । पति किशोरीलाल फौज में थे । बड़े ही दिलेर और खुशमिजाज । हर कोई उनकी तारीफ करता । नई दुलहन बनकर सालवन गाँव में आईं सींकवाली ताई के वे सबसे खुशियों भरे दिन थे । मगर शादी के चार-पाँच बरस ही पति की मृत्यु की खबर आ गई । उसके बाद जल्दी ही सास-ससुर का साया भी सिर से उठ गया । सींकवाली ताई रह गईं अकेली, निपट अकेली ।

हालाँकि अकेली भले ही हों, दबंग इतनी थीं कि मजाल है कोई दबा ले या कोई उलटी-सीधी बात कह दे । एक की चार सुनाती थीं । इसलिए आस-पड़ोस के लोग भी जरा दूर-दूर ही रहते थे । यों भी देखने में खूब लंबी-चौड़ी, खूब ऊँची कद-काठीवाली थीं सींकवाली ताई । खूब साँवला, पक्का रंग । चेहरे पर ऐसा मर्दानापन कि कोई दूर से देख के ही डर जाए और बोली ऐसी सख्त, कड़वी कि जिसे दो-चार खरी-खरी सुना दें, उसे रात भर नींद न आए ।

सबसे ज्यादा तो डरते थे गाँव के बच्चे उनसे । जरा-सी बात पर घुड़क देतीं । कभी-कभी तो सामने वाले मैदान में ज्यादा शोर मचाने पर पास में पड़ी लाठी फर्श पर ऐसे ठकठकातीं कि बच्चे दूर भागते नजर आते । कुछ तो उनकी शक्ल देखते ही उड़न-छू हो जाते ।

डर तो शुरू में नीना को भी उनसे लगता था । नानी के कहने पर कभी-कभी सींकवाली ताई से लस्सी लेने चली जाती थी । सींकवाली ताई कभी तो उसे बेबात घुड़क देतीं और कभी प्यार से पास बिठाकर बातें करने लगतीं, '' आ बैठ, तनिक मक्खन निकालकर अभी लस्सी देती हूँ ।'' नीना डरते-डरते बैठ जाती और सींकवाली ताई को मक्खन निकालते देखती रहती । बीच-बीच में अपने स्कूल या नानी की कोई बात छेड़ देती ।

परिचय

जन्म : २९ जनवरी १९५४, सालवन (हरियाणा)

परिचय: छोटे बच्चों और किशोरों के लिए सहज-सरस कहानियाँ लिखने में सुनीता जी को बहुत आनंद मिलता है । पत्र-पत्रिकाओं में अनेक आलोचनात्मक लेख और बच्चों के लिए लिखी गई कहानियाँ, आलेख छपे हैं । आपने विभिन्न कहानियों, कविताओं का अनुवाद भी किया है।

प्रमुख कृतियाँ : साकरा गाँव की रामलीला, रंग-बिरंगी कहानियाँ, दादी माँ की मीठी-मीठी कहानियाँ, बुढ़िया की पोती आदि । इनकी महान युगनायकों पर लिखी जीवनीपरक पुस्तक 'धुन के पक्के' खासी चर्चित हुई है ।

गद्‌य संबंधी

वर्णनात्मक कहानी : जीवन की किसी घटना का रोचक, प्रवाही विस्तृत वर्णन ही वर्णनात्मक कहानी है ।

प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखिका ने कठोरता में छुपी कोमलता, बच्चों के प्रति निर्मल वत्सलता, सहानुभूति की चाहत, अवगुणों का गुणों में परिवर्तन आदि स्थितियों को बड़े सुंदर ढंग से दर्शाया है ।

सींकवाली ताई को उसकी बातें अच्छी लगतीं । पूछतीं, ''तुझे मक्खन अच्छा लगता है न ! ले खा ।'' और कटोरी में ढेर सारा मक्खन डालकर सामने रख देतीं । कभी-कभी वे चूल्हे के पास बिठाकर बातें करती जातीं और तवे से उतारकर मक्के की गरम रोटी खिलातीं । ऊपर ढेर-सा मक्खन । नीना का जी खुश हो जाता । हालाँकि जाने क्या बात थी कि सींकवाली ताई के इतना प्यार जताने पर भी वह अंदर ही अंदर डरी-सी रहती । लगता, बस अभी सींकवाली ताई सुर बदलने ही वाली हैं और फिर ऐसे कड़वे बोल सुनाएँगी कि रोते-रोते भागकर जाना होगा ।

मगर आश्चर्य ! सींकवाली ताई नीना से कभी नाराज नहीं होती थीं । कभी-कभार रूखा भले ही बोल दें, पर डाँटा कभी नहीं । सच तो यह है कि नीना उन्हें अच्छी लगने लगी थीं । शायद इसलिए कि नीना की भोली बातें सींकवाली ताई के कठोर दिल को पिघलाकर मुलायम मक्खन-सा बना देती थीं । नीना उनसे कहती, ''ताई, कहानी सुनाओ ना !''

सींकवाली ताई चाहे-अनचाहे शुरू हो जातीं और फिर उन्हें भी रस आने लगता । सुनाती जातीं और खुद भी हँसते-हँसते दोहरी होती जातीं । उनकी कहानियाँ थीं ही ऐसी मजेदार । पिद्दी-पिद्दे की कहानी उनकी सबसे प्रिय कहानी थी । जितनी बार सुनातीं, खूब हँसतीं । हँसते हुए उनका पूरा शरीर हिलता और खुशी की हिलोर से भर जाता था । कभी-कभी नीना भी उन्हें अपनी किताब में लिखी बातें बतातीं । सुनकर सींकवाली ताई खूब हैरान होतीं । मासूम बच्चों जैसा चेहरा बनाकर पूछतीं,''अच्छा ऐसा लिखा है तेरी किताब में ! बता बेटी, और क्या-क्या लिखा है तेरी किताब में ?''

यों थोड़े ही दिनों में नीना और सींकवाली ताई की ऐसी दोस्ती हुई कि जो भी देखता, हैरान होता । इस नन्हीं-सी बच्ची को भला क्यों सींकवाली ताई इतना प्यार करने लगीं ?

सींकवाली ताई को आँख से थोड़ा कम सूझने लगा है, यह भी सबसे पहले नीना को ही महसूस हुआ । हुआ यह कि एक बार नीना को घी-बूरा खिलाने के लिए रोक लिया ताई ने । घी-बूरा बना रही थीं, तभी नीना को शक हुआ, ताई घी में कहीं बूरे की जगह नमक तो नहीं डालने जा रहीं ? देखा तो टोका, ''क्या कर रही हो ताई ? यह बूरा नहीं, नमक है !''

सींकवाली ताई शर्मिंदा हो गईं, ''क्या करूँ बेटी ? आँख से कुछ सूझता ही नहीं । अच्छा हुआ जो तूने देख लिया ।'' कहते-कहते उनका चेहरा थोड़ा रुआँसा हो गया । गाँव में कोई उनसे हमदर्दी नहीं रखता था तो भला वे अपना दुख किससे कहतीं ?

नीना बोली, ''ताई, कहो तो मैं नानी से थोड़ा-सा काजल ले आऊँ ? मेरी नानी बहुत अच्छा काजल बनाती हैं । शायद उससे आपकी आँखें ठीक हो जाएँ ।''

''अच्छा, ऐसा काजल है उनके पास ? एक बार सुना तो था, पता नहीं किसने कहा था पर तेरी नानी देंगी मुझे ?''

मौलिक सृजन

'नदी और समुद्र' के बीच होने वाला संवाद अपने शब्दों में लिखिए ।

पठनीय

विनोबा भावे जी का अपने कार्यकर्ताओं को लिखा हुआ कोई पत्र पढ़िए ।

''देंगी क्यों नहीं ? अरे ताई, वो तो बहुत गुन गाती रहती हैं आपके । कहती हैं, सींकवाली ताई की जुबान भले ही कड़वी हो, पर दिल की बहुत अच्छी हैं । गाँव में उन जैसी भली और मेहनती औरत कोई और नहीं है ।'' नीना ने उत्साह से कहा ।

''अच्छा, ऐसा कहा तेरी नानी ने ? ऐसा !'' ''सच्ची कहा ताई ।'' कहकर उसी समय नीना दौड़ी-दौड़ी गई और नानी से माँगकर काजल की डिबिया ले आई । सींकवाली ताई ने सप्ताह-दो सप्ताह लगाया, तो आँख की जलन तो ठीक हो गई । थोड़ा-बहुत नजर भी आने लगा, मगर आँखें पूरी तरह ठीक नहीं हुईं । फिर तो नीना पर सींकवाली ताई का प्यार थोड़ा बढ़ गया । वे नीना को पास बिठाकर घंटों बातें करती रहतीं । प्यार से खिलाती-पिलातीं । कभी किसी दिन नीना उनके घर आने से चूक जाती, तो डंडा खटखटाते हुए चल पड़तीं । किसी तरह खुद को सँभालते हुए नीना की नानी के घर जा पहुँचती और प्यार से उसका हाथ पकड़कर ले आतीं । कहतीं, ''नीना, तू अपनी किताब भी ले ले । मुझे पढ़कर सुनाना ।''

नीना अपनी हिंदी की किताब में से कभी उन्हें सबको हँसाने वाले चतुर पीटर की कहानी सुनाती, तो कभी प्रेमचंद की दो बैलों की कहानी । सुनकर सींकवाली ताई कुछ देर तो चुप-सी रह जातीं फिर एकाएक कह उठतीं, ''सच्ची कहा भई, एकदम सच्ची कहा !'' और फिर खुद भी किसान और पिद्दी चिड़िया का किस्सा छेड़ देतीं या लोटन कबूतर का । नीना और सींकवाली ताई का यह प्यार गाँव के शरारती बच्चों को तो चुभ ही रहा था । बदला लेने के लिए उन्होंने सींकवाली ताई को तंग करना शुरू कर दिया । ताई दिन में सिर्फ एक दफे चूल्हा जलातीं और एक बार में रोटियाँ बनाकर पूरे दिन के लिए रख लेतीं । इसी को लेकर उधमी बच्चों ने गाना बनाया । वे चिल्ला-चिल्लाकर बोलते-

'सींकवाली ताई, सींकवाली ताई,
कितनी रोटी खाईं, कितनी बचाईं !
कितनी बिलौटे ने आकर चुराईं ?'

सींकवाली ताई मक्खन निकालकर एक छोटे से मर्तबान में रख देतीं और ढक्कन खोलकर उसी में से नीना को निकालकर दे दिया करती थीं । इसपर भी गाँव के बच्चों ने गाना बना लिया । वे ताई को सुनाते हुए खूब जोर-जोर से चिल्लाकर कहते -

'सींकवाली ताई, सींकवाली ताई,
खोल के ढक्कन खिला दे मक्खन !
तू पीना छाछ, हम खाएँ मक्खन !'

ताई को शरारती बच्चों की इस हरकत से गुस्सा तो बहुत आता, पर सब्र कर जातीं । बच्चों को भी पता था कि ताई को अब ज्यादा दिखाई नहीं पड़ता । तेजी से चल-फिर भी नहीं सकतीं तो फिर डर की क्या बात ?

संभाषणीय

'अंगदान का महत्त्व' इस विषय पर आयोजित चर्चा में अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

लेखनीय

किसी दिव्यांग व्यक्ति का साक्षात्कार लेने हेतु प्रश्न निर्मिति कीजिए।

✻ पर एक दिन की बात, बच्चों ने कुछ ज्यादा ही चिढ़ा दिया, तो ताई अपना गुस्सा काबू नहीं कर पाईं । लाठी लेकर पीछे-पीछे दौड़ पड़ीं । पर अभी कुछ ही आगे गई थीं कि एक गड्ढ़े में उनका पैर पड़ा लाठी दूर जा गिरी और ताई बुरी तरह लड़खड़ाकर जमीन पर आ गिरीं । सिर से खून निकलने लगा । एक पैर भी बुरी तरह मुड़ गया था और ताई हाय-हाय कर रही थीं । उन्होंने खुद उठने की दो-एक बार कोशिश की, पर लाचार थीं । बच्चे दूर से यह देख रहे थे । पर पास आने की उनकी हिम्मत नहीं हुई । आखिर गोलू और भीमा ने किसी तरह आगे आकर उन्हें सहारा दिया और उन्हें घर के अंदर ले गए । ✻

नीना ने सुना तो दौड़ी-दौड़ी घर गई, नानी को बुला लाई । नानी और नीना दोनों बड़े प्यार से सींकवाली ताई को अपने घर ले गए । पूरे महीने तक नीना अपनी नानी की मदद से सींकवाली ताई की खूब सेवा करती रही । उन्हें हल्दी मिला दूध पिलाया । सिर पैर पर हल्दी-तेल लगाकर पट्टियाँ बाँधीं । सींकवाली ताई के मुख से नीना के लिए लगातार आशीर्वाद निकलते रहते । उनकी कड़वाहट न जाने कहाँ गायब हो गई थी। यहाँ तक कि जिन बच्चों के कारण वे गिरीं, उनके लिए भी कोई कड़वा शब्द उनके मुँह से नहीं निकला ।

बच्चे पहले तो दूर-दूर, डरे-डरे से रहे । पर फिर वे भी नीना के साथ मिलकर ताई की सेवा में जुट गए । कोई महीने, डेढ़ में ही पूरी तरह ठीक हो गईं । ताई को नीना और बच्चे ही उन्हें घर छोड़कर आए । अब तो बच्चे हर समय उन्हें घेरे रहते । अपनी किताबों मे से पढ़-पढ़कर उन्हें कहानियाँ सुनाते । महाभारत और रामायण की कथाएँ भी । सुनकर ताई भी खुश होकर उन्हें दिलचस्प किस्से-कहानियाँ सुनातीं । कभी किसी अलबेले जादूगर की तो कभी पिद्दीपुर की महारानी की। बचपन में सुनी हजारों कहानियाँ सींकवाली ताई को याद थीं और उनका खजाना कभी खत्म होने में ही नहीं आता था । उन्हें सुन-सुनकर बच्चे हँसते । संग-संग ताई भी ।

अचरज की बात यह कि नीना की नानी के काजल का असर था या कि बच्चों की खिल-खिल का, सींकवाली ताई की आँखें भी काफी कुछ ठीक हो चली थीं ।

अब सींकवाली ताई कभी-कभी कहा करतीं, ‘‘आज मैं समझ पाई हूँ कि प्यार लुटाने से ही प्यार मिलता है ।’’ नीना मुसकराकर कहती, ‘‘ताई, जब मैं बड़ी होऊँगी, तो ‘सींकवाली ताई की कहानियाँ’ नाम से तुम्हारी कहानियों की किताब छपवाऊँगी ।’’ सुनकर बलैयाँ लेती थीं ताई और इस तरह मीठी-मीठी, मोहक हँसी हँसतीं कि कुछ न पूछो ।

—०—

✻ परिच्छेद के आधार पर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

(१) संजाल :

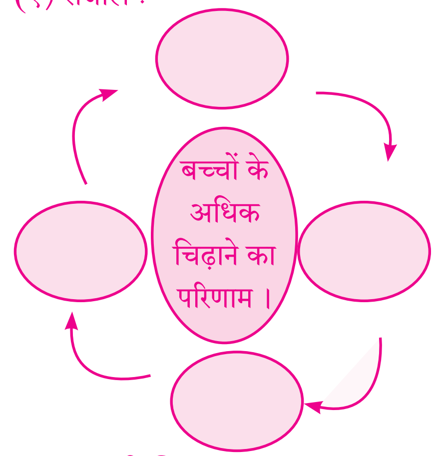

(२) उत्तर लिखिए :

‘बच्चे दूर से यह देख रहे थे ।’ इस वाक्य से होने वाला बोध

(३) परिच्छेद में आए शब्द युग्म :

(४) ‘गुस्से पर काबू रखना’ इसपर अपने विचार लिखिए ।

आसपास

नेत्र दिव्यांग विद्यालय में स्वयं जाकर वहाँ की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कीजिए ।

शब्द संसार

सींक (स्त्री.सं.) = पतला कड़ा डंठल
दिलेर (वि.फा.) = बहादुर, वीर, साहसी
खुशमिजाज (वि.सं.) = प्रसन्न चित्त
दबंग (पुं.सं.) = जबरा, प्रभावशाली
हमदर्दी (स्त्री. सं.) = सहानुभूति
मर्तबान (पुं.सं.) = बरनी
सब्र (पुं.सं.) = धैर्य
दिलचस्प (वि.फा.) = मनोरंजक

मुहावरे

उड़न-छू हो जाना = भाग जाना
बलैयाँ लेना = वात्सल्य प्रकट करना ।

https://youtu.be/9lHH3UbZhr0

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) संजाल :

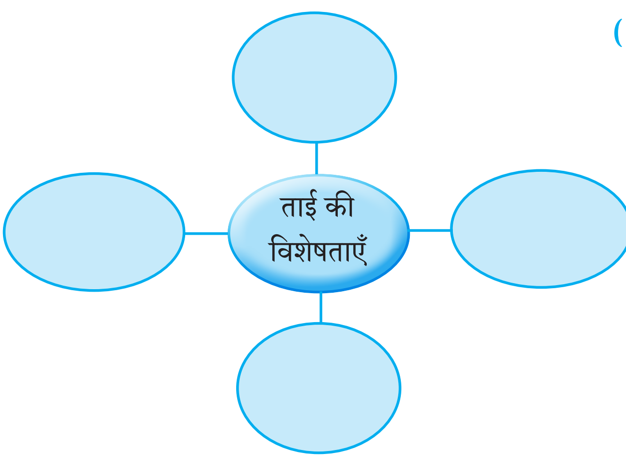

(ख) कहानी में प्रयुक्त पात्रों के नामों की सूची बनाइए ।

(२) ताई का वात्सल्य प्रकट करने वाले वाक्य ढूँढ़कर लिखिए ।

पाठ से आगे

बच्चों से प्रेम करने वाले महापुरुषों के जीवन के कोई प्रसंग बताइए ।

स्वमत

'प्यार लुटाने से ही प्यार मिलता है' इसपर आपके विचार लिखिए ।

रचना बोध

....
....
....

भाषा बिंदु

शुद्ध–वाक्य

१. अशुद्ध शब्द को रेखांकित कर वाक्य शुद्ध करके तालिका में लिखिए :–

क्र.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
१.	अनेक व्यक्तियों ने प्रदर्शनी देखी ।	
२.	मैं बात को हँसी से टाल गया ।	
३.	कल मैंने उसका साथ करा था ।	
४.	गोपाल जानता है कि शायद उसका मित्र बीमार है ।	
५.	तुम मेरे मित्र हो, मैं आपको खूब जानता हूँ ।	
६.	गत रविवार वह मुंबई जाएगा ।	
७.	वहाँ कोई लगभग एक दर्जन सेब रहे होंगे ।	
८.	तुमने मेरी पुस्तक क्यों नहीं लौटा दी है ?	
९.	हिंदी शब्दों को, प्रयोग के आधार पर लेखन करना ।	
१०.	मैं लिखना–पढ़ना करने लगा हूँ ।	

पर्यायवाची

२. निम्न शब्दों के तीन पर्यायवाची शब्द रिक्त स्थान में लिखिए :–

क्र.	शब्द	पर्यायवाची शब्द			
१.	अन्य	भिन्न			
२.	अनुचर				
३.		हर्ष			
४.		खेतिहर			
५.	मनुष्य				
६.		रत्नाकर			
७.		अरण्य			
८.	सुगंध				
९.		पर्ण			
१०.	पवन				

३. अच्छा पड़ोस

–अरुण

आसपास

भारत तथा पड़ोसी राष्ट्रों के सहसंबंध के संदर्भ में चर्चा कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● विद्‌यार्थियों से पड़ोसी राष्ट्रों के नाम और जानकारी पूछें । ● पड़ोसी राष्ट्रों के आपसी संबंधों के बारे में कहलवाएँ । ● पड़ोसी धर्म निभाने वाली संस्मरणीय घटना बताने के लिए प्रेरित करें।

मेरे सब पड़ोसी कहते हैं कि उनका पड़ोस बहुत अच्छा है । यह सुन–सुन कर मेरे मन में आग लग जाती है । चाहता हूँ कि वे आगे से पड़ोस का नाम न लें । पर क्या करूँ, हर आदमी की कुछ विवशता होती है; मेरी भी है । तभी कोई न कोई आकर कटे पर नमक छिड़कता रहता है– 'तुम्हारा पड़ोसी अपने पड़ोस की बहुत तारीफ कर रहा था ।' भई क्यों नहीं करेगा तारीफ ! बुद्‌धू और दब्बू पड़ोसी सब चाहते हैं ।

परसों की बात है । शर्मा जी का नौकर मेरी खाट वापिस कर गया है । एक साल दो मास चार दिन बाद भी वह इसलिए वापिस आई थी क्योंकि उसमें जान नहीं रही थी । बाध उधड़े पड़े थे और अदवान नदारद थी । शर्मा जी ने उसे पिछले साल अपने घर मेहमान आने के उपलक्ष्य में मँगाई थी । उस समय पत्नी ने कहा था, ''टूटी खाट दे दो ।'' पर मैं लड़ पड़ा था– ''मेहमान क्या कहेंगे । सबसे अच्छी खाट जानी चाहिए ।'' वह खाट अखबार के विज्ञापनों में 'इस्तेमाल से पहले' का चित्र थी और जो परसों लौटकर आई है, वह 'इस्तेमाल के बाद' की प्रतिरूप थी । मैंने दबी जबान से पूछा भी–''भई, इसकी अदवान की रस्सी कहाँ गई ?''

नौकर ने कहा, ''बाबू जी से पूछूँगा ।'' मेरे पड़ोसी भी इतने भले हैं कि उसी समय नौकर से जवाब भिजवा दिया–उनकी कपड़े सुखाने की बिलंग की रस्सी टूट गई थी, सो मेरी रस्सी ने उनकी बड़ी सहायता की है । एक दो दिन में वे बाजार से नई रस्सी ले आएँगे, तब मेरी अदवान वापिस भेज देंगे ।

बगल के हजेला साहब को अखबार पढ़ने का शौक है । वह यह कहते हैं, ''मेरे यहाँ स्टेट्‌समैन और तुम्हारे घर हिंदुस्तान टाइम्स आता है । मैं जानता हूँ कि ये अखबारवाले बड़ी बेपर की उड़ाते हैं, परंतु दोनों को साथ पढ़कर मैं सच को ढूँढ़ निकालता हूँ ।'' वैसे मैं जानता हूँ कि वे भी बेपर की उड़ा रहे हैं, उनके घर कोई अखबार नहीं आता । समय के पाबंद इतने हैं कि अखबार आने के पूरे दो मिनट बाद उनकी आवाज आती है– ''क्यों भई, अखबार आ गया क्या ?'' अखबार उड़ जाता है और शाम को मेरे दफ्तर से लौटने के बाद ही वह लौटता है । मैं यही सोचकर दिल को मना लेता हूँ कि

परिचय

जन्म : ३ जनवरी १९२८ मेरठ (उ.प्र.)

परिचय : कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार अरुण जी ने साहित्य की विविध विधाओं में भरपूर लेखन किया है । इसके अतिरिक्त १९९९ में आपका समग्र बालसंकलन प्रकाशित हुआ जिसमें बच्चों के लिए लिखी १४ पुस्तकें संकलित हुईं ।

प्रमुख कृतियाँ : कुल १०४ पुस्तकें प्रकाशित । बृहद हास्य संकलन (कहानी संग्रह), मेरे नवरस (एकांकी संग्रह) आदि ।

गद्‌य संबंधी

हास्य व्यंग्य निबंध : किसी विषय की तार्किक, बौद्‌धिक विवेचना करने वाला लेख निबंध होता है । हास्य व्यंग्य निबंध में उपहास का प्राधान्य होता है ।

प्रस्तुत निबंध में लेखक ने पड़ोसियों के व्यवहार पर करारा व्यंग्य किया है ।

बहुत-सी जगह ऐसी हैं जहाँ अखबार अगले दिन पहुँचते हैं और वहाँ के रहने वालों को एक दिन बासी खबरें पढ़ने को मिलती हैं ।

आपको एक भेद की बात बताता हूँ, कहीं मेरे पड़ोसियों को न बता दीजिए। मेरी जितनी किताबें हैं सब पर मेरे दोस्तों का नाम लिखा है। इसका राज यह है कि किताबें खरीदकर मैं लाता हूँ और पढ़ता सारा मोहल्ला है । कई बार सोचा कि यह शौक छोड़ दूँ किंतु जिसकी तलब पड़ गई वह आदत कहाँ छूट सकती है । पहले किताबें पड़ोस में माँगी जाती थीं, वहीं रमी रह जाती थीं । इस बेवफाई से बचने के लिए मैंने यह तरकीब लड़ाई है कि किताब खरीदते ही उसपर किसी दूसरे का नाम डाल देता हूँ । जिससे पड़ोसी लोग वापिस कर देते हैं और यदि वापिस नहीं भी कर रहे होते हैं तो मैं उनपर जोर डाल सकता हूँ- ''भई, दूसरे की किताब है, वह मेरी जान खा रहा है ।'' जिस दिन से यह युक्ति भिड़ाई है, अस्सी प्रतिशत पुस्तकें मुझे वापिस मिल गई हैं ।

चाय, चीनी माँगकर ले जाना न मालूम के बराबर हो गया है पर मेरी तो बाल्टी और कड़ाही भी मँगी चली जाती हैं । रोजमर्रा की चीज देने का एक नुकसान यह है कि उन्हें लौटाने कोई नहीं आता, मुझे ही उनके घर के पाँच-छह चक्कर काटने पड़ते हैं ।

बाल्टी का उदाहरण लीजिए । बाबू रामकृष्ण माँग कर ले गए थे । पहली बार वापिस लेने गया तो द्‌वार में घुसते ही पता चला कि वे घर पर नहीं हैं अगली बार वे नहा रहे थे । मैं पंद्रह मिनट बैठा रहा, लेकिन उनकी पत्नी ने कहला भेजा कि नहाते ही वे पूजागृह में चले जाते हैं और एक घंटे बाद निकलते हैं । भाई, अपनी बाल्टी लेनी थी, सो मैं भी ताक में लगा रहा । एक दिन अपने छज्जे से मैंने उन्हें गली में घूसते हुए देख लिया और झटपट नीचे उतरकर उन्हें अपनी बैठक में साइकिल रखते हुए आ पकड़ा । मुझे देखकर वे खिझाई हँसी हँसे और खुद बखुद उन्हें बाल्टी याद हो आई । नौकर को आवाज लगाकर बोले, ''अरुण जी की बाल्टी दे जा ।''

नौकर बाहर निकला, ''बहू जी कह रही हैं वह तेल में सनी पड़ी है, हम शाम को साफ करके स्वयं भेज देंगे ।'' मैं शिष्टाचार में मुस्कराया, ''भाई, जरूरी काम है । मँगा दो, हम खुद साफ कर लेंगे ।''

उन्होंने भी नौकर को धुड़का, ''जा, ऐसी ही ला दे । उनकी बाल्टी है, बेचारे तंग हो रहे होंगे । तुम लोगों को चीज मँगानी तो याद रहती है .....'' अपनी डाँट को अधूरी छोड़कर वे मेरी ओर मुड़े, ''अरुण जी, रोजाना वापिस करने की सोच रहा था, लेकिन काम नहीं निपटा था और सच्ची बात तो यह है कि काम अभी निपटा कहाँ है ।''

गरज यह है कि बाल्टी वापिस आई, जो बिलकुल साफ थी और वापिस लेकर चलते समय उनकी बातों ने मुझे यह अनुभव करा दिया कि केवल दस दिन में बाल्टी वापिस लेते हुए मैं ''उनपर बड़ा अन्याय कर रहा हूँ ।''

छोटी चीजों को मारिए गोली, मोटी चीज लीजिए । पिछले साल दिवाली

ध्वनि प्रदूषण के बारे में अपने शब्दों में लिखिए ।

लेखक वा.रा. गाणार / प्रवीण कारखानीस का कोई एक यात्रा वर्णन पढ़िए ।

से पहले मेरे घर पर पुताई चल रही थी । एक दिन सवेरे दस बजे बिलकुल मिले घर के पड़ोसी भटनागर साहब की आवाज आई । ''अरुण जी, आपके यहाँ सीढ़ी है ?'' मैंने बगल में झाँका, वे बड़ी शांति से मेरे राज को सीढ़ी पर चढ़े पुताई करते देख रहे थे । बोला, ''जी हाँ ।''

''जरा भेज दीजिए । मेरा पानी का बंब कचरे से भर गया है । उसे ठीक करने मिस्त्री आया है । थोड़ी देर में वापिस कर दूँगा ।'' मैंने जवाब दिया, ''मैंने भी आज के लिए मँगाई है । शाम को राज के जाने के बाद आप ले लीजिएगा । कल सुबह मुझे वापिस भेजनी है । ऊपर की पुताई नहीं निपटी तो दिक्कत हो जाएगी ।''

वे हँस पड़े, ''आप भी कमाल करते हैं । आजकल मिस्त्री को पकड़ लाना हँसी ठट्ठा नहीं है । दस दिन से चक्कर लगा रहा हूँ, तब आज पकड़ाई में आया है । कुल पंद्रह बीस मिनट लगेंगे ।''

मैंने हार मान ली, ''अच्छा मँगवा लीजिए ।''

''मँगवाऊँ किससे ! जरा मेहरबानी करके अपने राज के हाथ भेज दीजिए ।'' तब का गया हुआ राज पूरे तीन घंटे बाद लौट कर आया । पूछने पर पता चला कि उससे सीढ़ी पकड़ने को कहा गया था, कहीं सीढ़ी रपट न जाए । दूसरी बार मैं इससे भी अधिक अच्छा पड़ोसी सिद्ध हुआ । राज पुताई कर रहा था इस बार शर्मा जी पधारें । ''आपके घर राज काम कर रहा है ?''

''जी हाँ,'' मैंने कहा ''आज उसे मेरे घर भेज दीजिए । एक दो छेद बंद करवाने हैं, चूहों ने तंग कर दिया है और भी मरम्मत करानी है ।''

मैंने अच्छे पड़ोसी के नाते राज को आते ही उनके घर भेज दिया । पाँच मिनट बाद शर्मा जी पधारें, ''भाई साहब, आपके यहाँ सीमेंट होगा ?''

सीमेंट का नाम सुनकर औसान ढीले हो गए । दस दिन खड़े होकर दो बोरी मिला था । ''बात यह है ...

''आप चिंता न करें । मेरे साढ़ू का भतीजा सप्लाई में है । बस, एक तसला दे दीजिए मेरा आज का काम चल जाएगा । एक दो दिन में मैं आपको बोरी ला दूँगा ।''

मन मार कर हाँ करनी पड़ी । एक तसला करके मेरी एक बोरी खाली हो गई । मुझे वही चुटकुला याद आ गया । आप के पास माचिस होगी ?'' और माचिस लेने के बाद, ''फिर तो सिगरेट भी होनी चाहिए ?''

एक बोरी सीमेंट और आज की दो दिन की मजदूरी खोकर मुझे अच्छा पड़ोसी बनने में कोई रोक सकता है ? बस पड़ोसियों को कुछ डर है तो मेरी पत्नी से किंतु वह भी बचपन से पड़ी बुरी-भली आदतों को कहाँ तक कन्ट्रोल कर सकती है ।

सारा पड़ोस कहता है कि मैं अच्छा पड़ोसी हूँ और मैं तथा पत्नी जल-भुनकर रह जाते हैं ।

—०—

मौलिक सृजन

'कैशलेस इंडिया सच या सपना' इसपर अपने विचार स्पष्ट कीजिए ।

संभाषणीय

पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होळकर जी की जीवनी का अंश पढ़िए और उनका सामाजिक कार्य बताइए ।

श्रवणीय

बचपन की संस्मरणीय घटना सुनाइए ।

शब्द संसार

बाध (पुं.सं.) = खाट बुनने की रस्सी (सुतली)
विवशता (भा.सं.) = लाचारी
अदवान (स्त्री.सं.) = उनचन
नदारद (वि.फा.) = गायब
बिलंग (स्त्री.अ.) = कपड़े सुखाने की रस्सी
तलब (स्त्री.अ.) = इच्छा, चाह, आवश्यकता
तरकीब (स्त्री.अ.) = युक्ति, उपाय
रोजमर्रा (क्रि.वि.) = नित्य
तसला (पु.सं.) = एक प्रकार बड़ा और गहरा बर्तन

मुहावरे

कटे पर नमक छिड़कना = दुखी को अधिक दुख देना / बुरी लगने वाली बात कहना
औसान ढीले होना = घबरा जाना
जल-भुनकर रह जाना = बहुत गुस्सा आना

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए

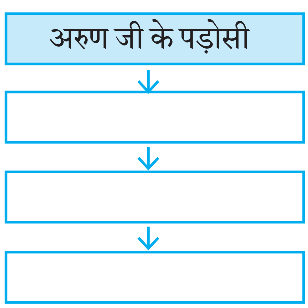

(ख) अरुण जी के घर से माँगी जाने वाली चीजें

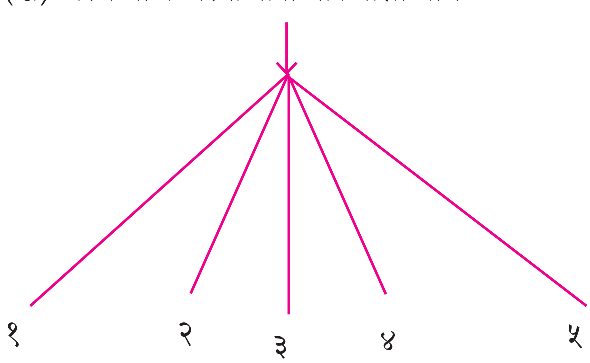

(२) उचित विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए :

(च) पानी का बंब ठीक करने .... (लुहार/सुनार/मिस्त्री) आया।

(छ) दिवाली से पहले मेरे घर ......(छिपाई/पुताई/लिपाई) चल रही थी।

(३) पाठ में प्रयुक्त अखबारों के नाम लिखिए ।

पाठ से आगे

'शालेय अनुशासन और विद्यार्थी' विषय पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए ।

रचना बोध

....
....
....

भाषा बिंदु

(१) निम्न पत्र में आए कालों के वाक्यों को ढूँढ़कर लिखिए तथा निर्देशानुसार परिवर्तित करके पुनः लिखिए :-

धन्यवाद पत्र

...... घर क्र.
...... ग्राम/शहर
...... जिला
दिनांक ......

सम्माननीय .... जी

सादर नमस्कार ।

मैं आपको नहीं जानता । आप मुझे नहीं जानते । मेरे और आपके बीच एक ही नाता है - एक भले इनसान का । मैं आपके द्‌वारा भिजवाई गई अटैची को पाकर हृदय से कृतज्ञ हूँ । मेरा रोम-रोम आपको शुभकामना दे रहा है ।

मैं रेलगाड़ी में भूली हुई अटैची के कारण बहुत परेशान था । मेरे सारे सर्टीफिकेट, पैसे, महत्त्वपूर्ण कागजात उस अटैची में थे । पिछले तीन दिनों की अथक कोशिश के बाद मेरा मन निराश हो चुका था । मुझे लगने लगा था कि जैसे इस दुनिया में ईमानदारी बची ही नहीं है परंतु आपने मेरी अटैची अपने बेटे के हाथों भेजकर मेरी सारी निराशा को आशा में बदल दिया । तब से मैं बहुत प्रसन्न हूँ ।

मान्यवर ! आपकी ईमानदारी ने सचमुच मुझे नया विश्वास दिया है । आप विश्वास रखिए, भविष्य में मैं किसी की भी परेशानी दूर करने का प्रयास करूँगा ।

मैंने अटैची देख ली है । एक-एक वस्तु यथास्थान सुरक्षित है । आपका हृदय से धन्यवाद ।

भवदीय
......

(२) निर्देशानुसार पत्र से काल ढूँढ़िए एवं परिवर्तित करके लिखिए :-

क्र.	काल	वाक्य	काल	परिवर्तित वाक्य
१.	सामान्य भूतकाल		सामान्य वर्तमान काल	
२.	सामान्य वर्तमान काल		सामान्य भविष्यकाल	
३.	सामान्य भविष्यकाल		पूर्ण भूतकाल	
४.	अपूर्ण वर्तमान काल		अपूर्ण भूतकाल	
५.	पूर्ण भूतकाल		सामान्य वर्तमानकाल	

४. शौर्य

– भूषण

पूरक पठन

छूटत कमान और तीन गोली बानन के,
मुसकिल होति मोरचान हू की ओट मैं ।।
ता समै सिवराज हुकुम कै हल्ला कियो,
दाबा बांधि परो हल्ला बीर भट जोट मैं ।
'भूषन' भनत तेरी हिम्मति कहाँ लौं कहौं
किम्मति इहाँ लगि जाकी भट झोट मैं ।
ताव दै दै मूंछन, कंगूरन पै पाँव दै दै,
अरि मुख घाव दै-दै, कूदि परैं कोट मैं ।।१।।

साजी चतुरंग, वीर रंग में तुरंग चढ़ि,
सरजा शिवाजी जंग जीतन चलत है ।
भूखन भनत, नाद बेहद नगारन के,
नदी-नद मद गैवरन के रलत है ।
ऐल-फैल खैल-भैल खलक में गैल-गैल,
गजन की ठेल-पेल सैल उसलत है ।।
तारा-सो तरनि धूर-धरा में लगत, जिमि
थारा पर पारा, पारावार यों हलत है ।

परिचय

जन्म : १६१३ ई तिकंवांपुर, कानपुर (उ.प्र)
मृत्यु : १७०५
परिचय : हिंदी साहित्य में भूषण का विशिष्ट स्थान है। वे वीररस के अद्‌वितीय कवि थे । रीतिकालीन कवियों में वे पहले कवि थे जिन्होंने हास-विलास की अपेक्षा राष्ट्रीय भावना को प्रमुखता दी । आपकी रचनाओं में शिवाजी महाराज और छत्रसाल के शौर्य-साहस, प्रभाव-पराक्रम, तेज और ओज का सजीव वर्णन हुआ है। आपने कवित्त और सवैया छंद का प्रमुख रुप से प्रयोग किया है।
प्रमुख कृतियाँ : शिवराज भूषण, शिवा बावनी और छत्रसाल दशक (काव्यसंग्रह)

पद्‌य संबंधी

कवित्त : यह वार्णिक छंद है । इसे धनाक्षरी छंद भी कहते हैं । इस छंद में ओजपूर्ण भावों की अभिव्यक्ति सफलता के साथ होती है ।

प्रस्तुत कवित्त में छत्रपति शिवाजी महाराज की वीरता का वर्णन विविध रूपों में किया गया है । उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को उजागर करने का सार्थक प्रयास किया गया है ।

alokshukla.com/Blog/OnLineBook.aspx?P95

गरुड़ को दावा जैसे नाग के समूह पर
दावा नाग जुह पर सिंह सिरताज को
दावा पुरहूत के कूल पर
दावा सब पच्छिन के गोल पर बाज को
भूषण अखंड नव खंड महि मंडल में
रवि को दावा जैसे रवि किरन समाज पे
पूरब-पछांत देश दच्छिन ते उत्तर लौं
जहाँ पातसाही तहाँ दावा सिवराज को ।

ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहन वारी
ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहाती है ।
कंद मूल भोग करैं, कंद मूल भोग करैं,
तीन बेर खातीं, ते वे तीन बेर खाती हैं ।।
भूषण शिथिल अंग, भूषन शिथिल अंग,
बिजन डुलाती ते वे बिजन डुलाती हैं ।
'भूषन' भनत सिवराज बीर तेरे त्रास,
नगर जड़ाती ते वे नगन जड़ाती हैं ।।

—०—

('शिवा बावनी' से)

पठनीय

हिंदी उपन्यास 'श्रीमान योगी' का अंश पढ़िए । 'क्रांतिदिन' के समारोह में प्रस्तुत कीजिए ।

संभाषणीय

कवि कुसुमाग्रज लिखित 'गर्जा महाराष्ट्र माझा' यह गीत समूह में प्रस्तुत कीजिए ।

लेखनीय

महाराष्ट्र के समाजसेवियों के नाम तथा उनके कार्यों की सूची बनाइए ।

श्रवणीय

छत्रपति शिवाजी महाराज के शौर्य संबंधी वीररस पूर्ण पोवाड़ा सुनिए ।

आसपास

महाराष्ट्र के प्रमुख गढ़-किलों की जानकारी प्राप्त कीजिए ।

कल्पना पल्लवन

'भारत भूमि वीरों की भूमि' इस विचार को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

शब्द संसार

मोरचा (पुं.फा.) = युद्ध में आमना-सामना
साजी (क्रि.) = सजाकर
भनत (क्रि.) = कहते हैं
रलत (क्रि.) = मिलना, पूर्ण होना
तरनि (स्त्री.सं.) = नाव, तरौना
पारावार (पुं.सं.) = आर-पार, दोनों तट; सीमा
पुरहूत (पुं.सं.) = इंद्र
पातसाही (पुं.सं.) = बादशाही
मंदर (पुं.सं.) = स्वर्ग, पहाड़
बिजन (पुं.सं.) = पंखा, अकेले
खलक (पुं.अ.) = संसार, लोक

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) संजाल :

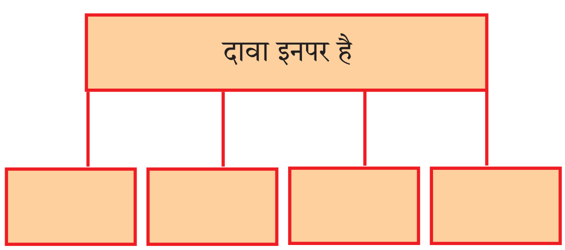

(ख) पद्य में प्रयुक्त दिशाएँ :

१. ------------ २. ------------

(ग) दिए गए शब्द के वर्णों का उपयोग करके छह अर्थपूर्ण शब्द तैयार कीजिए :

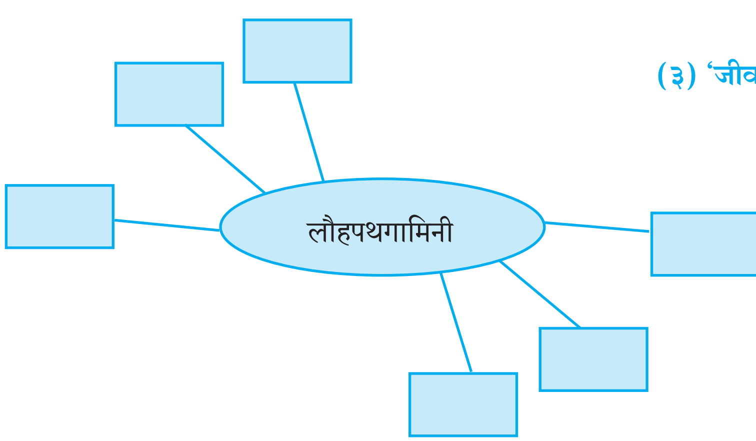

पाठ से आगे

'हमें अपने इतिहास पर गर्व है' इसपर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

(२) पाठ से बीस शब्द लेकर उन्हें वर्णक्रमानुसार लिखिए ।

(३) 'जीवन में साहस जरूरी है ', इसपर अपने विचार लिखिए ।

रचना बोध

....
....
....

५. बर्फ की धरती

–*कृष्णा सोबती*

मौलिक सृजन

बर्फीले प्रदेशों के चित्रों का कोलाज तैयार कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● विद्‌यार्थियों से चित्रों का संग्रह करवाएँ । ● उन चित्रों पर पाँच वाक्य बोलने के लिए कहें ।
● गुट बनाकर कोलाज बनवाएँ ।

ऊपर निर्मल-उजला आकाश, नीचे चाँद की-सी धरती और उसपर चलती मैं-इस विशाल दृश्य का हिस्सा । मैं मन ही मन ऋचाओं के भावलोक को दोहराने लगती हूँ ।

धरती और आकाश को परिक्रमा करते सात घोड़ोंवाले रथ में तेजस्वी सूर्य । यशस्वी सूर्य हिमालय के शिखरों पर सदा-सदा चमकतें रहें । हमें अपनी ऊर्जा से भरते रहें । मैं उषा काल में इस पर्वतीय धरती पर चलते हुए, ऋषियों के कुछ शब्द, कुछ पंक्तियाँ मूल में गुनगुनाना चाहती हूँ पर कुछ भी कंठस्थ नहीं । मैं खामोशी से मन ही मन कुछ अपना ही गुनगुनाती हूँ ।

तीन लोक-माना जाता है कि देवताओं के लोक का रंग श्वेत है । धरती पर मानवीय लोक का रंग लाल है । थल के नीचे, पानी का पाताललोक नीले रंग का है । अजीबों-गरीब जगह है । भारत का यह टुकड़ा लद्‌दाख । उजली-तीखी धूप और घाटी के पेंदें में सुनसान इलाकों के विस्तार फैले पड़े हैं । तरह-तहर के रंगो की चट्‌टानें । मटमैली, स्लेटी, तांबई और रेतीली भी ।

लद्‌दाख कई नामों से जाना जाता है-मारयुल, लाल धरती, मांगयुल । बहुत से लोगों का घर, खाछांन-पा अर्थात बर्फ की धरती ।

इतिहासकारों के मत के अनुसार प्रसिद्‌ध चीनी यात्री ने इस प्रदेश का जिक्र इसी नाम से किया है । इसे बुद्‌ध का कमंडल भी कहा जाता है ।

एक और सार्थक और सुंदर नाम है लद्‌दाख का-बुद्‌धथान । बौद्‌ध विहार, गोपाओं को देखकर मुझे यह नाम बहुत भाया ।

खारदूलांग-सुबह नाश्ते के लिए ड्रीमलैंड पहुँची । खाना शुरू ही किया था कि टूरिस्ट विभाग के साहिब खारदूलांग के लिए मेरा परमिट ले आए ।

''मैम, गाड़ी बाहर खड़ी है । आप जाने के लिए कितना वक्त लेंगी ?''

''सिर्फ दस मिनट । हाँ, लैंडरोवर में हम लोग कितने होंगे ?''

''तीन ! – आप, मैं और ड्राइवर साहिब ।''

''नाश्ता लें, हम बाहर इंतजार कर रहे हैं ।''

हमने नाश्ता खत्म किया और लंच के लिए तीन पराठे और तीन आमलेट ऑर्डर किए । थरमस में पानी भरवाकर हम खारदूलांग के लिए निकले । शहर से बाहर निकलते-निकलते जैसे पहाड़ों की शृंखलाएँ दूर पर दूर होती गई ।

लेह से खारदूलांग ग्लेशियर से पानमिक होते हुए काराकोरम तक पहुँचा

परिचय

जन्म : १८ फरवरी १९२५ गुजरात (अविभाजित भारत)

परिचय : हिंदी लेखन के क्षेत्र में सोबती एक जाना-माना नाम है। आख्यायिका, कहानी, निबंध, उपन्यास आदि को आपने विलक्षण ताजगी दी है ।

प्रमुख कृतियाँ : डार से बिछुड़ी (कहानी संग्रह) तिन पहाड़ (यात्रा विवरण) सूरजमुखी अंधेरे के (उपन्यास) शब्दों के आलोक में (रचनात्मक निबंध) हमदशमत (संस्मरण) आदि ।

गद्‌य संबंधी

यात्रा वर्णन : इसमें अपने द्‌वारा किए गए किसी पर्यटन की अपनी अनुभूतियों, प्रकृति, कला का निरीक्षण, स्थान की विशेषताओं आदि का लगावपूर्ण वर्णन किया जाता है ।

प्रस्तुत पाठ में सोबती जी ने लद्‌दाख के प्राकृतिक सौंदर्य का बहुत ही सूक्ष्म वर्णन किया है ।

जा सकता है ।

एकाएक लैंडरोवर रुकी पहाड़ के निर्जन वीराने में एक तंबू के सामने । ड्राइवर साहिब ने परमिट दिखाया, रजिस्टर में एंट्री की और गाड़ी सन्नाटों को चीरती चढ़ाई पर सरकने लगी ।

काश ! परमिट चेक करने की ड्युटी मेरे पास होती । मैं मुस्तैदी से उसे निभाती और अपनी सोच को भी कागज पर उतारकर ढंग से अंजाम देती । इस एकाकी में टूरिस्ट साहिब बताते हैं कि यह वह जगह है जहाँ हकीकत फिल्म की शूटिंग की गई थी । मैं हकीकत के फौजी नायक बलराज साहनी को यूनीफॉर्म में देखती हूँ और भीष्म साहनी को याद करती हूँ । लगा इस सुनसान में हकीकत का शेर किसी चोटी के पीछे से अब भी धड़क रहा है । रोवर के पहिए चढ़ाई को माप रहे हैं और साथ-साथ दौड़ रही हैं काली-भूरी पर चट्टानें । आँखें वीराना देख-देख परेशानी से ऊँघने लगीं । गला सूखने लगा । दो चार पानी के घूँट लिए । बस इतना ही । पानी है बेशकीमती । एक लंबी चढ़ाई के बाद टिन की छतवाला लंबा शेड । जरूर कोई सरकारी गोदाम होगा ।

चढ़ाई में कई मोड़ । पथरीले नंगे पहाड़ों की शृंखलाएँ । लेह की पीठ का पठार है खारदूलांग । खारदूलांग जिसे खरदूला भी कहते हैं । हिम-मंडित ग्लेशियर है । लेह के पिछवाड़े से निकलते ही पहाड़ों के हलके रंग गहरे होने लगते हैं । भूरे, ग्रे और स्लेटी पहाड़ों को आकाश की नीलाहटें अजीब पथरीलेपन में दमकाने लगती है । इतनी ऊँचाई पर किरणें ऐसे चमकती हैं कि अपनी गर्मी से बर्फीली नदी-नालों के पानी को सोख लेती हैं और पानी का गीलापन धूप की तेजी से भाप बनकर उड़ता चला जाता है ।

चढ़ाई पर धीमी चाल से गाड़ी आगे सरकने लगी है । गाड़ी लगभग सड़क के किनारे है । मैं नीचे की ओर देखने में झिझकती हूँ कि अगर इतने ऊँचे से गिरे तो होगा पूर्णविराम । अगले मोड़ पर आसमान पर जड़ा एक सीमेंट का दरवाजा नजर आया । जी हाँ, अब हम इसी में से गुजर कर ऊपर जा रहे हैं । वह रहा हिमशिखर खारदूलांग । बर्फ का पहाड़ । पहाड़ पर ताजा बर्फ नहीं - कड़ी बर्फ का पहाड़ है । बर्फ.. बर्फ.. बर्फ इसे कहते हैं ग्लेशियर । धूप चमका रही है इसकी धवलता को । ऊपर हेलीकॉप्टर मँड़रा रहे हैं और वायरलेस के खंभों पर लहरा रही है बौद्ध पताकाएँ । गाड़ी से उतर मैं बर्फ पर चल रही हूँ । बर्फ पर चलते हुए फिसलन है ।

मैंने जूते उतार लिए हैं । मोजे पहने-पहने ही सँभलकर चल रही हूँ । टूरिस्ट साहिब कहते हैं, आइए आपको एक चट्टान दिखाते हैं जो बर्फ से ढँकी है । उसके नीचे पथरीला खेत है । यहाँ एक न एक कैलेंडर देवी-देवताओं का टँगा रहता है । वैसे यहाँ के तूफानी अंधड़ में तो कार भी उड़ सकती है, कैलेंडर कैसे टिके रहते हैं - यह अचरज ही है । यहाँ से गुजरने

धर्मवीर भारती द्‌वारा लिखित 'ठेले पर हिमालय' यात्रावर्णन पढ़िए ।

किसी यात्रा पर जाने के लिए आरक्षण संबंधी जानकारी प्राप्त करने हेतु राज्य के पर्यटन विभाग को पत्र लिखिए ।

वाले सभी सैनिक जवान उसके आगे सिर झुकाते हैं ।

मोजे पहने-पहने वहाँ पहुँची तो चट्टान बर्फ-सी सर्द । चट्टान की खोल में दो कैलेंडर माँ दुर्गा और लक्ष्मी के, बर्फ में ही खोंसे हुए हैं । खारदूलांग की तेज हवाओं में न जाने कैसे टिके हैं । हमने विस्मय से कहा, ''यह तो हवा से उड़ जाते होंगे ।'' ''हाँ, ऐसा होता है तो हमारे जवान नया कैलेंडर लगा देते हैं,'' इरिस्ट साहिब बोले ।

मैं पहले बर्फ पर दौड़ती हूँ फिर फिसलने के डर से वहीं कहीं बैठ जाती हूँ । टूरिस्ट साहिब कहते हैं, ''मैम, आप चाहें तो कार में बैठें ।''

''नहीं, मैं यहाँ पहुँच सकी हूँ, यह मेरे लिए मूल्यवान है ।''

लहराती-चमकती धूप में लहरा रही है पताकाएँ-पताकाएँ ।

टूरिस्ट साहिब से पूछा - ''यह पताकाएँ कैसी हैं ?''

इधर आते-जाते लोग मन में कुछ धार लेते हैं और खंभों पर पताकाएँ फहराते हैं । यह बात तो मुझे भी आपको बतानी चाहिए थी । मैं मन में कुछ भी न धरूँ तो भी इस ऊँचाई पर पताका तो फहराना चाहती हूँ। मुझे इस बात को सोच-सोच कर परेशानी हो रही है, इतनी कि लगता है इसके लिए दोबारा आना होगा ।

हम तीनों ने खाने के पैकेट खोले । ड्रीमलैंड वाले पैकेट में वही और उतना ही है जितना टूरिस्ट साहिब और ड्राइवर साहिब के पैकेटों में हैं । तीन पराठे और तीन-तीन आमलेट । देखकर हम तीनों हँसे ।

इसे ही कहते हैं बराबरी और इसे ही कहते हैं लद्दाख ।

पताकाएँ फिर नजर आईं । मैंने अपनी शॉल उतारी । मन में तय किया कि मैं इसे यहाँ लहराकर ही जाऊँगी । ऐसा न हुआ तो मुझे एक बार फिर वहाँ आना होगा । मैंने शॉल आगे किया - ''लीजिए, ड्राइवर साहिब इसे किसी भी तरह खंभे पर फहरा दें ।''

''मैम गर्म शॉल भारी है, टिकेगा नहीं । हवा से नीचे गिर जाएगा ।''

''कोई बात नहीं, गिरेगा भी तो इसी बर्फीले ग्लेशियर पर । उज्ज्वल बर्फ पर ।'' सुनकर दोनों हँसे - ''आप ऐसा करेंगी ही तो शॉल उठाने के लिए हमें फिर यहाँ आना पड़ेगा ?''

मैं पताका को लेकर गंभीर थी । मैंने सुनहरी गोट वाली हल्की-फुल्की ओढ़नी उन्हें पकड़ा दी और शॉल ओढ़े इंतजार करने लगी कि कब वह पताका बनकर ऊपर पहुँचे । ड्राइवर साहिब ने ऊँची छलाँग भरी और देखते-देखते मेरी झूठ-मूठ की पताका तारों में उलझकर लहराने लगी ।

मैंने गहरे भाव से खारदूलांग को सलाम किया । मुमकिन हुआ तो फिर आऊँगी । नहीं तो अब यहाँ इस बर्फीले ग्लेशियर पर पहुँच जाना मेरा सौभाग्य।

जीप उतराई से नीचे उतरती गई । एक मोड़ से ठीक बाएँ हाथ पर छोटे-से जलस्रोत को देख वहाँ रुकी । उसके किनारे जमी चट्टान पर जा बैठी । पहले

श्रवणीय

किसी दर्शनीय स्थल का वर्णन सुनिए तथा सुनते समय मुद्दों का आकलन कीजिए ।

तो उस ठंडे सर्द बर्फीले पानी की ओक भरी और जी भर कर मुँह पर छींटें दिए। पानी पिया और फिर उसमें पाँव डालने को हुई, पर अपने को रोक लिया। इतने ठंडे जल में पाँव नहीं। कुछ देर और काश कुछ देर और बैठ सकती !

एक और खयाल कौंधा। पन्ने पर यह लिखकर ग्लेशियर पर लटका दिया होता कि 'हिमराज आपने अपनी सबसे निकट धरती पर रहने वाली संतानों के लिए भला जल प्रदान करने में इतनी मितव्ययिता क्यों बरती। आप तो जल के स्रोत हैं।'...

रात एकाएक नींद खुली। लगा, कमरें में किसी ने टॉर्च फेंकी हो। खिड़की से अंदर आती चाँदनी का प्रकाश था। इतना स्वच्छ कि ऊपर ओढ़े हुए कंबल के अलग-अलग रंग दिखने लगे। आकाश खिड़की को घेरे है और काँच पर झुका है चाँद का मुखड़ा।

भला मैं आज ही यहाँ से क्यों चली जा रही हूँ। मेरा दिल्ली पहुँचना जरूरी न होता तो दिन के बाद पैगकोग झील देखती।

करवट लेने को थी कि उठकर खड़ी हो गई। सोने को तो प्लेन में भी सोया जा सकता है। घड़ी देखी साढ़े तीन। शॉल ओढ़ा। टॉर्च ली और कमरे के कपाट भिड़ा दिए और सीढ़ियों से नीचे उतर गई। खुले में टहलते हुए सोचने लगी। अपने में गहरा पारदर्शी सन्नाटा जैसे वह ऊपर के सितारों की लौ में अपने अँधेरे में जगमगा रहा हो। नीचे दिल्ली में अपने जीने की दुनिया से अलग वह चाँद, वह तारें, यह धरती और सामने 'बिझी सर्किट हाउस' की ओर आती सड़क जैसे धरती को आकाश से मिलाने वाली पगडंडी हो। उस पर भी क्यों न चल लिया जाए लेह कि इस प्रभात बेला में।

फाटक खोलने के लिए हाथ बढ़ाया। घड़ी देखी। कुछ देर रुकना ठीक होगा। मैं अब सड़क पर चल रही हूँ। लेह को घेरे हुए पथरीली, शृंखला को देख रही हूँ। खामोशी में अपने पैरों की आहट सुन रही हूँ। अंतर में ऐसा भास रहा है कि इस अमृत बेला में जो घट रहा है वह पहली बार है और शायद अंतिम भी।

याद हो आई बौद्‌ध प्रवचनों की दो पंक्तियाँ - 'जो भी देखो, ऐसे देखो जैसे जीवन में पहली बार देख रहे हो। फिर ऐसे देखो जैसे जीवन में अंतिम बार देख रहे हो।'

वही।

बुद्‌ध के कमंडल में उदय होती उषा को मानो पहली बार देख रही हूँ - देख रही हूँ अंतिम बार भी जैसे हिमालय के पीछे से फैलाए लालिमा को हमारे पूर्वजों ने देखा था। स्थल पर सिर्फ चट्टाने, ऊँचे पहाड़ और आकाश की ओर जाती चढ़ाई के अलावा और कुछ नहीं।

('लेह-लद्दाख' से)

—०—

आसपास

'प्रकृति मनुष्य की मित्र है' अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

संभाषणीय

'सुसंगति का फल' इसपर अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

शब्द संसार

हिममंडित (वि.सं.) = बर्फ से शोभित
मितव्यायिता (वि.सं.) = किफायती, थोड़ा या कम खर्च करने की
लक्ष्य (पुं.सं.) = निशाना
बेशकीमती (स्त्री.सं.) = अमूल्य
आँच (स्त्री.सं.) = गरमी, ताप

पाठ से आगे

भारत के मानचित्र में बर्फाच्छादित प्रदेशों को अंकित कीजिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए :-

(क) संजाल

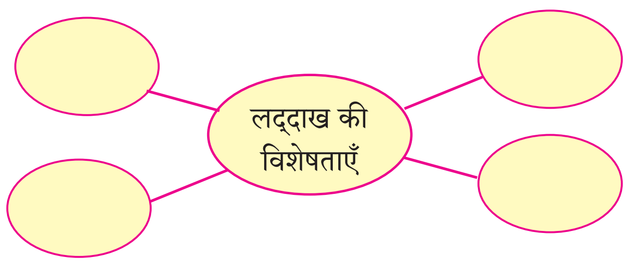

(ख) आकृति पूर्ण कीजिए :

१. चट्टानों के रंग

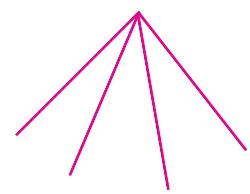

(ग) शब्दों के वचन पहचान कर परिवर्तन कीजिए एवं अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए :-
१. शृंखलाएँ, ऋचा, पंक्ति, बर्फीला, दुकान, ज्योति, पट्टी
२. पहाड़, अनेक, गौ, कौआ, मनुष्य, तारा, आँख ।

(घ)

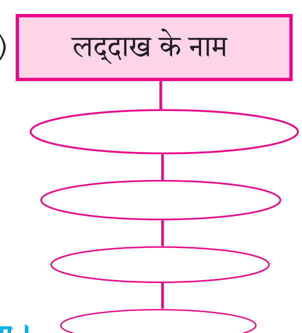

(२) पाठ में प्रयुक्त 'हिम' शब्दवाले दो शब्द ढूँढ़कर लिखिए और अन्य दो शब्द भी लिखिए ।

स्वमत

किसी यात्रा स्थल पर जाते समय आई कठिनाइयाँ और उनके समाधान पर अपने विचार लिखिए ।

रचना बोध

....
....
....

भाषा बिंदु

विरामचिह्न

(१) उचित विरामचिह्न लगाइए :–

१. पहले मैंने बगीचा देखा फिर मैं एक टीले पर चढ़ गया और वहाँ से उतरकर सीधा इधर चला आया
२. वाह उसने तो तुम्हें अच्छा धोखा दिया
३. भक्तिकाल में दो धाराएँ थीं सगुण धारा, निर्गुण धारा
४. पराधीन को स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता
५. होनहार बिरवान के होत चीकने पात
६. दृश्य ३ रानी सिंहासन पर बैठी थी सेवक का प्रवेश
७. ऐसा एक भी मनुष्य नहीं जो संसार में कुछ न कुछ लाभकारी कार्य न कर सकता हो
८. सूर्य अस्त हुआ आकाश लाल हुआ वराह पोखरों से उठकर घूमने लगे हिरन हरियाली पर सोने लगे और जंगल में धीरे धीरे अँधेरा फैलने लगा
९. द्रव्य उपादान कारण शक्कर से मिठाई बनाई जाती है
१०. अनुवादित अनूदित ग्रंथ कुटीर

विलोम उपसर्ग

(२) शब्द बनाइए, विग्रह कीजिए तथा विलोम शब्द लिखिए :–

क्र.	विग्रह	शब्द	विलोम
१.	अति + अधिक		× न्यूनतम
२.	+	अनुज	×
३.	अप + कीर्ति		×
४.	+	सद्‌गुण	×
५.	+	प्रत्यक्ष	×
६.	उत् + नति		×
७.	+	उत्थान	×
८.	+	अपमान	×
९.	दुः + भाग्य	....	×
१०.	+	दुर्लभ	×
११.	सम् + मान	....	×
१२.	+	अभ्युत्थान	×

६. नदी और दरिया

– *दुष्यंतकुमार*

संभाषणीय

विद्‌यालय के काव्यपाठ कार्यक्रम में सहभागी होकर कविता प्रस्तुत कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● काव्यपाठ का आयोजन करवाएँ । ● विषय निर्धारित करें । ● विद्‌यार्थियों को निश्चित विषय पर काव्यपाठ प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करें ।

इस नदी की धार से ठंडी हवा आती तो है,
नाव जर्जर ही सही, लहरों से टकराती तो है ।

एक चिंगारी कहीं से ढूँढ़ लाओ दोस्तो,
इस दिये में तेल से भीगी हुई बाती तो है ।

एक खंडहर के हृदय-सी एक जंगली फूल-सी,
आदमी की पीर गूँगी ही सही गाती तो है ।

एक चादर साँझ ने सारे नगर पर डाल दी,
यह अँधेरे की सड़क उस भोर तक जाती तो है ।

निर्वसन मैदान में लेटी हुई है जो नदी,
पत्थरों से ओट में जा-जा के बतियाती तो है ।

दुख नहीं कोई कि अब उपलब्धियों के नाम पर,
और कुछ हो या न हो आकाश-सी छाती तो है ।

× × ×

आज सड़कों पर लिखे हैं सैकड़ों नारे न देख,
पर अँधेरे देख तू आकाश के तारे न देख ।

एक दरिया है यहाँ पर दूर तक फैला हुआ,
आज अपने बाजुओं को देख पतवारें न देख ।

अब यकीनन ठोस है धरती हकीकत की तरह,
यह हकीकत देख लेकिन खौफ के मारे न देख ।

वे सहारे भी नहीं अब जंग लड़नी है तुझे,
कट चुके जो हाथ उन हाथों में तलवारें न देख ।

ये धुंधलका है नजर का तू महज मायूस है,
रोजनों को देख दीवारों में दीवारें न देख ।

राख कितनी राख है, चारों तरफ बिखरी हुई,
राख में चिनगारियाँ ही देख अंगारे न देख ।

—०—

परिचय

जन्म : १ सितंबर १९३३ राजपुर, विजनौर (उ.प्र.)

मृत्यु : ३० दिसंबर १९७५ भोपाल (म.प्र.)

परिचय : दुष्यंतकुमार जी हिंदी साहित्य के लोकप्रिय, कालजयी हस्ताक्षर हैं । गजल विधा को हिंदी में लोकप्रिय बनाने में आपका बहुत बड़ा योगदान है। आपने कविता, गीत, गजल, काव्य नाटक, उपन्यास आदि सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। आपकी गजलों ने आपको लोकप्रियता की बुलंदी पर पहुँचा दिया है।

प्रमुख कृतियाँ : एक कंठ विषपायी (काव्य नाटक) और मसीहा मर गया (नाटक) छोटे-छोटे सवाल, आँगन में एक वृक्ष, दुहरी जिंदगी आदि (उपन्यास), साये में धूप (गजल संग्रह) सूर्य का स्वागत, आवाजों के घेरे, जलते हुए वन का वसंत (कविता संग्रह) ।

पद्‌य संबंधी

गजल : गजल एक ही बहर और वजन के अनुसार लिखे गए शेरों का समूह है । इसके पहले शेर को मतला और अंतिम शेर को मकता कहते हैं ।

इन गजलों में दुष्यंत कुमार जी ने साहस, अधिकारों के प्रति सजग रहने, स्वाभिमान बनाए रखने, खुद पर भरोसा करने के लिए प्रेरित किया है ।

शब्द संसार

खंडहर (पुं.सं.) = भग्नावशेष
पीर (स्त्री.सं.) = पीड़ा, दुख
भोर (पुं.सं.) = प्रभात
पतवार (स्त्री.सं.) = नाव चलाने का साधन

लेखनीय

गजल में आए किसी भाव, विचार का अपने शब्दों में लेखन कीजिए ।

श्रवणीय

किसी सार्वजनिक कार्यक्रम के मंचसंचालन को आनंदपूर्वक रसास्वादन करते हुए सुनिए ।

पठनीय

पुरस्कार प्राप्त किसी साहित्यकार की जानकारी का वाचन कीजिए ।

कल्पना पल्लवन

'दूसरों के मतों/विचारों का आदर करने में हमारा सम्मान है' इसे उदाहरणों द्वारा स्पष्ट कीजिए ।

आसपास

अपने परिवेश में आयोजित किसी कवि सम्मेलन में सहभागी होकर आनंद लीजिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) आकृति :

पीड़ा की विशेषताएँ
[ ] [ ]

(ख) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :

(अ)	**(ब)**
निर्वसन	सड़क
दिया	जर्जर
नाव	बाती
अँधेरा	मैदान

पाठ से आगे

प्रसिद्‌ध गजलकार सुरेश भट जी की गजलें सुनिए तथा स्वयं के संदर्भ के लिए पुनःस्मरण करके टिप्पणी बनाइए ।

(२) 'हर अंधेरी रात के बाद नई सुबह होती है', इस विषय पर अपने विचार लिखिए ।

रचना बोध

....
....
....

७. मातृभूमि का मान

– हरिकृष्ण 'प्रेमी'

पठनीय

पाठ्‌यपुस्तक से 'भारत के संविधान' की उद्‌देशिका पढ़कर उसपर चर्चा कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

- उद्‌देशिका में आए मूल्य बताने के लिए कहें । ● इन मूल्यों पर चर्चा करवाए ।
- उद्‌देशिका में आए मौलिक अधिकारों के बारे में बताएँ ।

पात्र परिचय

राव हेमू	:	बूँदी का शासक
अभय सिंह	:	मेवाड़ का सेनापति
महाराणा लाखा	:	मेवाड़ का शासक
वीर सिंह	:	मेवाड़ की सेना का एक सिपाही जो बूँदी का रहने वाला था ।

चारणी तथा वीर सिंह के साथी

पहला दृश्य

(राव हेमू मेवाड़ के सेनापति अभयसिंह से बात कर रहे हैं ।)

अभयसिंह : महाराव, सिसोदिया वंश हाड़ाओं को आदर और स्नेह की दृष्टि से देखता है ।

राव हेमू : तो फिर आप बूँदी को मेवाड़ की अधीनता स्वीकार करने की आज्ञा लेकर क्यों आए हैं ?

अभयसिंह : महाराज, हम राजपूतों की छिन्न-भिन्न असंगठित शक्ति विदेशियों का किस प्रकार सामना कर सकती है? इस बात की अत्यंत आवश्यकता है कि हम अपनी शक्ति एक केंद्र के अधीन रखें ।

राव हेमू : और वह केंद्र है–चित्तौड़ ।

अभयसिंह : महाराज, आज राजपूतों को एक सूत्र में गूँथे जाने की बड़ी आवश्यकता है और जो व्यक्ति यह माला तैयार करने की ताकत रखता है, वह है महाराणा लाखा ।

राव हेमू : ताकत की बात छोड़ो, अभयसिंह ! प्रत्येक राजपूत को अपनी ताकत पर नाज है ।

अभयसिंह : किंतु अनुशासन का अभाव हमारे देश के टुकड़े किए हुए है।

राव हेमू : प्रेम का अनुशासन मानने को हाड़ा वंश सदा तैयार है, शक्ति का नहीं । बूँदी स्वतंत्र राज्य है और स्वतंत्र रहकर वह महाराणाओं का आदर करता रह सकता है । अधीन होकर किसी की सेवा करना वह पसंद नहीं करता ।

अभयसिंह : तो मैं जाऊँ ।

परिचय

जन्म : १९०८ गुना, ग्वालियर (म.प्र.)
मृत्यु : १९७४
परिचय : हरिकृष्ण 'प्रेमी' जी पत्रकार के साथ-साथ कवि और नाटककार भी थे। आपके ऐतिहासिक नाटकों में प्रेम और राष्ट्रीय भावनाओं की रसा-त्मक प्रस्तुति हुई है।
प्रमुख कृतियाँ : अग्निगान, प्रतिभा, आँखों में, आदि (कविता संग्रह), रक्षाबंधन, प्रतिशोध, आहुति आदि (ऐतिहासिक नाटक), बंधन, छाया, ममता आदि (सामाजिक नाटक) मंदिर, बादलों के पार (एकांकी संग्रह), सोहनी-महीवाल, दुल्ला भट्टी, देवदासी, मीराँबाई (संगीत रूपक)

गद्‌य संबंधी

एकांकी : एकांकी का आकार छोटा होता है । इसमें एक ही कथा होती है । इसमें आदि से अंत तक संवादों की रोचकता बनी रहती है ।

प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से 'प्रेमी' जी ने स्वाभिमान, एकता को बनाए रखने एवं मातृभूमि के लिए बलिदान देने के लिए प्रेरित किया है ।

राव हेमू : आपकी इच्छा । **(दोनों का दो तरफ प्रस्थान)**

पट परिवर्तन **दूसरा दृश्य**

(स्थान–चित्तौड़ का राजमहल । महाराणा लाखा बहुत चिंतित और व्यथित अवस्था में टहल रहे हैं ।)

लाखा : इस बार मुट्‌ठी भर हाड़ाओं ने हम लोगों को जिस प्रकार पराजित और विफल किया, उसमें मेवाड़ के आत्मगौरव को कितनी ठेंस पहुँची है, यह मेरा हृदय जानता है ।

(अभयसिंह का प्रवेश और महाराणा को अभिवादन करना)

अभयसिंह : महाराणा जी, दरबार के सभासद आपके दर्शन पाने को उत्सुक हैं।

महाराणा : सेनापति अभयसिंह जी, आज मैं दरबार में नही जाऊँगा । आप जानते हैं कि जब से हमें नीमरा के मैदान में बूँदी के राव हेमू से पराजित होकर भागना पड़ा, मेरी आत्मा मुझे धिक्कार रही है ।

अभयसिंह : हाड़ाओं ने रात के समय अचानक हमारे शिविर पर आक्रमण कर दिया । आकस्मिक धावे से घबराकर हमारे सैनिक भाग खड़े हुए। इसमें आपका क्या अपराध है और इसमें मेवाड़ के गौरव में कमी आने का कौन–सा कारण है ?

महाराणा : जो आन को प्राणों से बढ़कर समझते आए हैं, वे पराजय का मुख देखकर भी जीवित रहें, यह कैसी उपहासजनक बात है । सुनो अभयसिंह जी, मैं अपने मस्तक के इस कलंक के टीके को धो डालना चाहता हूँ ।

अभयसिंह : मेवाड़ के सैनिक आपकी आज्ञा पर अपने प्राणों की बलि देने को प्रस्तुत हैं ।

महाराणा : उनके पौरुष की परीक्षा का दिन आ पहुँचा है । महारावल बाप्पा का वंशज मैं, 'लाखा', प्रतिज्ञा करता हूँ कि जब तक बूँदी के दुर्ग में ससैन्य प्रवेश नहीं करूँगा, अन्न–जल ग्रहण नहीं करूँगा ।

अभयसिंह : महाराणा ! छोटे–से बूँदी दुर्ग को विजय करने के लिए इतनी बड़ी प्रतिज्ञा करने की क्या आवश्यकता है ? अंतिम विजय हमारी ही होगी किंतु यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि इसमें कितने दिन लग जाएँगे इसलिए ऐसी भीषण प्रतिज्ञा आप न करें।

महाराणा : आप क्या कहते हैं, सेनापति ? मेरी प्रतिज्ञा कठिनाई से पूरी होगी, यह मैं जानता हूँ और इस बात की हाल के युद्‌ध में पुष्टि भी हो चुकी है कि हाड़ा जाति वीरता में हम लोगों से किसी प्रकार हीन नहीं है, फिर भी महाराणा लाखा की प्रतिज्ञा वास्तव में प्रतिज्ञा है– वह पूर्ण होनी ही चाहिए । **(नेपथ्य में गान)**

ये सागर से रत्न निकाले । युग–युग से हैं गए सँभाले ।
इनसे दुनिया में उजियाला । तोड़ मोतियों की मत माला ।

लेखनीय

किसी ऐतिहासिक घटना पर संवाद लिखिए तथा कक्षा में प्रस्तुत कीजिए ।

ये छाती में छेद कराकर, एक हुए हैं हृदय मिलाकर ।
इनमें व्यर्थ भेद क्यों डाला ? तोड़ मोतियों की मत माला ।
(गाते-गाते चारणी का प्रवेश)

महाराणा : तुम कुछ गा रही थी चारणी ? तुम संपूर्ण राजस्थान को एकता की शृंखला में बाँधकर देश की स्वाधीनता के लिए कुछ करने का आदेश दे रही थी किंतु मैं तो उस शृंखला को तोड़ने जा रहा हूँ । दो जातियों में दुश्मनी पैदा करने जा रहा हूँ ।

चारणी : यह आप क्या कहते हैं महाराणा ? मैं आपसे निवेदन करने आई हूँ कि यद्यपि आप हाड़ा शक्ति और साधनों में मेवाड़ से उन्नत हैं फिर भी वे वीर हैं । मेवाड़ को उसकी विपत्ति के दिनों में सहायता देते रहे हैं । यदि उनसे कोई धृष्टता बन पड़ी हो तो महाराणा उसे भूल जाएँ और राजपूत शक्तियों में स्नेह का संबंध बना रहने दें ।

महाराणा : चारणी, तुम बहुत देर से आई !

अभयसिंह : चारणी, महाराणा ने प्रतिज्ञा की है कि जब तक वे बूँदी के गढ़ को जीत न लें, अन्न-जल ग्रहण न करेंगे ।

चारणी : दुर्भाग्य ! **(कुछ सोचकर)** महाराणा, मैं ऐसा नहीं होने दूँगी। देश का कोई शुभचिंतक इस विद्‌वेष की आग को फैलने देना पसंद नहीं कर सकता ।

अभयसिंह : किंतु महाराणा की प्रतिज्ञा तो पूरी होनी ही चाहिए ।

चारणी : उसका एक ही उपाय है । वह यह कि यहीं पर बूँदी का एक नकली दुर्ग बनाया जाए । महाराणा उसका विध्वंस करके अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर लें । महाराणा, क्या आपको मेरा प्रस्ताव स्वीकार है ?

महाराणा : अच्छा, अभी तो मैं नकली दुर्ग बनाकर उसका विध्वंस करके अपने व्रत का पालन करूँगा किंतु हाड़ाओं को उनकी उद्‌दंडता का दंड दिए बिना मेरे मन को संतोष न होगा । सेनापति, नकली दुर्ग बनवाने की व्यवस्था करें ।
(सबका प्रस्थान)

पट परिवर्तन **तीसरा दृश्य**

(चित्तौड़ के निकट एक जंगली प्रदेश, नकली दुर्ग का मुख्य दरवाजा महाराणा लाखा और सेनापति अभयसिंह का प्रवेश।)

अभयसिंह : आपने दुर्ग का निरीक्षण कर लिया ? ठीक बन गया है न ?

महाराणा : निसंदेह यह ठीक बूँदी दुर्ग की हू-ब-हू नकल है । अपमान की वेदना में जो विवेकहीन प्रतिज्ञा मैंने कर डाली थी, उससे तो छुटकारा मिल ही जाएगा । उसके बाद फिर ठंडे दिमाग से

श्रवणीय

महाराणा प्रताप के जीवन की सुनी हुई कोई प्रेरणादायी कहानी कक्षा में सुनाइए।

विषय से...

राष्ट्र का गौरव बनाए रखने के लिए पूर्व प्रधानमंत्रियों द्‌वारा किए सराहनीय कार्यों की सूची बनाइए ।
नौवीं कक्षा पाठ-२ इतिहास और राजनीति शास्त्र

सोचना होगा कि बूँदी को मेवाड़ की अधीनता स्वीकार करने के लिए किस तरह बाध्य किया जाए ।

अभयसिंह : शीघ्र ही बूँदी के पठारों पर सिसोदिया का सिंहनाद होगा। अच्छा, अब हम लोग आज के रण की तैयारी करें ।

महाराणा : किंतु यह रण होगा किससे ? इस दुर्ग में कोई तो हमारा प्रतिरोध करने वाला चाहिए ।

अभयसिंह : मैंने सोचा है दुर्ग के भीतर अपने ही कुछ सैनिक रख दिए जाएँगे जो बंदूकों से हम लोगों पर छूँछे वार करेंगे। कुछ घंटे ऐसा ही खेल होगा और फिर यह मिट्‌टी का दुर्ग मिट्‌टी में मिला दिया जाएगा । अच्छा, अब हम चलें ।

(दोनों का प्रस्थान । वीरसिंह का कुछ साथियों के साथ प्रवेश)

वीरसिंह : मेरे बहादुर साथियों ! तुम देख रहे हो कि हमारे सामने यह कौन-सी इमारत बनाई गई है ?

पहला साथी: हाँ सरदार, यह हमारी जन्मभूमि बूँदी का दुर्ग है ।

वीरसिंह : और तुम जानते हो कि महाराणा इस गढ़ को जीतकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करना चाहते हैं किंतु क्या हम लोग अपनी मातृभूमि का अपमान होने देंगे ? क्या इसे मिट्‌टी में मिलने देंगे ?

दूसरा साथी: किंतु यह तो नकली बूँदी है ।

वीरसिंह : धिक्कार है तुम्हें ! नकली बूँदी भी प्राणों से अधिक प्रिय है । आज महाराणा आश्चर्य के साथ देखेंगे कि यह खेल केवल खेल ही नहीं रहेगा ।

तीसरा साथी: लेकिन सरदार, हम लोग महाराणा के नौकर हैं । क्या महाराणा के विरुद्‌ध तलवार उठाना हमारे लिए उचित है ? हमारा शरीर महाराणा के नमक से बना है । हमें उनकी इच्छा में व्याघात नहीं पहुँचाना चाहिए ।

वीरसिंह : और जिस जन्मभूमि की धूल में हम खेलकर बड़े हुए हैं, उसका अपमान भी कैसे सहन किया जा सकता है ? जब कभी मेवाड़ की स्वतंत्रता पर आक्रमण हुआ है, हमारी तलवार ने उनके नमक का बदला दिया है, लेकिन जब मेवाड़ और बूँदी के मान का प्रश्न आएगा, हम मेवाड़ की दी हुई तलवारें महाराणा के चरणों में चुपचाप रखकर विदा लेंगे और बूँदी की ओर से प्राणों की बलि देंगे । आज ऐसा ही अवसर आ पड़ा है ।

पहला साथी: निश्चय ही कोई नकली बूँदी का भी अपमान नहीं कर सकता । जन्मभूमि हमें प्राणों से भी अधिक प्रिय है ।

मौलिक सृजन

'मातृभूमि प्रेम' इस एकांकी की मूल संवेदना है। अपने अनुभव के आधार पर ऐसे किसी प्रसंग से जुड़ी रोचक घटना को लिखिए।

वीरसिंह : मेरे वीरो ! प्रतिज्ञा करो कि प्राणों के रहते हम इस नकली दुर्ग पर मेवाड़ की राज्य-पताका को स्थापित न होने देंगे ।

सब लोग : हम प्रतिज्ञा करते हैं कि प्राणों के रहते इस दुर्ग पर मेवाड़ का ध्वज फहराने नहीं देंगे ।

वीरसिंह : मुझे आप लोगों पर अभिमान है और बूँदी आप जैसे पुत्रों को पाकर फूली नहीं समाती । जिस बूँदी में ऐसे मान के धनी पैदा होते हैं उस पर संसार आशीर्वाद के साथ फूल बरसा रहा है । चलो, हम दुर्ग रक्षा की तैयारी करें ।

पट परिवर्तन

चौथा दृश्य

(स्थानः बूँदी के नकली दुर्ग का बंद द्‌वार । महाराणा लाखा और अभयसिंह का प्रवेश)

महाराणा : सूर्य डूबने को आया । यह कैसी लज्जा की बात है कि हमारी सेना बूँदी के नकली दुर्ग पर अपना झंडा स्थापित करने में सफलता प्राप्त नहीं कर सकी । वीरसिंह और उसके मुट्‌ठी भर साथी अभी तक वीरतापूर्वक लड़ रहे हैं ।

अभयसिंह : हाँ महाराणा, हम तो समझते थे कि घड़ी-दो-घड़ी में खेल खत्म हो जाएगा,लेकिन हमें छूँछे वारों का मुकाबला करने के बजाय अचूक निशानों का सामना करना पड़ा ।

महाराणा : यह भी अच्छा ही हुआ कि हमारे इस खेल में भी कुछ वास्तविकता आ गई । यदि हमें बिना कुछ पराक्रम दिखाए ही दुर्ग पर अपना झंडा फहराने का अवसर मिल जाता तो मुझे जरा भी संतोष न होता और सच पूछो तो मुझे वीरसिंह की वीरता देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई । मैं चाहता था कि ऐसे वीर के प्राणों की किसी प्रकार रक्षा हो पाती ।

अभयसिंह : कुछ क्षणों के लिए सफेद झंडा फहराकर मैंने युद्‌ध रोक दिया था। उसके पश्चात मैं स्वयं दुर्ग में गया और वीरसिंह की उसके साहस के लिए प्रशंसा की । साथ ही उससे अनुरोध किया कि तुम इस व्यर्थ प्रयास में अपने प्राण न खोओ किंतु उसने उत्तर दिया कि महाराणा ने हाड़ाओं को चुनौती दी है । हम उस चुनौती का उत्तर देने को मजबूर हैं । महाराणा यदि हमारे प्राण लेना चाहते हैं तो खुशी से ले लें लेकिन हम इतने कायर और निष्प्राण नहीं है कि अपनी आँखों से बूँदी का अपमान होते देखें। मेवाड़ में जब तक एक भी हाड़ा है, नकली बूँदी पर भी बूँदी की ही पताका फहराएगी ।

महाराणा : निश्चय ही इन वीरों की जन्मभूमि के प्रति आदरभाव सराहनीय

संभाषणीय

महाराणा प्रताप के घोड़े चेतक संबंधी कहानी पढ़िए और उसके साहस की विशेषता बताइए ।

है । यह मैं जानता हूँ कि इन लोगों के प्राणों की रक्षा करने का कोई उपाय नहीं है । इतने बहुमूल्य प्राण लेकर भी मुझे प्रतिज्ञा पूरी करनी पड़ेगी । धन्य हैं ऐसे वीर ! धन्य हैं वह माँ जिसने ऐसे वीर पुत्र को जन्म दिया । धन्य है वह भूमि ! जहाँ पर ऐसे सिंह पैदा होते हैं ।

(जोर का धमाका और प्रकाश होता है)

महाराणा : अरे देखो अभयसिंह, गोले के वार से वीरसिंह के प्राण पखेरू उड़ गए । बूँदी के मतवाले सिपाही सदा के लिए सो गए । जाओ दुर्ग पर मेवाड़ की पताका फहराओ और वीरसिंह के शव को आदर के साथ यहाँ ले आओ । **(अभयसिंह का प्रस्थान)**

महाराणा : आज इस विजय में मेरी सबसे बड़ी पराजय हुई है । व्यर्थ के दंभ ने आज कितने ही निर्दोष प्राणों की बलि ले ली ।

(चारणी का प्रवेश)

चारणी : महाराणा, अब तो आपकी आत्मा को शांति मिल गई होगी । अब तो आपने सिर के कलंक का टीका धो लिया । यह देखिए बूँदी के दुर्ग पर मेवाड़ के सेनापति विजय पताका फहरा रहे हैं।

महाराणा : चारणी, क्यों पश्चाताप से विकल प्राणों को तुम और दुखी करती हो ? वीरसिंह की वीरता ने मेरे ह्रदय के द्‌वार खोल दिए हैं, मेरी आँखों पर से पर्दा हटा दिया है।

चारणी : तो क्या महाराणा, अब भी मेवाड़ और बूँदी के ह्रदय मिलाने का कोई रास्ता नहीं निकल सकता ?

(वीरसिंह के शव के साथ अभयसिंह का प्रवेश)

महाराणा : **(शव के पास बैठते हुए)** चारणी, इस शहीद के चरणों के पास बैठकर मैं अपने अपराध के लिए क्षमा माँगता हूँ किंतु क्या बूँदी के राव तथा हाड़ा वंश का प्रत्येक राजपूत आज की इस दुर्घटना को भूल सकेगा ?

(राव हेमू का प्रवेश)

राव हेमू : क्यों नही महाराणा ! हम युग-युग से एक हैं और एक रहेंगे । आपको यह जानने की आवश्यकता थी कि राजपूतों में न कोई राजा है, न कोई महाराजा ! सब देश, जाति और वंश की मानरक्षा के लिए प्राण देने वाले सैनिक हैं । हम सबके ह्रदय में एक ज्वाला जल रही है। हम कैसे एक दूसरे से पृथक हो सकते हैं? वीरसिंह के बलिदान ने हमें जन्मभूमि का मान करना सिखाया है ।

महाराणा : निश्चय ही महाराज ! हम संपूर्ण राजपूत जाति की ओर से इस अमर आत्मा के आगे अपना मस्तक झुकाएँ । **(सब बैठकर वीरसिंह के शव के आगे झुकते हैं ।)**

(पटाक्षेप)

—०—

आसपास

सेना में भर्ती होने के लिए आवश्यक जानकारी अंतरजाल से प्राप्त कीजिए ।

शब्द संसार

नाज (पुं.फा.) = स्वाभिमान
चारण (पुं.सं.) = भाट, कीर्तिगायन करने वाला
उन्नत (वि.सं.) = ऊँचा
विद्‌वेष (पुं.सं.) = द्‌वेष (ईर्ष्या)
प्रबंध (पुं.सं.) = व्यवस्था, इंतजाम
विकल (वि.सं.) = व्याकुल, अपूर्ण
पृथक (वि.सं.) = अलग, भिन्न

मुहावरे

मिट्‌टी में मिला देना = नष्ट करना
प्राणों की बलि देना = प्राण अर्पण करना

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) सही विकल्प ढूँढ़कर वाक्य पूर्ण कीजिए :

१. प्रत्येक राजपूत को .....
(अ) अपनी बुद्‌धि पर नाज है ।
(ब) अपने शौर्य पर नाज है ।
(स) अपनी ताकत पर नाज है ।

२. : इस दुर्ग में कोई तो हमारा .....
(अ) रोकने वाला चाहिए ।
(ब) प्रतिरोध करने वाला चाहिए ।
(स) प्रतिरोध न करने वाला चाहिए ।

३. वीरसिंह और उसके मुट्‌ठी भर साथी अभी तक.....
(अ) साहस के साथ लड़ रहे हैं ।
(ब) वीरतापूर्वक लड़ रहे हैं ।
(स) निडरता के साथ लड़ रहे हैं ।

(ख) उत्तर लिखिए :

१. महाराणा की प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए चारणी द्‌वारा सुझाया गया उपाय ।
२. नकली बूँदी को लेकर वीरसिंह के साथियों के विचार ।
३. अपनी मातृभूमि को लेकर वीरसिंह के विचार ।

(२) इस पाठ का केंद्रीय भाव लिखिए ।

स्वमत 'आज इस विजय में मेरी सबसे बड़ी पराजय हुई है' महाराणा के इस कथन पर अपने विचार लिखिए ।

पाठ से आगे 'साहस को अधीन करने की अभिलाषा करना पागलपन है', कथन की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।

रचना बोध
....
....
....

भाषा बिंदु

(१) निम्न वाक्यों में से सर्वनाम एवं क्रिया छाँटकर भेदों सहित लिखिए तथा अन्य पाँच-पाँच सर्वनाम एवं क्रियाएँ खोजकर नए वाक्य बनाइए :-

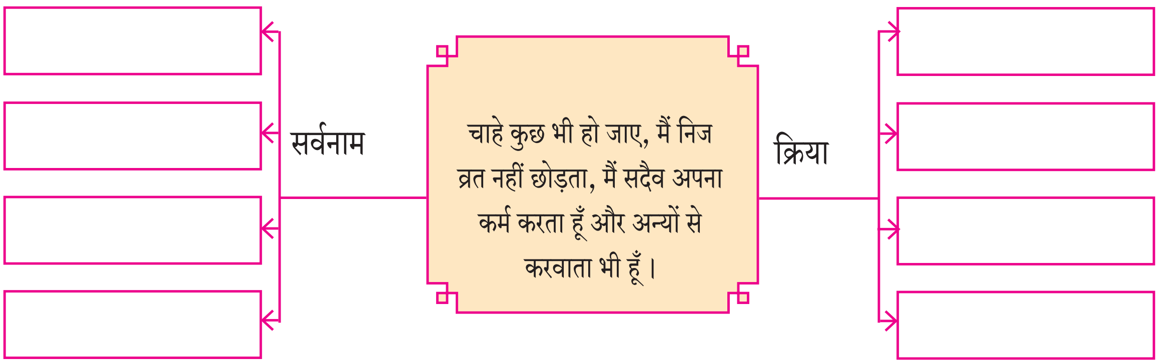

(२) निम्न में से संज्ञा तथा विशेषण पहचानकर भेदों सहित लिखिए तथा अन्य पाँच-पाँच संज्ञा, विशेषण खोजकर नए वाक्य बनाइए :-

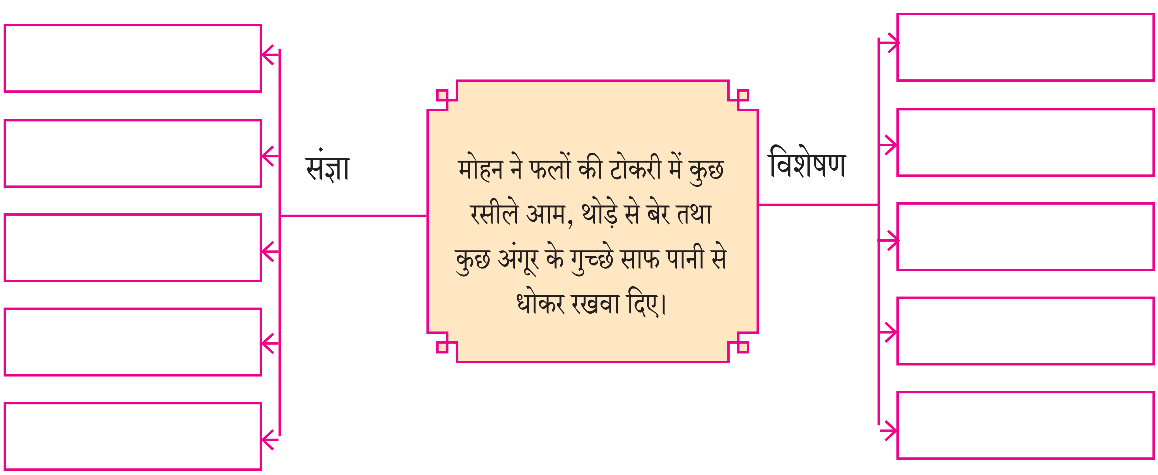

(३) पाठ्‌यपुस्तक की पहली इकाई के १ से ६ पाठों से भेदों सहित संज्ञाओं को ढूँढ़कर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(४) पाठ्‌यपुस्तक की पहली इकाई के ७ से १३ के पाठों से भेदों सहित सर्वनामों को ढूँढ़कर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(५) पाठ्‌यपुस्तक की दूसरी इकाई के १ से ६ के पाठों से भेदों सहित विशेषणों को ढूँढ़कर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(६) पाठ्‌यपुस्तक की दूसरी इकाई के ७ से १३ के पाठों से भेदों सहित क्रियाओं को ढूँढ़कर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

८. हिरणी

– डॉ. रत्नकुमार सांभरिया

पूरक पठन

पौने छह फीट लंबा कद । पतला-सा सुता हुआ शरीर । गेहुँआ रंग । लंबी गर्दन । गले में काले डोरों की रुद्राक्ष गुँथी माला । दोनों कान छिदे हुए । कान के इन छिद्रों से हवा आए-जाए । सिर पर बँधे तौलिया के फेंटे तले कंधों पर गिरती सुनहरी बालों की रूखी-सूखी लटें । दबे चेहरे पर कुन्ही (मुर्रा) भैंस के घुंडी खाए सींगों-सी छल्ला मूँछें । मैल चढ़े पैरों तले हवाई चप्पलें । वह चौखाना की बिन धुली लुंगी बाँधे था । ऊपर बिना प्रेस की मुड़ी-मुड़ी-सी कमीज थी । उसके दाएँ हाथ पर लछीनाथ सपेरा गुदा हुआ था । वह देखते ही घुमक्कड़ जनजाति की इकाई लगता था ।

सूरज दो-तीन बाँस ऊपर चढ़ आया था । मई की चटक धूप सुबह से ही अपने तेवर दिखाने लगी थी । फटे तहमद के झरोखों से छिटक कर अंदर आती धूप डेरे में बिखरी हुई थी । लछीनाथ ने अंदर आ गई धूप की ओर टकटकी बाँध कर देखा ।

भोर !

पूर्वांचल से उठती भानूदय की लालिमा के आगमन पर अवनि पलक-पावड़ा बिछाए थी । प्रभात, का सुनहरा समीर, जल की बूँद-बूँद, धरा के कण-कण, पेड़-पौधों के पात-पात और बेल-वल्लरी के रोएँ-रोएँ में बसी थी ।

लछीनाथ को सुबह मुँह अँधेरे उठने की बान-सी पड़ी हुई थी । उसके बाप सरूपनाथ की भी यही आदत थी । प्रातः उठना उसका संस्कार था । शिशु सूर्य के मखमली उजास में उसकी नजरें एक अप्रत्याशित देखने को ठहर गई थीं ।

उसके पास एक शिकारी श्वान था । सूत की रस्सी-सा सुता शरीर। दंतैल । लंबा मुँह । लंबी पूँछ । पीठ-पेट एक । दोनों बगल पसलियाँ खड़ी थीं, बाँस की खप्पचियों-सी । उनको गिन लो एक-एक । नाम था शेरू ।

उसका वही श्वान शेरू मृग शावक को घेरे हुए बैठा था । बच्चा भागने की चेष्टा करता, कुत्ता दाढ़ें निपोरकर उसमें भय भर देता था । खूँखार कुत्ते के सामने मासूम बच्चे का समूचा शरीर पवन में हिलते पत्ते की तरह काँप रहा था । हारे को हरिनाम । बेचारे शिशु ने जैसे मौत को अपनी नियति मान लिया था ।

लछीनाथ ने अपने स्वामिभक्त कुत्ते को दाद दी । मेरा शेरू शातिर शिकारी तो है ही, वफादारी भी खूब है इसमें ।

उसने फाहे-जैसे मुलायम हिरण के उस बच्चे की ओर काक-दृष्टि से ऐसे देखा मानो वह उसके मनपसंद भोजन का निमित्त हो । उसके अंतस से भूख की

परिचय

जन्म : ६ जनवरी १९५६ जयपुर (राजस्थान)

परिचय : रत्नकुमार सांभरिया जी ने लघुकथा, कहानी, एकांकी, अनुवाद आदि विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। आपकी रचनाएँ प्रायः पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं।

प्रमुख कृतियाँ : काल तथा अन्य कहानियाँ, हुकुम की दुग्गी आदि (कहानी संग्रह) समाज की नाक (एकांकी संग्रह), प्रतिनिधि लघुकथा शतक (लघुकथा संग्रह),
डॉ. आंबेडकर : एक प्रेरक जीवनी का अरबी और सिंधी भाषा में अनुवाद ।

गद्‌य संबंधी

चित्रात्मक कहानी : जीवन की किसी घटना के रोचक, प्रवाही वर्णन को कहानी कहते हैं । इसमें पात्र अथवा चरित्र का अत्यधिक महत्त्व होता है । कहानी कहते या पढ़ते समय जब उस घटना/प्रसंग का चित्र उभर आता है तो वहा चित्रात्मक कहानी होती है ।

प्रस्तुत कहानी में सांभरिया जी ने कठोर हृदय की सहृदयता और अपने प्रति किए गए उपकार के प्रतिदान का चित्रण बड़े ही मार्मिक ढंग से किया है ।

भख का भपारा-सा निकला । यदि मन में लालच हो तो उतावली लाजिमी है । शिकार छूट न जाए, प्रमुदित हुआ वह भागा-भागा गया । झोंपड़ी की बाती में खुँसा छुरा उसने निकाल लिया था । वह छुरा लिए शावक के पास आ बैठा था ।

शिकारी और शिकार । घोड़ा और घास । ना घोड़ा घास से यारी निभा सके, ना शिकारी शिकार को नूर सके । लछीनाथ ने शावक की गर्दन पकड़ कर खंजर सँभाला ।

निरीह शावक । खुँटियाते सींग । आकाश देखते कान । मींह-मींह सुरमई नयन । भूरे रंग पर सफेद छिटके । चाम के भीतर दसेक किलो की देह । रोम-रोम बेचारगी । तन-बदन बेसहारगी । छुरा का अर्थ पक्षी का चीकला (बच्चा) भी जानता है, वह तो मृग-शावक था । उसने आँखें मूँद ली थीं और अपनी इहलीला समाप्त होने के डर से लंबी-लंबी साँसें लेने लगा था ।

लड़कपन का झोंक था । हिरणी का यह शावक इधर-उधर मुँह मारता, कूदता-फाँदता, हुमकता, हँसता-खेलता, कुलाँचे भरता डेरों की ओर आ निकला था । कुत्ते ने उसे अपनी गिरफ्त में ले लिया था । रात का तीसरा प्रहर बीत रहा था । उसी समय से खेत में हिरणी ममता के वशीभूत खड़ी थी । इधर उसका शावक कुत्ते के सामने अवश था ।

ऊपर की उस खेत से किसी जानवर के खों-खों कर धाँसने की ध्वनि सुनाई दी । ध्वनि में गिड़गिड़ाहट जैसा दयनीय पुट था । वह क्रूरता की पराकाष्ठा का ध्यान अपनी ओर खींच ले गई थी ।

शावक की गर्दन से छुरा हटा कर लछीनाथ उठ खड़ा हुआ था । उसने आवाज की ओर कनखी से निहारा । खेत परती पड़ा था । खेत में जहाँ-जहाँ कंटकमय झाड़ियाँ थीं । सीना सवानी लंबी-लंबी सूखी घास खड़ी हुई थी । उस घास के बीच हिरणी जैसा कोई जीव उसे खड़ा दिखाई दिया । जब तब साँस, तब तक आस । हिरणी ने खों-खों-खों करते जैसे फिर आप-आप की, मानो कहती हो 'यह बच्चा मेरी वंशबेल है, इसे मत मारो । मैं ढलती उम्र हूँ । आप मेरा गला रेत लें ।'

लछीनाथ ने गौर से देखा । हिरणी ही थी । वह इस विश्वास से बँधता चला गया था कि हो न हो यह उसी हिरणी का बच्चा है । वह वहाँ खड़ी इसके प्राणों की भीख मुझसे माँग रही है । एकाएक उसे तीन बरस पहले का वह दिन स्मरण हो आया था । ऊपर के उन्हीं खेतों से आया एक भेड़िया झोंपड़ी के सामने सोई उसकी तीन महीने की बच्ची को उठाकर जंगल में भाग गया था । भेड़िया की खोज लेते उसकी खोह में बच्ची तो मिल गई थी लेकिन उसे बचाया नहीं जा सका था ।

बच्ची की माँ की हालत महीनों पागल जैसी रही थी । माँ हिरणी...।

पठनीय

ग्रामीण क्षेत्र से संबंधित कोई लोककथा पढ़िए ।

संभाषणीय

पालतू जानवरों की देखभाल संबंधी चर्चा कीजिए ।

मौलिक सृजन

'जंगल में रहने वाले पशु प्रकृति की गोद में ही स्वच्छंदता से पलते हैं', इसपर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

उसका हृदय विदीर्ण हो आया था । उसने छुरा वहीं जमीन में गाड़ दिया था । स्नेहिल हाथों उसने बच्चे को गोदी में उठा लिया था । वह कदम-दर-कदम उधर बढ़ता चला गया, जहाँ उसकी माँ खड़ी हुई थी । उधर शावक को लेकर लछीनाथ खेत की ओर बढ़ा था और इधर श्वान छुरे को मुँह में भर कर झोंपड़ी की ओर चला आया था ।

बालक का जी माँ की आत्मा में बसता है । जिस माँ का बच्चा मौत के मुँह में हो, उसे अमन कहाँ । हिरणी की साँसें जैसे उसके फेफड़ों और पसलियों में ही सिमटी हुई थीं । ममता की अदृश्य डोर से बँधी हिरणी वहाँ आड़ी देकर खड़ी हुई थी । बच्चे को लेकर लछीनाथ खेत में पहुँच गया था। तृण-सागर में खड़ी हिरणी कनौतियाँ उठाए एक साँस उधर ही देखे जाती थी । एकदम उदास, हताश, शोक-संतप्त-सी, क्लांत । मानो वह शरीरी नहीं, स्थापित संगमरमरी हो ।

अकस्मात लछीनाथ की निगाहें दूसरी ओर घूमीं । वह सहमकर रह गया था । पाँच-छह शृंगालों का एक झुंड हिरणी से थोड़ी दूरी बनाए खड़ा था । सियार यह उम्मीद बाँधे थे कि मृतप्राय है हिरणी, उसकी साँसें टूट जाएँगी और उनका भोग-भक्षण होगा । लछीनाथ ने धरती पर पाँव की धमक के साथ उनको हटकार दिया था । गीदड़ को कायर का पर्याय कहा जाता है । धमक, आदमी की रूह नजर पड़ते ही वे सब-के-सब सिर पर पैर रख कर भाग खड़े हुए थे ।

✻ लछीनाथ ने बच्चा हिरणी के पास छोड़ दिया था । बुझते दीपक में तेल डालते ही उसकी लौ फिर प्रकाशमान होने लगती है, सुध-बुध खोई हिरणी में जैसे फिर जीवन-ज्योति प्रज्वलित होने लगी थी । वह चैतन्य और चौकस हो गई थी । जंगल विहरनी की आँखों से टप-टप दो-तीन बूँदें गिरीं। सर्द आँसुओं में अब वेदना नहीं, खुशी का भाव झलक रहा था । हिरणी ने लछीनाथ की ओर ऐसे देखा मानो वह कोई इनसान नहीं फरिश्ता हो । हिरणी ने बच्चे को दूसरी ओर अपनी बगल में ले लिया था और वहीं खड़ी रह गई थी । लछीनाथ को विस्मय हुआ । अपना टाबर पा जाने के बाद तो हिरणी को कुलाँचे मारते यहाँ से भाग खड़ा होना चाहिए था । यह तो खड़ी मेरी ओर ही लखे जाती है । ✻

जंगली जानवरों की भी अपनी बोली-भाषा, हक-हकूक हुआ करते हैं । कई बार यही बातें उनके बीच झगड़े-टंटों का हेतु बन जाया करती हैं। महीना पहले हरी घास की चूँट की तनिक-सी रार को लेकर दो हिरणी आपस में भिड़ गई थीं, सींग-सींग । क्रोध हर जीव में दुबका होता है और मौका पाते ही वह हिंसक हो जाता है । दोनों हिरणियों ने एक-दूसरी को मात देने के लिए अपनी जान फूँक दी थी । उस दिन की लड़ाई-भिड़ाई में

लेखनीय

'वनों पर सबसे पहला अधिकार पशुओं का' इस विषय पर चर्चा करते हुए अपना मत लिखिए ।

श्रवणीय

प्रकृति से संबंधित एक कविता सुनिए तथा उसका आशय सुनाइए ।

✻ सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए ।

(१) कृति पूर्ण कीजिए ।

लछीनाथ ने बच्चा हिरणी के पास छोड़ा तो क्या हुआ

(२) 'क्रोध हर जीव में दुबका होता है', इसपर अपना मत लिखिए ।

इस हिरणी के एक सींग ने जगह छोड़ दी थी । सींग जड़ उखड़े पौधे की भाँति कई दिन हिलता रहा था । बीस-पच्चीस दिन बाद शनैः-शनैः फिर जड़ पकड़ने लगा था ।

हिरणी ने आव देखा न ताव, उस सींग पर अपने खुर का तीखा प्रहार कर उसे तोड़ पटका था । सहृदय को नाचीज की ओर से इनाम । अपने शावक को साथ लिए वह उल्लसित मन उछलती, कूदती, छलाँगें भरती घास-झाड़ियों में अंतर्धान हो गई थी ।

लछीनाथ की नजर धरती पर टूटे पड़े हिरणी के सींग पर गई । उठाते हुए उसे अपनी दिवंगत माँ याद हो आई थी । उनके घर किसी जमाने का हिरणी का सींग हुआ करता था । जब भी उनके डेरे उठते माँ अपने थैले में रखे उस सींग को हाथ में लिए चलती थी ।

वह सरसों के तेल के दिए की लौ को लोहे के पतरे पर रोक कर इकट्ठा कर लेती थी । मधुमक्खी के छत्ते की भाँति पतरे से लटकी कालिख खुरच वह उसे काँसे के कटोरे में डाल हिरण के उस सींग से घिस-घिस काजल तैयार किया करती थी । वह काजल पूरे डेरों में बँटता था, मासा-मासा ।

घुमक्कड़ों का क्या ठौर ? क्या ठिकाना ? डेरा उठाते-जमाते लछीनाथ से वह सींग कहीं गुम हो गया था । हिरणी के इस सींग को घर लाते जैसे काजल तैयार करती उसकी माँ साक्षात हो गई थीं । उसके मन में विचार घुमड़ा अब वह इसी सींग का घिसा काजल काम में लेगा । उसकी आँखें कम सूझती हैं । वस्तुएँ पकड़ने में दिक्कत होती है । उसने सींग को झोंपड़ी की बाती में खोंस दिया था ।

कुत्ते ने वह छुरा चौक में लाकर पटक दिया था । लछीनाथ ने चौक में पड़ा छुरा उठाया और दूर नाले में फेंक आया ।

—०—

आसपास

अंतरजाल से 'ताड़ोबा अभयारण्य' की जानकारी निम्न मुद्दों के आधार पर प्राप्त कीजिए ।

स्थान | क्षेत्र | विशेषताएँ

पाठ से आगे

'जंगल के पशु मानवी बस्ती की ओर आ रहे हैं' इसपर आपके उपायों की सूची बनाइए ।

शब्द संसार

घुमक्कड़ (वि.सं.) = घुमंतू
भानूदय (पुं.सं.) = सूर्योदय
शातिर (पुं.सं.) = चालाक
अंतस (पुं.सं.) = हृदय
लाजिम (वि.अ.) = उचित
सुरमई (वि.फा.) = हल्का नीला रंग
कनौती (स्त्री.सं.) = पशुओं के कान
शनैःशनैः (क्रि.वि.) = धीरे-धीरे

मुहावरे

पलक पाँवड़ा बिछाना = आदरयुक्त स्वागत करना
प्रमुदित होना = आनंदित होना
वशीभूत होना = आधीन होना

रचना बोध

....
....
....

भाषा बिंदु

(१) अलंकार पढ़िए और समझिए :-

अलंकार और उसके भेद

(१) शब्दालंकार

जब काव्य में किसी विशेष शब्द के प्रयोग से चमत्कार या उसके सौंदर्य में वृद्धि होती है, वहाँ शब्दालंकार होता है ।

अनुप्रास

उदाहरण में 'च' वर्ण की आवृत्ति बार-बार हुई है अतः यह अनुप्रास अलंकार है ।

यमक

उदाहरण में एक कनक का अर्थ सोना और दूसरे कनक का अर्थ धतूरा है । एक शब्द के दो अर्थ हैं । अतः यह यमक अलंकार हैं ।

श्लेष

इस उदाहरण में बारे का अर्थ जलाने पर और बचपन में तथा बड़े का अर्थ बूझने पर और बढ़े होने पर है यहाँ एक शब्द के अनेक अर्थ हैं । अतः यह श्लेष अलंकार है ।

उदाहरण

अनुप्रास

चारु चंद्र की चंचल किरणें
खेल रहीं हैं जल-थल में ।

यमक

कनक-कनक ते सौगुनी,
मादकता अधिकाय ।
वा खाए बौराय नर,
वा पाए बौराय ।

श्लेष

जो रहीम गति दीप की
कुल कपूत गति सोई ।
बारे उजियारो करे
बढ़े अँधेरों होई ।

(२) अर्थालंकार

जब काव्य में शब्दों के अर्थ से काव्य सौंदर्य में वृद्धि होती है, तब वहाँ अर्थालंकार होता है ।

उपमा

उदाहरण में शब्द समानता प्रकट की गई है । यहाँ एक वस्तु को दूसरे के समान बताया गया है । अतः यह उपमा अलंकार है ।

रूपक

उदाहरण में एक वस्तु पर अर्थात राम पर धन (रतन) का (राम रूपी धन) का आरोप किया गया है । अतः यह रूपक अलंकार है ।

उत्प्रेक्षा

उदाहरण में एक वस्तु में दूसरी वस्तु का अर्थात श्याम के शरीर पर पीत वस्त्र और नील पर्वत पर हुए प्रभात की संभावना की गई है । अतः यह उत्प्रेक्षा अलंकार है ।

उदाहरण

उपमा

उषा सुनहले तीर
बरसती जय लक्ष्मी-
सी उदित हुई ।

रूपक

पायोजी मैंने राम-रतन
धन पायो ।

उत्प्रेक्षा

सोहत ओढ़े पीत पट
श्याम सलोने गात ।
मनहुँ नीलमणि शैल पर
आतप पर्‍यो परभात ।।

(२) अलंकार के भेदों सहित अन्य एक-एक उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए ।

९. मधुर-मधुर मेरे दीपक जल !

- महादेवी वर्मा

कल्पना पल्लवन

'दीपावली त्योहार को मिलजुलकर मनाने से सामाजिक एकता दृढ़ होती है', इस विधान को चर्चा द्वारा स्पष्ट कीजिए :-

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● भारत में मनाए जाने वाले त्योहारों के नाम पूछें । ● दीपावली त्योहार कब और कितने दिन मनाया जाता है, बताने के लिए कहें । ● दीपावली त्योहार पारिवारिक और सामाजिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं-चर्चा कराएँ ।

मधुर-मधुर मेरे दीपक जल !
युग-युग प्रतिदिन-प्रतिक्षण- प्रतिपल,
प्रियतम का पथ आलोकित कर !

सौरभ फैला विपुल धूप बन,
मृदुल मोम-सा घुल रे मृदु तन;
दे प्रकाश का सिंधु अपरिमित,
तेरे जीवन का अणु गल-गल !

सारे शीतल कोमल नूतन,
माँग रहे तुझसे ज्वाला कण
विश्व शलभ सिर धुन कहता 'मैं
हाय न जल पाया तुझ में मिल' !
सिहर-सिहर मेरे दीपक जल !

जलते नभ में देख असंख्यक,
स्नेहहीन नित कितने दीपक;
जलमय सागर का उर जलता,
विद्युत् ले घिरता है बादल !
विहँस-विहँस मेरे दीपक जल !

द्रुम के अंग हरित कोमलतम,
ज्वाला को करते हृदयंगम;
वसुधा के जड़ अंतर में भी,
बंदी है तापों की हलचल !
बिखर-बिखर मेरे दीपक जल !

परिचय

जन्म : २६ मार्च १९०७, फर्रुखाबाद (उ.प्र.)
मृत्यु : ११ सितंबर १९८७ इलाहाबाद (उ.प्र.)
परिचय : महादेवी जी हिंदी साहित्य में छायावादी युग के चार स्तंभों में एक प्रतिभावान, सशक्त कवयित्री हैं । आधुनिक गीत काव्य में आप का स्थान सर्वोपरि है । आपकी कविताओं में पीड़ा और भावों की तीव्रता, भाषा में रहस्यवाद गहराई से दिखाई पड़ते हैं । आपके द्वारा लिखित संस्मरण भारतीय जीवन के चित्र हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, सप्तपर्णा, प्रथम आयाम आदि (कविता संग्रह) अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ (रेखाचित्र) पथ के साथी, मेरा परिवार (संस्मरण), ठाकुर जी भोले हैं, आज खरीदेंगे हम ज्वाला (बाल कविता संकलन) ।

पद्य संबंधी

कविता : रस की अनुभूति कराने वाली सुंदर अर्थ प्रकट करने वाली लोकोत्तर आनंद देने वाली रचना कविता होती है। इसमें दृश्य की अनुभूतियों को साकार किया जाता है।

प्रस्तुत कविता में महादेवी जी ने दीपक के विविध प्रकार से जलने की प्रक्रिया के माध्यम से मानव को लोगों के पथ प्रकाशित करने की प्रेरणा दी है ।

✻ मेरी निश्वासों से द्रुततर,
सुभग न तू बुझने का भय कर;
मैं अँचल की ओट किए हूँ,
अपनी मृदु पलकों से चंचल !
सहज-सहज मेरे दीपक जल !
सीमा ही लघुता का बंधन,
है अनादि तू मत घड़ियाँ गिन;
मैं दृग के अक्षय कोषों से
तुझ में भरती हूँ आँसू जल !
सजल-सजल मेरे दीपक जल ! ✻

तम असीम तेरा प्रकाश चिर,
खेलेंगे नव खेल निरंतर;
तम के अणु-अणु में मिट जाना तू
उसकी उज्ज्वल स्मित में घुल-खिल !
मदिर-मदिर मेरे दीपक जल !
प्रियतम का पथ आलोकित कर !

—०—

('नीरजा' से)

✻ (१) इस पद्यांश पर ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों ।
(अ) सीमा = ...
(आ) आँसू जल = ...
(२) पद्यांश में आए उपसर्ग-प्रत्यययुक्त शब्दों को ढूँढ़कर लिखिए ।
(३) पद्यांश की प्रथम पाँच पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए ।

श्रवणीय

'दीपक' से संबंधित कोई गीत यू-ट्यूब पर सुनिए ।

आसपास

'भारतीय त्योहारों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण निहित हैं' इस संदर्भ मे अंतरजाल से जानकारी प्राप्त कीजिए ।

संभाषणीय

'तमसो मा ज्योतिर्गमय' इस पंक्ति का कल्पना विस्तार कीजिए ।

शब्द संसार

आलोकित (वि.) = चमकता हुआ
अपरिमित (वि.सं.) = असीम
अणु (पुं.सं.) = सूक्ष्म
शलभ (पुं.सं.) = पतंग, फतिंगा
द्रुम (पुं.सं.) = वृक्ष
अनादि (वि.) = जिसका आदि न हो

लेखनीय

'प्रदूषण मुक्त त्योहार' इस विषय पर निबंध लिखिए ।

पठनीय

पाठ्यपुस्तक की किसी कविता का मुखर एवं मौनवाचन कीजिए ।

पाठ के आँगन में

✻ सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

✻ एक शब्द में उत्तर दीजिए :
१. लघुता का बंधन - .... २. माँग रहे तुमसे - ....

पाठ से आगे

वृद्धाश्रम में रहने वाले बुजुर्गों के साथ कोई एक त्योहार मनाइए और अपना अनुभव मित्रों को बताइए ।

रचना बोध

....
....
....

१०. पृथ्वी–आकाश

– *श्रीराम परिहार*

लेखनीय

'मेरी वसुंधरा' विषय पर अपनी कक्षा में चर्चा करते हुए निबंध लिखिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● विद्‌यार्थियों से वसुंधरा शब्द के पर्यायवाची शब्द पूछें । ● धरती को नुकसान पहुँचाने वाले मानव के कार्य संबंधी बातें कहलवाएँ । ● पृथ्वी की विशेषताएँ बताने के लिए कहें । ● पृथ्वी के प्रति कृतज्ञ रहने के लिए प्रेरित करें ।

प्रिय पृथ्वी,

समझ में नहीं आता है कि मैं अपनी कुशल लिखूँ या तुम्हारी कुशल–क्षेम जानूँ । मैं आकाश की संज्ञा धारण कर तुम्हारी ओर–छोर व्यक्त हूँ । मेरे फैलाव से मैं खुद विस्मित हूँ । अनंत उल्का पिंडों को मैं रोज टूटते, गिरते, मिटते देखता हूँ । कभी चाँदनी से नहाई तुम्हारे–मेरे बीच की राह दुविधा बन खिल उठती है । कभी टिमटिमाते तारों की नन्ही हथेलियों से आकांक्षाएँ बुलाती हैं ।

धरती ! तुम बहुत सुंदर हो । सुंदर इसलिए हो कि तुम पर जीवन है । तुम धरित्री हो । तुम जीवन को धारण करती हो । अखिल ब्रह्मांड में शायद जीवन की चहक सिर्फ तुम्हें और तुम्हें मिली है । यह बहुत महत्त्वपूर्ण बात है, इसी से तुम्हारी अलग और सुंदर पहचान है ।

वसुंधरा ! तुम्हारे कितने रंग हैं । एक–एक रंग सृष्टि का अनोखा उल्लास और दर्द समेटे हुए है । वैसे सृष्टि के मूल में तो आनंद ही है लेकिन कहीं–कहीं संधियों में, ओट में दर्द दुबका बैठा है, कहा जाता है, सूर्य रंगों का झरना है । वह प्रकाश पाझर है । यदि यही उसे एकटक देखे तो दृष्टि में काला धब्बा पड़ जाता है । सूर्य से आँख मिलाने की शक्ति की अपरिमितता किसके पास है ? संपाती के बेटों के पास भी नहीं है । सूर्य जब तक तुम्हारे अंगों का सान्निध्य नहीं पा जाता है उसके रंग खिलते ही नहीं हैं ।

हे रसवंति, करुणा आनंद की भगिनी है । करुणा विहीन आनंद सर्जन नहीं कर सकता । हे भूमि तुम्हारे ऊपर जो हिमालय है वह आनंद की अद्‌भुत और अनुपम उछाल है । उसके हिमाच्छादित शिखर आनंद के उर्ध्वगामी सर्ग है । इन्हीं में से देवसरि गंगा करुणा की धारा बनकर फूटती हैं । वे सूखे कोनों और रूखे अधरों तक जाती हैं । प्यासे कंठों की तृप्ति बनती है । सूखे खेतों का संस्कार बनती है । यह करुणा ही बड़ी चीज है जो आनंद को सर्जन का अर्थ देती है ।

हे मानवमाता ! जब कभी सतपुड़ा चोटियों के बीच बसे गावों में चाँदनी

परिचय

जन्म : १६ जनवरी १९५२ फेफरिया, खंडवा (म.प्र.)

परिचय : परिहार जी ललित लेखन में विशिष्ट स्थान रखते हैं। आपने निबंध, गीत, यात्रा वृत्तांत, लोक साहित्य आदि विविध विधाओं में लेखन किया है ।

प्रमुख कृतियाँ : आँच अलाव की, ठिठके पल पँखुरी पर, धूप का अवसाद, अँधेरे में उम्मीद आदि (निबंध संग्रह) चौकस रहना है (नवगीत संग्रह),कहे जन सिंगा (लोकसाहित्य) संस्कृति सलिला नर्मदा (यात्रा वृत्तांत)।

गद्‌य संबंधी

पत्र : अपने मित्रों, संबंधियों एवं विविध व्यवसायियों को जब कागज पर लिखकर संदेश/सूचना आदि लेते/देते हैं तो लेखन के उस प्रारूप को पत्र कहते हैं ।

प्रस्तुत पाठ के माध्यम से परिहार जी ने मानव जाति के लिए पृथ्वी एवं आकाश के योगदान को दर्शाया है साथ ही इन्हें मानव जनित विनाश से बचाने के लिए भी आगाह किया है ।

झरती है तब रात-रात भर नृत्य की गूँज पहाड़ों पर बरसती है । मैं सतपुड़ा की उन्हीं चोटियों पर बैठा-बैठा तुम्हारे बेटों का यह संस्कार उत्सव देखा करता हूँ । धरती तुझे हजार-हजार विविधताओं का संसार मिला । धरती, वायु मेरा अंश है । शब्द की उत्पत्ति में मेरी सहभागिता है । जल मेरे माध्यम से बनता, बरसता है । आग और पानी का खेल मेरे भीतर भी है लेकिन ये सब मिलकर, तेरे आँगन की मिट्टी से जो जीव गढ़ते हैं उसकी लीला पर, मेरी सौ-सौ नीलिमा न्योछावर हैं । तेरे जीवों की श्यामलता के अर्थ बहुत गहरे हैं।

हे वसुधा ! तेरा यह विपुल भरा भंडार आक्षितिज फैला है । तू जननी है, करुणा की धारा से तू नम है । सुना है कि पुत्र, कुपुत्र हो जाता है पर माता कभी कुमाता नहीं होती । तब हे प्रिय पृथ्वी, मैं पूछना चाहता हूँ यह भूकंप का सर्वनाशी कृत्य क्यों ? संसार का इस तरह विध्वंस ! क्या एक माता की करुणा निःशेष हो गई ? वे हमेशा के लिए सो गए फिर जन्म लेंगे । जीवन फिर रोशन पंखों से उड़ान भरेगा । पृथ्वी ! क्या मन के घाव कभी भर पाएँगे ? ममता के आँसू क्या कभी पोंछे जा सकेंगे ?

मैं उत्तर चाहता हूँ तुम्हारी पाती की प्रतीक्षा है ।

तुम्हारा
आकाश

हे आकाश !

तुम्हारा पत्र मिला । पत्र क्या है वह तुम्हारे ही चित्त के लालित्य का विस्तार है । तुम्हारे पत्र के शब्द-शब्द में सितारों की रोशनी की नीलिमा दमक रही है और उसी दमक में मैं तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ रही हूँ।

हे अनंत ! नीलिमा के विस्तार में अपनी पावनता को अक्षुण्ण रखने वाले देव, तुम कितने उदार, कितने पारदर्शी हो ! तुम मेरी विभूति को देखकर कितने प्रसन्न हो इसीलिए शब्द की पावनता और उसकी असीमित मृसण अर्थवत्ता भी तुम्हारे पास है । तुम्हारा मन भी उतना ही बड़ा है जितना तुम्हारा ब्रह्मांडीय फैलाव । इसीलिए तुम्हारे मन की सतरंगी पर मेरी मृदुताई और निठुराई को तुमने बराबर जगह दी है । ऐसा मेरे परिवार के सदस्यों के बीच नहीं होता । तुम मेरे वैभव पर निहाल हो। पर यहाँ तो एक का वैभव, दूसरे की ईर्ष्या से फूलता है। एक की सफलता पर दूसरे के निवाले में कंकर आ जाता है । हे अनंत मेरे ही जायों ने मुझे खोदा । मुझे बाँधा । मुझे पाटा । मुझे लाँघा, मेरा दूध पिया । अन्न खाया । वह सब किया, सो किया, पर मेरे पेट के पानी को भी ये अब निकालकर पी रहे हैं । मेरे रोम-रोम में उगे वृक्षों को काट रहे हैं । मेरी शिराओं-धमनियों-सी नदियों में अपना नरक डाल रहे हैं । मेरी हवा

श्रवणीय

मराठी साहित्यिकार 'कुसुमाग्रज' की कविता 'पृथ्वीचे प्रेमगीत' सुनिए ।

आसपास

'अपने क्षेत्र की पर्यावरण संबंधी समस्याओं और उनके समाधान हेतु संभावित उपायों' पर एक वृत्तांत तैयार कीजिए ।

संभाषणीय

'पृथ्वी की व्यथा' अपने शब्दों में बताओ ।

में धुँआ मिलाया जा रहा है । मेरे ऊपर का अंतरिक्ष जो तुम्हारा ही हिस्सा है और मेरा अर्धांग है उसे भी इंसेट्स, मिसाइल्स, उपग्रह, विचित्र-विचित्र गैसों से पाट दिया है । अब बताओ जीवन की रचना के उपकरण ही साबुत नहीं रहने दिए । यहाँ जीवन ही जीवनरस के खिलाफ खड़ा हो गया है । मेरे बेटे इतने गर्रा गए हैं कि असुरों की आँखों का लालपन उनकी आँखों में तैरने लगा है । आज ये पानी के खिलाफ खड़े हैं । वे हवा के खिलाफ खड़े हैं । वे आग के विरोध में हैं । वे मुझे रौंद रहे हैं । वे तुम्हारे ऊपर गोलियाँ दागने की भंगिमा में आ गए हैं । ओजोन में छेद हो गया है । कुल मिलाकर वे जीवन के हिमायती होकर भी जीवन के खिलाफ खड़े हुए हैं ।

हे शाश्वत नभ ! कोई नहीं जानता यह सृष्टि कितने-कितने युगों की सरिताओं को पार करती आ रही है । निरंतरता ही इसकी विशेषता है और नितनूतनता ही इसकी रमणीयता है ।

हे नीलव्योम ! तुम्हारी ऊँचाई की गहराई में सौर मंडल के कितने-कितने हास-रुदन छुपे हैं । तुम्हारे उल्का पिंडो में मानव के भय और औत्सुक्य दोनों जगते हैं । मेरे ही पखेरुओं के लिए तुम मुक्ति का स्थल और अपनी उड़ान शक्ति की सीमा बने हुए हो। पंख थक जाते हैं लेकिन तुम्हारा विस्तार और गहराई कहीं-कभी खत्म नहीं होती । अनगिनत अदृश्य प्रयोगशालाएँ तुम्हारे आधारहीन आधार में चलती रहती हैं । इनसे हवा बनती है । पानी बनता है आग बनती है । तुमने पत्र में लिखा है कि मुझ पर जीवन है यह विशेष बात है । परंतु यह जीवन भी तुम्हारे द्‌वारा निर्मित हवा-पानी के बिना संभव नहीं है । इसलिए यह गौरव भी मैं तुम्हें ही देती हूँ । वह इसलिए भी कि कोई एक तत्त्व न तो भौतिक वस्तु रच सकता है और न ही उसका रक्षण कर सकता है ।

* हे लोहित गगन ! तुम्हारे पास अनेक ज्योतिपुंज है । सूर्य प्रकाश का स्रोत है । प्रकाश का झरना है । सूर्य है इसलिए उजियारा है । इस उजियारे से ही जीवन के बाहर-भीतर के ज्ञान-अज्ञान का भी मान-अनुमान होता है । मुझपर रहने वाले सारे प्राणी इसलिए उसकी अभ्यर्थना करते हैं । तुम्हारे पास एक चंदा है । चंद्रमा की चाँदनी ही मेरे शाल्य में दूध भरती है । कपास में उज्ज्वलता भरती है । ज्वार के दानों में मिठास भरती है । कमलिनी में सुगंध भरती है । *

हे अंबर ! तुम मुझे भी अपनी नीलाभा के परिधान से वेष्टित किए हुए हो । अतः यह नहीं हो सकता कि मेरा सौंदर्य केवल मेरा अजंन या निसर्गगत उत्पाद है । तुम्हारे सौर मंडल में ग्रह-नक्षत्र एक-दूसरे के आकर्षण और अस्तित्व पर टिके हैं । उनकी स्थिति ही सहअस्तित्व पर है । आजके दिन यह कितनी सुंदर बात है । लेकिन मेरे पुत्रों ने अपने-अपने देश बना रखे हैं

पठनीय

'बढ़ते तापमान की वैश्विक समस्याओं' के बारे में लेख आदि पढ़िए ।

(१) उचित मिलान कीजिए :

(अ)	(ब)
चंद्रमा	उजियारा
लोहित	झरना
प्रकाश	मिठास
सूर्य	चाँदनी
	गगन

(२) शब्दों के लिंग पहचानिए :

(क) अभ्यर्थना = …………

(ख) झरना = …………

(ग) कमलिनी = …………

(घ) ज्ञान = …………

और उनमें से कुछ तो एक-दूसरे को मरने-मारने पर उतारू हैं । ज्ञान पाकर व्यक्ति विनम्र हुआ था । वह क्षितिजों के पार भी पहुँचा था, जहाँ आँगन के पार कोई द्‌वार खुलता हो । विज्ञान ने उनकी उपलब्धियों की संख्या में और इजाफा किया है ।

हे नीरद मालाओं के धारक ! वर्षा से तुम्हारी शोभा है । वर्षा तुम्हारी हृदय धारा है । ... तुम्हारी अनुभूति है । इस अनुभूति की अभिव्यक्ति में जब तुम मेघों की कविता लिखते हो और वह कविता नव शब्द-शब्द, बूँद-बूँद मुझपर झरती है तो परम प्रकृति का महाकाव्य रचता है । जो जल तुम श्यामल घनों से बरसाते हो, वही मेरा जीवन रस है । वही फूलों में गंध, वस्तु में रूप, फलों मे रस, मेरी देह पर जाकर स्पर्श और झरनों में शब्द बनकर रुपायित होता है । यही जल मेरे गर्भ मे जाकर मेरे जीवन में संतुलन पैदा करता है । भू गर्भ जल और थल पर स्थित जल की मात्राएँ भी एक तरह का संतुलन कायम करती है । मेरे बेटों ने भू गर्भ जल का इतना दोहन किया, इतना दोहन किया कि मेरे भीतर का संतुलन गड़बड़ा रहा है । वही गड़बड़ाहट कभी भूकंप और कभी ज्वालामुखी बनकर फूटता है ।

हे उदारचेता आकाश ! कौन माँ अपनी संतान का अनिष्ट चाहती है? परंतु जब मेरी ही इज्जत पर बेटे वैभव जुटाएँगे, मेरा पानी बोतलों में बंद करके बेचेंगे, मेरी हवा को साँस लेने लायक भी न रहने देंगे तब इन्हें अनुशासित करने के लिए अप्रिय निर्णय लेने ही पड़ते हैं । हे उदारचेता ! ये मेरे मन के भाव हैं, जिनसे तुम अपने उत्तर शायद पा सको । वैसे परम प्रकृति के रहस्यों से संबंधित प्रश्नों के उत्तर कब कोई दे सका है ?

तुम्हारी,
पृथ्वी !

मौलिक सृजन

अन्य ग्रहपर जीवसृष्टि है, आप वहाँ पर अपना घर बसाना चाहते हैं तो किस प्रकार की सुविधाओं की अपेक्षा रखते हैं, लिखिए ।

शब्द संसार

पाझर (पुं.सं.) = आधार
लालित्य (भा.सं.) = सुंदरता
नीलिमा (स्त्री.सं.) = नीलापन
अक्षुण्ण (वि.) = समूचा
विभूति (स्त्री.सं.) = वृद्‌धि - समृद्‌धि, ऐश्वर्य
मृदुताई (भा.सं.) = कोमलता
निठुराई (भा.सं.) = निर्दयता
पाटना (क्रि.) = मिट्‌टी डालकर भरना
लाँघना (क्रि.) = पार करना
भंगिमा (स्त्री.सं.) = कुटिलता
हिमायत (स्त्री.अ.) = तरफदारी
शाश्वत (वि.) = स्थायी, नाशरहित
लोहित (वि.) = रक्तवर्ण, लाल
इजाफा (पुं.अ.) = बढ़ती, वृद्‌धि
नीरद (पुं.सं.) = बादल
दोहन (पुं.सं.) = खींचना, दुहना

मुहावरा

निहाल होना = भली-भाँति संतुष्ट और प्रसन्न होना ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) संजाल :

चंद्रमा की चाँदनी का परिणाम

(ख) पाठ में इनके लिए प्रयुक्त शब्द हैं :

१. कपास में   २. ज्वार के दाने में   ३. कमलिनी में

(ग) विशेषताएँ लिखकर प्रवाह तक्ता पूर्ण कीजिए :

१. आकाश

२. पृथ्वी

(२) उचित शब्द लिखकर प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

निमिष

क्षण

दिन

वर्ष

(३) पाठ से पाँच शब्द चुनकर उनके तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए।

(४) पाठ में प्रयुक्त पाँच विलोम शब्द जोड़ियाँ लिखिए।

स्वमत

'मैं पृथ्वी बोल रही हूँ', इसपर अपने विचार लिखिए।

पाठ से आगे

'प्राकृतिक संसाधन मानव के लिए वरदान है, इसका उचित उपयोग आवश्यक है' इसपर अपने विचार लिखिए।

रचना बोध

....

....

....

भाषा बिंदु

(१) शब्द पहेली से मुहावरे, कहावतें ढूँढ़िए । उनकी सूची बनाइए और अर्थ बताकर उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :-

आँखों से	ईंट का	कमर	डूबते	हाथ	अँधेरा	होगा
ओखली में	ऊँट के	तोड़ना	तारा	तले	जवाब	चार
छाती	ओझल	को	जीरा	देना	निकालना	पत्थर से
चिराग	तिनके का	सहारा	होना	आरसी	मुँह में	देना
आँखों का	क्या	मात	कंगन को	सिर	देना	कलेजा
लालच	कचूमर	हाथ	आना	फुलाना	मुँह को	चाँद
जड़ से	बुरी	मलना	उखाड़	बला	लगाना	देना

मुहावरे	कहावतें

(२) निम्न वाक्यों के उद्देश और विधेय पहचानकर लिखिए :-

(क) हमारे पिता जी अध्यापनक क्षेत्र में कार्यरत थे ।
(ख) हम उनका अनुसरण करते पिता जी के पास अथाह खजाना था ।
(ग) हमें स्कूली शिक्षा में संगीत साधक को खरज की साधना सबसे पहले सिखाई जाती है ।
(घ) गायन में शब्दों का महत्त्व बहुत थोड़ा होता है ।
(च) गायन में अलाप और तानों का महत्त्व होता है ।

उद्‌देश्य	विधेय

११. दिवस का अवसान

– अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

संभाषणीय

उद्‌धरण, मुहावरे, कहावतें आदि का उपयोग करते हुए किसी नियत विषय पर भाषण दीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● विद्‌यार्थियों को भाषण के लिए विषय दें । ● उस विषय से संबंधित मुहावरे, कहावतें, सुवचन कहलवाएँ । ● उनका सटीक प्रयोग करने के लिए प्रेरित करें ।

दिवस का अवसान समीप था ।
गगन था कुछ लोहित हो चला ।
तरु शिखा पर थी अब राजती ।
कमलिनी कुल वल्लभ की प्रभा ।।१।।

विपिन बीच विहंगम वृंद का ।
कलनिनाद विवर्धित था हुआ ।
ध्वनिमयी विविधा विहगावली ।
उड़ रही नभमंडल मध्य थी ।।२।।

अधिक और हुई नभ लालिमा ।
दश दिशा अनुरंजित हो गई ।
सकल पादप पुंज हरीतिमा ।
अरुणिमा विनिमज्जित-सी हुई ।।३।।

झलकने पुलिनों पर भी लगी ।
गगन के तल की यह लालिमा ।
सरि- सरोवर के जल में पड़ी ।
अरुणता अति ही रमणीय थी ।।४।।

अचल के शिखरों पर जा चढ़ी ।
किरण पादप शीश विहारिणी ।
तरणि बिंब तिरोहित हो चला ।
गगन मंडल मध्य शनैः शनैः ।।५।।

निमिष में वन व्यापित वीथिका ।
विविध धेनु विभूषित हो गई ।
धवल धूसर वत्स समूह भी ।
विलसता जिनके दल साथ था ।।६।।

परिचय

जन्म : १५ अप्रैल १८६५, निजामाबाद आजमगढ़ (उ.प्र.)

मृत्यु : १६ मार्च १९४७

परिचय : खड़ी बोली के प्रथम महाकाव्यकार 'हरिऔध' जी की भूमिका हिंदी साहित्य के विकास में नींव के पत्थर के समान हैं । भाषा पर 'हरिऔध' जी का अद्‌भुत अधिकार प्राप्त था। आपकी भाषा प्रांजल और आकर्षक है। आपकी रचनाओं में संस्कृत के तत्सम शब्द, फारसी, उर्दू आदि के शब्दों के प्रयोग हृदयग्राही है ।

प्रमुख कृतियाँ : रस कलश (ब्रजभाषा में काव्यसंग्रह) वैदेही वनवास, प्रिय प्रवास (महाकाव्य) ठेठ हिंदी का ठाट, अधखिला फूल (उपन्यास), कबीर वचनावली, हिंदी भाषा और साहित्य का विकास (आलोचना) रुक्मणी परिचय, प्रद्‌युम्न विजय व्यायोग (नाटक) हरिऔध सतसई, कल्पलता, चुभते चौपदे, पारिजात (मुक्तक काव्य) ।

पद्‌य संबंधी

महाकाव्य : महाकाव्य में एक पूरी कथा का होना अनिवार्य है । महाकाव्य में मुख्य चरित्र के जीवन को समग्रता से विकसित किया जाता है । प्रत्येक सर्ग में एक ही छंद होता है किंतु सर्ग का अंतिम पद भिन्न छंद का होता है । सर्गों की संख्या आठ या इससे अधिक होती है ।

प्रस्तुत काव्यांश 'प्रिय प्रवास' महाकाव्य के प्रथम सर्ग से लिया गया है । यहाँ 'हरिऔध' जी ने सायंकाल की प्राकृतिक छटा और गोकुल के ग्रामीण जीवन का बहुत ही सुंदर वर्णन किया है ।

जब हुए समवेत शनैः शनैः ।
सकल गोप सधेनु समंडली ।
तब चले ब्रज भूषण को लिए ।
अति अलंकृत गोकुल ग्राम को ।।९।।

गगन मंडल में रज छा गई ।
दश दिशा बहु शब्दमयी हुई ।
विशद गोकुल के प्रति गेह में ।
बह चला वर स्रोत विनोद का ।।१०।।

सकल वासर आकुल से रहे ।
अखिल मानव गोकुल ग्राम के
अब दिनांत विलोकत ही बढ़ी ।
ब्रज विभूषण दर्शन लालसा ।।११।।

सुन पड़ा स्वर ज्यों कल वेणु का ।
सकल ग्राम समुत्सुक हो उठा ।
हृदय यंत्र निनादित हो गया ।
तुरत ही अनियंत्रित भाव-से ।।१२।।

बहु युवा - युवती गृह बालिका ।
विपुल बालक-वृद्‌ध-वयस्क भी ।
विवश-से निकले निज गेह से ।
स्वदृग का दुख मोचन के लिए ।।१३।।

इधर गोकुल से जनता कढ़ी ।
उमगती-पगती अति मोद में ।
उधर आ पहुँची बलबीर की ।
विपुल धेनु विमंडित मंडली ।।१४।।

—०—

('प्रिय प्रवास' से)

श्रवणीय

यू ट्यूब पर मीराबाई के पद सुनिए और प्रमुख मुद्‌दों का आकलन कीजिए।

पठनीय

किसी सामाजिक विषय पर अलग-अलग दृष्टिकोण से लिखे गए लेख पढ़िए।

कल्पना पल्लवन

'नाश के दुख से कभी दबता नहीं निर्माण का सुख' इसे अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

शब्द संसार

अवसान (पुं.सं.) = समाप्ति, सायंकाल
वल्लभ (वि.सं.) = प्रियतम, स्वामी
विवर्द्धित (वि.सं.) = बढ़ाना, विवर्धन
तिरोहित (वि.सं.) = छिपा हुआ, अंतर्हित, गायब, लुप्त
निमिस (पुं.सं) = परमेश्वर
वीथि (स्त्री.सं.) = आकाश में नक्षत्रों के रहने का स्थान, गली
विलसता (क्रि.) = क्रीड़ा करना
विशद (वि.सं.) = विस्तृत रूप
आकुल (वि.सं.) = व्यग्र, विह्‌वल, कातर
विलोकना (क्रि.) = देखना
समुत्सुक (वि.सं.) = विशेष रूप से उत्सुक

आसपास

भाषा का सौंदर्य बढ़ाने वाले वाक्यों का संकलन कीजिए और अपनी बोलचाल एवं लेखन में प्रयोग कीजिए।

लेखनीय

अपने विद्‌यालय में मनाए गए हिंदी दिवस समारोह का वृत्तांत लेखन कीजिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(क) संजाल पूर्ण :

कविता में प्रयुक्त प्राकृतिक घटक

(ख) कथन सही या गलत लिखिए :

१. कथन मंडल में रज छा गई ।

२. विविध धेनु विभूषित हो गई।

(२) कविता के चतुर्थ चरण का भावार्थ लिखिए ।

(३) पाठ्‌यपुस्तक में आए हुए ऐसे दस शब्द ढूँढ़िए जिनसे पाँच स्त्रीलिंग और पाँच पुलिंग शब्द बनते हों ।

पाठ से आगे

प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करने वाली कविताएँ पढ़िए और अलंकारिक भाषा की प्रशंसा कीजिए ।

रचना बोध

....
....
....

१२. झलमला

– *पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी*

पूरक पठन

मैं बरामदे में टहल रहा था। इतने में मैंने देखा कि विमला नौकरानी अपने आँचल के नीचे एक प्रदीप लेकर बड़ी भाभी के कमरे की ओर जा रही है। मैंने पूछा, क्यों री, यह क्या है ? वह बोली, 'झलमला ।' मैंने फिर पूछा, 'इससे क्या होगा ?' उसने उत्तर दिया, 'नहीं जानते हो बाबू, आज तुम्हारी बड़ी भाभी पंडित जी की बहू की सखी होकर आई हैं । इसीलिए मैं उन्हें झलमला दिखाने जा रही हूँ ।' तब तो मैं भी किताब फेंककर घर के भीतर दौड़ गया। दीदी से जाकर मैं कहने लगा, 'दीदी, थोड़ा तेल तो दो ।' दीदी ने कहा, 'जा, अभी मैं काम में लगी हूँ ।' मैं निराश होकर अपने कमरे में लौट आया । फिर मैं सोचने लगा– यह अवसर जाने न देना चाहिए, अच्छी दिल्लगी होगी। मैं इधर-उधर देखने लगा । इतने में मेरी दृष्टि एक मोमबत्ती के टुकड़े पर पड़ी । मैंने उसे उठा लिया और एक दियासलाई का बक्स लेकर भाभी के कमरे की ओर गया। मुझे देखकर भाभी ने पूछा, 'कैसे आए, बाबू?' मैंने बिना उत्तर दिए ही मोमबत्ती के टुकड़े को जलाकर उनके सामने रख दिया। भाभी ने हँसकर पूछा, 'यह क्या है ?' मैने गंभीर स्वर में उत्तर दिया, 'झलमला ।' भाभी ने कुछ न कहकर मेरे हाथ पर पाँच रुपये रख दिए । मैं कहने लगा, 'भाभी, तुम्हारे प्रेम के आलोक का इतना ही मूल्य है ?' भाभी ने हंसकर कहा, 'तो कितना चाहिए ?' मैंने कहा, 'कम-से-कम एक गिनी।' भाभी कहने लगी, 'अच्छा, इसपर लिख दो; मैं अभी देती हूँ ।' मैंने तुरंत ही चाकू से मोमबत्ती के टुकड़े पर लिख दिया– मूल्य एक गिनी ।' भाभी ने गिनी निकालकर मुझे दे दी और मैं अपने कमरे में चला आया । कुछ दिनों बाद, गिनी के खर्च हो जाने पर मैं यह घटना बिलकुल भूल गया ।

आठ वर्ष व्यतीत हो गए । मैं बी.ए., एल.एल.बी. होकर इलाहाबाद से घर लौटा । घर की वैसी दशा न थी जैसे आठ वर्ष पहले थी । न भाभी थी और न विमला ही । भाभी हम लोगों को सदा के लिए छोड़कर स्वर्ग चली गई थीं और विमला कटंगी में खेती करती थी । संध्या का समय था । मैं अपने कमरे में बैठा न जाने क्या सोच रहा था । पास ही कमरे में पड़ोस की कुछ स्त्रियों के साथ दीदी बैठी थीं । कुछ बातें हो रही थीं, इतने में मैंने सुना, दीदी किसी स्त्री से कह रही हैं, 'कुछ भी हो, बहन, मेरी बड़ी बहू घर की लक्ष्मी थी ।' उस स्त्री ने कहा, 'हाँ बहन ! खूब याद आई, मैं तुमसे पूछने वाली थी ।

परिचय

जन्म : २७ मई १८९४ खैरागढ़ (म.प्र.)

मृत्यु : १८ दिसंबर १९७१ रायपुर (म.प्र.)

परिचय : बक्शी जी कवि, कथाकार, समीक्षक, निबंधकार अनेक रूपों में हिंदी साहित्य में प्रसिद्ध हैं। आप विभिन्न विषयों पर उच्च कोटि के ललित निबंध भी लिखे हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : हिंदी साहित्य विमर्श, विश्व साहित्य (आलोचना), हम, मेरी अपनी कथा, मेरे प्रिय निबंध, मेरा देश, वे दिन, समस्या और समाधान (निबंध संग्रह) यात्री (यात्रा वृत्तांत) । बक्शी जी की रचनाओं की ग्रंथावली ८ खंडों में विभक्त हैं ।

गद्‌य संबंधी

लघुकथा : लघुकथा किसी बहुत बड़े परिदृश्य में से एक विशेष क्षण/प्रसंग को प्रस्तुत करने का चातुर्य है ।

इस कहानी द्‌वारा लेखक ने भाभी-देवर के निश्छल प्रेम, तत्कालीन पारिवारिक स्थितियों एवं विशेष प्रसंगों से जुड़ी स्मृतियों को बड़े ही मार्मिक ढंग से दर्शाया है ।

उस दिन तुमने मेरे पास सखी का संदूक भेजा था न ?' दीदी ने उत्तर दिया, 'हाँ बहन, बहू कह गई थी कि उसे रोहिणी को दे देना ।' उस स्त्री ने कहा, 'उसमें सब तो ठीक था पर एक विचित्र बात थी ।' दीदी ने पूछा, 'कैसी विचित्र बात ?' वह कहने लगी, 'मैंने संदूक खोलकर एक दिन देखा तो उसमें एक जगह खूब हिफाजत से रेशमी रूमाल में कुछ बंधा हुआ मिला । मैं सोचने लगी, यह क्या है। कौतूहलवश उसे खोलकर मैंने देखा। बहन, कहो तो उसमें भला क्या रहा होगा ?' दीदी ने उत्तर दिया, 'गहना रहा होगा ।' उसने हँसकर कहा, 'नहीं, उसमें गहना न था। वह तो एक अधजली मोमबत्ती का टुकड़ा था और उसपर लिखा हुआ था 'मूल्य एक गिनी ।' क्षणभर के लिए मैं ज्ञानशून्य हो गया, फिर अपने हृदय के आवेग को न रोककर मैं उस कमरे में घुस पड़ा और चिल्लाकर कहने लगा, 'वह मेरी है; मुझे दे दो ।' कुछ स्त्रियाँ मुझे देखकर भागने लगीं । कुछ इधर-उधर देखने लगीं । उस स्त्री ने अपना सिर ढाँकते-ढाँकते कहा, 'अच्छा बाबू, मैं कल उसे भेज दूँगी ।' पर मैंने रात को एक नौकरानी भेजकर उस टुकड़े को मँगा लिया । उस दिन मुझसे कुछ नहीं खाया गया।

पूछे जाने पर मैंने कहकर टाल दिया कि सिर में दर्द है । बड़ी देर तक मैं इधर-उधर टहलता रहा । जब सब सोने के लिए चले गए तब मैं अपने कमरे में आया । मुझे उदास देखकर कमला पूछने लगी, 'सिर का दर्द कैसा है ? 'पर मैंने कुछ उत्तर न दिया; चुपचाप जेब से मोमबत्ती को निकालकर जलाया और उसे एक कोने में रख दिया । कमला ने पूछा, 'यह क्या है ?' मैंने उत्तर दिया, 'झलमला ।' कमला कुछ न समझ सकी। मैंने देखा कि थोड़ी देर में मेरे झलमले का क्षुद्र आलोक रात्रि के अनंत अंधकार में विलीन हो गया।

—०—

शब्द संसार

प्रदीप (पुं.सं.) = दीप
सखी (स्त्री.फा.) = सहेली
दिल्लगी (स्त्री.सं.) = मजाक
आलोक (पुं.सं.) = प्रकाश

संभाषणीय

'संयुक्त परिवार का महत्त्व', इस विषय की चर्चा में अपना मत / विचार स्पष्ट कीजिए ।

श्रवणीय

प्रेमचंद द्वारा लिखित 'बड़े घर की बेटी' यू ट्यूब पर सुनिए और संक्षेप में सुनाइए ।

पठनीय

किसी एकांकी को पढ़कर उसके केंद्रीय भाव बताइए ।

लेखनीय

निम्न शब्दों का उपयोग करते हुए कहानी लेखन कीजिए :
मोमबत्ती, कागज, बूँदें, नारियल का वृक्ष

विषय से...

'सार्क परिषद' में भारत का योगदान' इस संबंध में जानकारी प्राप्त कीजिए और चर्चा कीजिए ।
नौवीं कक्षा, भूगोल पृ. ७१

मौलिक सृजन

निम्नलिखित मुद्‌दों के उचित क्रम लगाकर उनके आधार पर कहानी लेखन कीजिए :

[मुद्‌दों का उचित क्रम लगाना आवश्यक है ।]

- मन में निश्चय
- लोगों का जुड़ना
- एक लड़का
- छुट्‌टियों में गाँव आना
- कुआँ तैयार होना
- लोगों का खुश होना
- सीख,शीर्षक
- कुआँ पानी से भरना
- लोगों का हँसना
- कुआँ खोदने का प्रारंभ
- शहर के महाविद्‌यालय में पढ़ना
- प्रतिवर्ष सूखे की समस्या का सामना
- एक मित्र का साथ देना

आसपास

अंतरजाल की सहायता से विविध राज्यों में मनाएँ जाने वाले 'भैया दूज', 'रक्षाबंधन' त्योहारों की विधियाँ प्राप्त कीजिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

(क) निम्नलिखित कथनों को पढ़कर सही, गलत पहचानिए तथा गलत कथन को सही करके लिखिए ।

१. कुछ स्त्रियाँ मुझे देखकर भागने लगीं ।

२. घर की वैसी दशा न थी जैसे आठ वर्ष पहले नहीं थी ।

३. कमला कुछ न समझ सकी ।

४. वह तो एक अधजला कागज का टुकड़ा था ।

(२) परिवार के प्रिय व्यक्ति पर आपके विचार लिखिए ।

पाठ से आगे

'मैं देश का देश मेरा', इसपर अपने विचार स्पष्ट कीजिए ।

रचना बोध

....

....

....

१३. क्या सचमुच आजाद हुए हम ?

– कर्नल डॉ. वीरेंद्र प्रताप सिंह

स्वतंत्रता संबंधी विचारों पर अपने मत प्रकट कीजिए :–

आसपास

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● स्वतंत्रता किन-किन क्षेत्रों में आवश्यक है चर्चा कराएँ । ● क्या असीमित स्वतंत्रता उपयुक्त होगी, प्रश्न पूछें । ● नियंत्रित स्वतंत्रता पर विशेष चर्चा कराएँ ।

जश्न कहीं हो किसी भवन में, डूबी जब बस्ती क्रंदन में
तब आँधी चलती चिंतन में, और प्रश्न उठता है मन में
क्या सचमुच आजाद हुए हम ?

पहले भी दु:ख दर्द कई थे, पर सब कुछ व्यापार नहीं था
संबंधों में अपनापन था, रिश्तों का बाजार नहीं था
खुशबू बसती थी खेतों में, पड़ते थे सावन में झूले
अब कागज के फूल सजा कर, उन मीठे गीतों को भूले
तुलसी की चौपाई जलती, जब उल्टी धुन के ईंधन में
तब आँधी चलती चिंतन में, और प्रश्न उठता है मन में
क्या सचमुच आजाद हुए हम ?

माना अनपढ़ थे बाबूजी, माँ थी उपवासों की मारी
भाई की अपनी मजबूरी, भाभी की अपनी लाचारी
सज्जा के सामान नहीं थे, होड़ नहीं थी दिखलाने की
सब कुछ खोने में खुशियाँ थीं, चाह नहीं ज्यादा पाने की
तब टूटा घर लगता था, अब सूनापन है आँगन में
तब आँधी चलती चिंतन में, और प्रश्न उठता है मन में
क्या सचमुच आजाद हुए हम ?

परिचय

जन्म : २२ सितंबर १९५६ बड़बिल (उड़ीसा)

परिचय : कर्नल साहब राष्ट्रीय स्तर के ख्याति प्राप्त कवि हैं । आपकी रचनाओं में राष्ट्रप्रेम के साथ-साथ सभी वर्गों और संप्रदायों को साथ लेकर चलने और सत्य को ठोंक कर कहने की बात विशेष रूपसे मुखर होती है ।

प्रमुख कृतियाँ : रक्तांजलि, बूँद-बूँद की प्यास (काव्य संग्रह) आदि ।

पद्‍य संबंधी

गीत : स्वर, पद, ताल से युक्त गान ही गीत होता है । इसमें एक मुखड़ा तथा कुछ अंतरे होते हैं । प्रत्येक अंतर के बाद मुखड़े को दोहराया जाता है । गीत गेय होता है ।

प्रस्तुत गीत के माध्यम से कर्नल साहब ने समाज में फैली विसंगतियों पर कुठाराघात करते हुए हमें वास्तविक आजादी का अर्थ समझाया है ।

आजादी का अर्थ नहीं है केवल सत्ता का परिवर्तन
आजादी का अर्थ नहीं है चंद चुने मोरों का नर्तन ।
आजादी का अर्थ नहीं है सब का उच्छृंखल हो जाना ।
ऊँची कुर्सी के आगे जब न्याय रेंगता अभिनंदन में
तब आँधी चलती चिंतन में और प्रश्न उठता है मन में
क्या सचमुच आजाद हुए हम ?

आजादी है खुली हवा के झोंकों का सबको छू जाना
आजादी है ओस सरीखी नर्म पत्तियों पर चू जाना
आजादी है इंद्रधनुष के रंगों का मिलजुल कर रहना
आजादी है निर्झनी-सा सबके हित की खातिर बहना ।
आजादी जब परिभाषित हो बंधती सत्ता के बंधन में
तब आँधी चलती चिंतन में और प्रश्न उठता है मन में
क्या सचमुच आजाद हुए हम ?

—०—

श्रवणीय

कवि रहीम के नीतिपरक दोहे सुनिए तथा किन्हीं पाँच दोहों का भावार्थ लिखिए ।

पठनीय

किसी भारतीय वैज्ञानिक के बारे में पढ़िए ।

शब्द संसार

क्रंदन (पुं.सं.) = रोना, विलाप
चिंतन (पुं.सं.) = बार-बार होने वाला स्मरण ध्यान, विचार
निर्झनी-निर्झरिणी (स्त्री.सं.) = नदी, झरना

संभाषणीय

'भारत देश है मेरा'...., इस विषय पर निम्न मुद्दों के आधार पर चर्चा कीजिए :
(१) विस्तार (२) सागर (३) लोग (४) खानपान (५) अनेकता में एकता

कल्पना पल्लवन

'सही स्वतंत्रता उस दिन होगी', इस विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) संजाल

घरवालों की स्थिति

(ख) आकृति पूर्ण कीजिए :

१. आजादी में हम

कल	आज

२. कवि के मतानुसार आजादी का असली मतलब

(२) 'क्या सचमुच आजाद हुए हम' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।

लेखनीय

आशारानी वोरा की 'भारत की प्रथम महिलाएँ' पुस्तक पढ़िए तथा उसमें से किन्हीं दो महिलाओं की जानकारी पर आधारित टिप्पणी तैयार कीजिए ।

पाठ से आगे

आपके आसपास के किसी फौजी से मुलाकात के लिए प्रश्नावली तैयार कीजिए ।

रचना बोध

....

....

....

१. वसंत-वर्षा

- पद्‌माकर भट्‌ट

संभाषणीय

'मेरी प्रिय ऋतु' पर चर्चा कीजिए :-

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● भारत में कौन-कौन सी ऋतुएँ हैं, उनके बारे में पूछें । ● ऋतुओं के कारण प्रकृति में होने वाले विविध परिवर्तनों पर चर्चा कराएँ । ● उनकी प्रिय ऋतु कौन-सी है और क्यों, इसपर विद्‌यार्थियों को लिखने के लिए कहें।

कूलन में केलि में कछारन में कुंजन में
क्यारिन में कलिन में कलीन किलकंत है ।

कहे पद्‌माकर परागन में पौनहू में
पानन में पीक में पलासन पगंत है ।

द्‌वार में दिसान में दुनी में देस-देसन में
देखौ दीप-दीपन में दीपत दिगंत है ।

बीथिन में ब्रज में नवेलिन में बेलिन में
बनन में बागन में बगरयो बसंत है ।।१।।

मल्लिक न मंजुल मलिंद मतवारे मिले,
मंद-मंद मारुत मुहीम मनसा की है ।

कहै 'पद्‌माकर' त्यों नदन नदीन नित,
नागर नबेलिन की नजर नसा की है ।

दौरत दरेर देत दादुर सु दुंदै दीह,
दामिनी दमकंत दिसान में दसा की है ।

बद्‌दलनि बुंदनि बिलोकी बगुलात बाग,
बंगलान बलिन बहार बरषा है ।।२।।

—०—

परिचय

जन्म : १७५३ सागर (म.प्र.)

मृत्यु : १८३३

परिचय : पद्‌माकर भट्‌ट रीतिकालीन कवियों में श्रेष्ठ स्थान रखते हैं । आपने कल्पना के माध्यम से शौर्य, शृंगार, भक्ति, प्रेम, मेलों-उत्सवों, युद्‌धों और प्राकृतिक सौंदर्य का मार्मिक चित्रण किया है । आपकी रचनाओं में अलंकार सहज ही प्रचुरता से दिखाई देते हैं । संस्कृत, प्राकृत और ब्रजभाषा पर आपका प्रभुत्व था । दोहा, सवैया और कवित्त पर आपका असाधारण अधिकार था ।

प्रमुख कृतियाँ : हिम्मत बहादुर विरुदावली, जगत-विनोद, यमुना लहरी, गंगा लहरी आदि (काव्य ग्रंथ) रामरसायन, हितोपदेश (अनुवाद) ।

पद्‌य संबंधी

सवैया : यह एक वार्णिक छंद है । इसमें चार चरण अथवा पद होते हैं । वार्णिक वृत्तों में २२ से २६ अक्षर के चरण होते हैं ।

प्रस्तुत सवैयों में पद्‌माकर जी ने वसंत और वर्षा ऋतुओं के विविध प्रभावों को छंद बद्‌ध किया है ।

शब्द संसार

कछारन (पुं.सं.) = किनारे, कगार
कुंजन (पुं.सं.) = कुंज
पौनहु (पुं. सं.) = पवन
पलासन (पुं.सं.) = टेसू, ढाक के फूल
नवेलिन (स्त्री.सं.) = नववधू
मंजुल (वि.) = सुंदर, मनहरण
दौरत (क्रि.) = दौड़ती है ।
दामिनी (स्त्री.सं.) = बिजली, दावनी
बुंदनि (स्त्री.सं.) = बूँद

आसपास

'जलसंवर्धन' के संदर्भ में जानकारी प्राप्त कीजिए।

पठनीय

विविध ऋतुओं में आने वाले त्योहारों के संदर्भ में जानकारी पढ़िए तथा उनके प्रमुख मुद्‌दों का संकलन कीजिए ।

लेखनीय

'वर्षा ऋतु के बाद प्रकृति का नया रूप' इसपर अपने अनुभव लिखिए ।

श्रवणीय

आकाशवाणी पर विविध प्रांतों के लोकगीतों को सुनिए तथा कोई एक गीत कक्षा में सुनाइए ।

कल्पना पल्लवन

निम्न शब्दों को लेकर चार पंक्तियों की कविता लिखिए ।
बादल, बिजली, धरती, नदी

पाठ के आँगन में

(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) कविता में वर्णित इनसे प्रभावित क्षेत्र :

वसंत	वर्षा
(१)	(१) ....
(२)	(२) ....
(३)	(३) ....
(४)	(४) ....

(ख) निम्नलिखित शब्दों के लिए कविता में प्रयुक्त शब्द लिखिए :

पवन	बारिश	मेंढक	पत्ता
↓	↓	↓	↓

(२) एक ही वर्ण का प्रयोग करते हुए अर्थपूर्ण शब्दों की रचना कीजिए तथा उनसे वाक्य तैयार कीजिए ।

(३) निम्नलिखित पद्‌य पंक्तियों का भावार्थ लिखिए :

(च) द्‌वार में दिसान में दुनी में देस-देसन में
देखौ दीप-दीपन में दीपत दिगंत है ।

(छ) 'बद्‌दलनि बुंदनि बिलोकी बगुलात बाग
बंगलान बलिन बहार बरषा है।'

पाठ से आगे

अंतरजाल से भारत में पाए जाने प्राकृतिक सौंदर्यवाले दर्शनीय स्थलों का वर्णन पढ़िए ।

रचना बोध

....
....
....

२. ताई

– *विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक'*

श्रवणीय

भक्त सूरदास जी का 'वात्सल्य' रस वाला कोई पद सुनिए और आशय सुनाइए ।

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

- इसके कठिन शब्द तथा पक्तियाँ कहलावाएँ । ● पद में वर्णित भाव बताने के लिए कहें ।
- पद का सरल अर्थ सुनाने के लिए प्रेरित करें ।

''ताऊ जी, हमें लेलगाड़ी (रेलगाड़ी) ला दोगे ?'' कहता हुआ एक पंचवर्षीय बालक बाबू रामजीदास की ओर दौड़ा । बालक बोला–''उसमें बैठकर बली दूल जाएँगे । हम बी जाएँगे, चुन्नी को बी ले जाएँगे । बाबू जी को नहीं ले जाएँगे । हमें लेलगाड़ी नहीं ला देते । ताऊ जी तुम ला दोगे, तो तुम्हें ले जाएँगे ।'' बाबू–''और किसे ले जाएगा ?'' पास ही बाबू रामजीदास की अद्‌र्धांगिनी बैठी थीं । बाबू साहब ने उनकी ओर इशारा करके कहा–''और अपनी ताई को नहीं ले जाएगा ?'' बालक कुछ देर तक अपनी ताई की ओर देखता रहा । ताई जी उस समय कुछ चिढ़ी हुई-सी बैठी थीं । बालक को उनके मुख का वह भाव अच्छा न लगा । अतएव वह बोला–''ताई को नहीं ले जाएँगे ।''

ताई जी सुपारी काटती हुई बोलीं–''अपने ताऊ जी ही को ले जा मेरे ऊपर दया रख ।'' ताई ने यह बात बड़ी रुखाई के साथ कही । बालक ताई के शुष्क व्यवहार को तुरंत ताड़ गया । बाबू साहब ने फिर पूछा–''ताई को क्यों नहीं ले जाएँगा ?''

बालक–''ताई हमें प्याल (प्यार), नहीं कलतीं ।''

बाबू – ''जो प्यार करें तो ले जाएगा ?''

बालक ने ताऊ जी को प्रसन्न करने के लिए केवल सिर हिलाकर स्वीकार कर लिया परंतु मुख से कुछ नहीं कहा । बाबू साहब उसे अपनी अद्‌र्धांगिनी के पास ले जाकर उनसे बोले–''लो, इसे प्यार कर लो तो तुम्हें ले जाएगा ।''

मनोहर ने ताऊ की बात का उत्तर नहीं दिया । उधर ताई ने मनोहर को अपनी गोद से ढकेल दिया । मनोहर नीचे गिर पड़ा । शरीर में तो चोट नहीं लगी, पर हृदय में चोट लगी । बालक रो पड़ा । मनोहर के चले जाने पर बाबू रामजीदास रामेश्वरी से बोले–''तुम्हारा यह कैसा व्यवहार है ? बच्चे को ढकेल दिया । जो उसे चोट लग जाती तो ?''

रामेश्वरी मुँह मटकाकर बोली–''लग जाती तो अच्छा होता । क्यों मेरी खोपड़ी पर लादे देते हो ? आप ही मेरे ऊपर डालते हो और आप ही अब ऐसी बातें करते हैं ।''बाबू साहब कुढ़कर बोले–''इसी को खोपड़ी पर लादना कहते हैं ?''

परिचय

जन्म : सन १८९९ अंबाला (पंजाब)
मृत्यु : १९४५
परिचय : आपको हिंदी, संस्कृत, फारसी, उर्दू, बंगाली भाषाओं का अच्छा ज्ञान था । प्रख्यात कहानीकार, उपन्यासकार 'कौशिक' जी ने अपनी कहानियों में पात्रों के चरित्र निर्माण में मनोविज्ञान का आधार लिया है ।
प्रमुख कृतियाँ : खोटा-बेटा, पेरिस की नर्तकी, साध की होली, चित्रशाला, मणिमाला, कल्लोल (कहानी संग्रह) माँ, भिखारिणी (उपन्यास) आदि ।

गद्‌य संबंधी

संवादात्मक कहानी : किसी विशेष घटना की रोचक ढंग से संवाद रूप में प्रस्तुति संवादात्मक कहानी कहलाती है ।

इस कहानी में कौशिक जी ने एक नारी के स्वयं के पुत्र की चाहत, उसकी निष्ठुरता फिर उसके हृदय परिवर्तन को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है ।

रामेश्वरी -''और नहीं तो किसे कहते हैं ? तुम्हें तो अपने आगे और किसी का दुख-सुख सूझता ही नहीं । न जाने कब किसका जी कैसा होता है । तुम्हें उन बातों की कोई परवाह ही नहीं, अपनी चुहल से काम है ।''

बाबू-''बच्चों की प्यारी बातें सुनकर तो चाहे जैसा जी हो, प्रसन्न हो जाता है । मगर तुम्हारा हृदय न जाने किस धातु का बना हुआ है ?''

रामेश्वरी -''तुम्हारा हो जाता होगा । और होने को होता है, मगर वैसा बच्चा भी तो हो । पराये धन से भी कहीं घर भरता है ?''

बाबू साहब कुछ देर चुप रहकर बोले-''यदि भतीजा पराया धन कहा जा सकता है, तो फिर मैं नहीं समझता कि अपना धन किसे कहेंगे ?''

बाबू रामजीदास धनी आदमी हैं । कपड़े की आढ़त का काम करते हैं। लेन-देन भी है । इनसे एक छोटा भाई है उसका नाम है कृष्णदास । दोनों भाइयों का परिवार एक ही है ।

रामजीदास निस्संतान हैं । कृष्णदास की दो संतानें हैं । एक पुत्र-वही पुत्र, जिससे पाठक परिचित हो चुके हैं- और एक कन्या है चुन्नी । कन्या की आयु दो वर्ष के लगभग है ।

रामजीदास अपने छोटे भाई और उनकी संतान पर बड़ा स्नेह है कि उसके प्रभाव से उन्हें अपनी संतानहीनता कभी खटकती ही नहीं ।

परंतु रामजीदास की पत्नी रामेश्वरी को अपनी संतानहीनता का बड़ा दुख है । वह दिन-रात संतान ही के सोच में घुली रहती है ।

रात के भोजन आदि से निवृत्त होकर रामजीदास शैया पर लेटे शीतल और मंद वायु का आनंद ले रहे हैं । पास ही दूसरी शैया पर रामेश्वरी, हथेली पर सिर रखे, किसी चिंता में डूबी हुई थीं । बाबू साहब ने अपनी स्त्री की ओर करवट लेकर कहा-''आज तुमने मनोहर को बुरी तरह ढकेला था कि मुझे अब तक उसका दुख है ।''

रामेश्वरी बोली-''तुम्हीं ने मुझे ऐसा बना रखा है । उस दिन उस पंडित ने कहा कि हम दोनों के जन्मपत्री में संतान का जोग है और उपाय करने से संतान हो सकती है । उसने उपाय भी बताए थे, पर तुमने उनमें से एक भी उपाय करके न देखा ।''

बाबू साहब हँसकर बोले-''तुम्हारी जैसी सीधी स्त्री भी क्या कहूँ ?'' तुम बात तो समझती नहीं, अपनी ही ओटे जाती हो।'' रामेश्वरी -''अच्छा, एक बात पूछती हूँ । भला तुम्हारे जी में संतान का मुख देखने की इच्छा क्या कभी नहीं होती ?''

इस बार रामेश्वरी ने बाबू साहब के हृदय का कोमल स्थान पकड़ा । वह कुछ देर चुप रहे । तत्पश्चात एक लंबी साँस लेकर बोले-''भला ऐसा कौन मनुष्य होगा, जिसके हृदय में संतान का मुख देखने की इच्छा न हो ? परंतु क्या किया जाए ?''

पठनीय

लेखक सियारामशरण गुप्त की 'काकी' कहानी पढ़िए तथा उसके प्रमुख पात्रों की विशेषताएँ लिखिए ।

विषय से...

आपके परिवार के किसी वेतनभोगी सदस्य की वार्षिक आय की जानकारी लेकर उनके द्‌वारा भरे जाने वाले आयकर की गणना कीजिए ।

नौवीं कक्षा, गणित, भाग-१ पृष्ठ १००

जब नहीं है और न होंगे की कोई आशा ही है, तब उसके लिए व्यर्थ चिंता करने से क्या लाभ ? इसके सिवा जो बात अपनी संतान से होती, वही भाई की संतान से हो भी रही है । जितना स्नेह अपनों पर होता, उतना ही इन पर भी है जो आनंद उसकी बाल क्रीड़ा से आता, वही इनकी क्रीड़ा से भी आ रहा है । फिर नहीं समझता कि चिंता क्यों की जाय ।''

रामेश्वरी कुढ़कर बोली-''तुम्हारी समझ को मैं क्या कहूँ ? इसी से तो रात-दिन जला करती हूँ, भला यह तो बताओ कि तुम्हारे पीछे क्या इन्हीं से तुम्हारा नाम चलेगा ?''

बाबू साहब हँसकर बोले-''अरे, तुम भी कहाँ की क्षुद्र बातें लाई । नाम संतान से नहीं चलता । नाम अपनी सुकृति से चलता है । तुलसीदास को देश का बच्चा-बच्चा जानता है । सूरदास को मरे कितने दिन हो चुके । इसी प्रकार जितने महात्मा हो गए हैं, उन सबका नाम क्या उनकी संतान की बदौलत चल रहा है ? सच पूछो, तो संतान से जितनी नाम चलने की आशा रहती है, उतनी ही नाम डूब जाने की संभावना रहती है, परंतु सुकृति एक ऐसी वस्तु है, जिसमें नाम बढ़ने के सिवा घटने की आशंका रहती ही नहीं । हमारे शहर में राय गिरधारीलाल कितने नामी थे । उनके संतान कहाँ है । पर उनकी धर्मशाला और अनाथालय से उनका नाम अब तक चला आ रहा है, अभी न जाने कितने दिनों तक चला जाएगा ।

ममत्व से प्रेम उत्पन्न होता है, और प्रेम से ममत्व । इन दोनों का साथ चोलीदामन का-सा है । ये कभी पृथक नहीं किए जा सकते । शाम का समय था । रामेश्वरी खुली छत पर बैठी हवा खा रही थी । पास उनकी देवरानी भी बैठी थी । दोनों बच्चे छत पर दौड़-दौड़कर खेल रहे थे । रामेश्वरी उनके खेल को देख रही थी । इस समय रामेश्वरी को उन बच्चों का खेलना-कूदना बड़ा भला मालूम हो रहा था । हवा में उड़ते हुए उनके बाल, कमल की तरह खिले उनके नन्हे-नन्हे मुख, उनकी प्यारी-प्यारी तोतली बातें, उनका चिल्लाना, भागना, लौट जाना इत्यादि क्रीड़ाएँ उसके हृदय को शीतल कर रहीं थीं । सहसा मनोहर अपनी बहन को मारने दौड़ा हुआ आया और वह भी उन्हीं की गोद में जा गिरा रामेश्वरी उस समय सारा द्वेष भूल गई । उन्होंने दोनों बच्चों को उसी प्रकार हृदय से लगा लिया, जिस प्रकार वह मनुष्य लगाता है जो कि बच्चों के लिए तरस रहा हो । उन्होंने बड़ी सतृष्णता से दोनों को प्यार किया । उस समय यदि कोई अपरिचित मनुष्य उन्हें देखता तो उसे यह विश्वास होता कि रामेश्वरी उन बच्चों की माता है ।

दोनों बच्चें बड़ी देर तक उसकी गोद में खेलते रहे । सहसा उसी समय किसी के आने की आहट पाकर बच्चों की माता वहाँ से उठकर चली गई ।

''मनोहर, ले रेलगाड़ी ।'' कहते हुए बाबू रामजीदास छत पर आए । उनका स्वर सुनते ही दोनों बच्चे रामेश्वरी की गोद से तड़पकर निकल भागे ।

मौलिक सृजन

जिस व्यक्ति ने आप को सर्वाधिक प्रेरित किया है, उसके व्यक्तित्व की विशेषताएँ लिखिए ।

स्वमत

'आज के बच्चे कल का भविष्य', इस बारे में स्वमत लिखिए ।

रामजीदास ने पहले दोनों को खूब प्यार किया, फिर बैठकर रेलगाड़ी दिखाने लगे । पति को बच्चों में मगन होते देखकर उसकी भौहें तन गईं । बच्चों के प्रति हृदय में फिर वही घृणा और द्‌वेष भाव जाग उठा ।

बच्चों को रेलगाड़ी देकर बाबू साहब रामेश्वरी के पास आए और मुस्कराकर बोले–''आज तो तुम बच्चों को बड़ा प्यार कर रही थीं । इससे मालूम होता है कि तुम्हारे हृदय में भी उनके प्रति कुछ प्रेम अवश्य है ।''

रामेश्वरी को पति की यह बात बहुत बुरी लगी । उसे अपनी कमजोरी पर बड़ा दुख हुआ । केवल दुख ही नहीं, अपने ऊपर क्रोध भी आया । वह दुख और क्रोध पति के उक्त वाक्य से और भी बढ़ गया । उसकी कमजोरी पति पर प्रगट हो गई, यह बात उसके लिए असह्य हो उठी ।

रामजीदास बोले–''इसीलिए मैं कहता हूँ कि अपनी संतान के लिए सोच करना वृथा है । यदि तुम इनसे प्रेम करने लगो, तो ये ही अपनी संतान प्रतीत होने लगेंगे । मुझे इस बात से प्रसन्नता है कि तुम इनसे स्नेह करना सीख रही हो ।''

यह बात बाबू साहब ने नितांत हृदय से कही थी परंतु रामेश्वरी को व्यंग्य की गंध मालूम हुई । उन्होंने कुढ़कर मन में कहा–''इन्हें मौत भी नहीं आती । मर जाएँ, पाप कटे ! आठों पहर आँखों के सामने रहने से प्यार को जी ललचा ही उठता है । इनके मारे कलेजा और भी जला करता है ।''

बाबू साहब ने पत्नी को मौन देखकर कहा–''अब झेंपने से क्या लाभ । प्रेम को छिपाना व्यर्थ है । छिपाने की आवश्यकता भी नहीं ।''

रामेश्वरी जल–भुनकर बोली–''मुझे क्या पड़ी है, जो मैं प्रेम करूँगी ? तुम्हीं को मुबारक रहे । निगोड़े आप ही आकर घुसते हैं । एक घर में रहने में कभी–कभी हँसना बोलना पड़ता ही है । परसों जरा यों ही ढकेल दिया, उसपर तुमने सैकड़ों बातें सुनाईं । संकट में प्राण हैं, न यों चैन, न त्यों चैन।''

बाबू साहब को बड़ा क्रोध आया । उन्होंने कर्कश स्वर में कहा–''न जाने कैसे हृदय की स्त्री है ! अभी अच्छीखासी बैठी बच्चों से प्यार कर रही थी । मेरे आते ही गिरगिट की तरह रंग बदलने लगी । ''

रामेश्वरी ने इसका कोई उत्तर न दिया । अपने क्षोभ तथा क्रोध को वे आँखों द्‌वारा निकालने लगीं । जैसे–जैसे बाबू रामजीदास का स्नेह दोनों बच्चों पर बढ़ता जाता था, वैसे–ही–वैसे रामेश्वरी के द्‌वेष और घृणा की मात्रा भी बढ़ती जाती थी । प्रायः बच्चों के पीछे पति–पत्नी में कहा सुनी हो जाती थी और रामेश्वरी को पति के कटु वचन सुनने पड़ते थे ।

इसी प्रकार कुछ दिन व्यतीत हुए । एक दिन नियमानुसार रामेश्वरी छत पर अकेली बैठी हुई थी । उनके हृदय में अनेक प्रकार के विचार आ

लेखनीय

निम्नलिखित विषय पर एक परिच्छेद लिखिए :
'डिजिटल भारतः एक पहल'

रहे थे । विचार और कुछ नहीं, अपनी निज की संतान का अभाव, पति का भाई की संतान के प्रति अनुराग आदि कुछ देर बाद जब उनके विचार स्वयं उन्हीं को कष्टदायक प्रतीत होने लगे, तब वह अपना ध्यान दूसरी ओर लगाने के लिए टहलने लगीं ।

वह टहल ही रही थी कि मनोहर दौड़ता हुआ आया । मनोहर को देखकर उनकी भृकुटी चढ़ गई और वह छत की चहारदीवारी पर हाथ रखकर खड़ी हो गईं ।

संध्या का समय था । आकाश में रंग-बिरंगी पतंगें उड़ रहीं थीं । मनोहर कुछ देर तक खड़ा पतंगों को देखता और सोचता रहा कि कोई पतंग कटकर उसकी छत पर गिरे, क्या आनंद आए । देर तक गिरने की आशा करने बाद दौड़कर रामेश्वरी के पास आया और उनकी टाँगों में लिपटकर बोला-''ताई, हमें पतंग मँगा दो ।'' रामेश्वरी ने झिड़क कर कहा-''चल हट, अपने ताऊ से माँग जाकर ।''

मनोहर कुछ अप्रतिभ-सा होकर फिर आकाश की ओर ताकने लगा -। थोड़ी देर बाद उससे फिर रहा न गया । इस बार उसने बड़े लाड़ से आकर अत्यंत करुण स्वर में कहा-''ताई मँगा दो, हम भी उड़ाएँगे ।''

इस बार उसकी भोली प्रार्थना से रामेश्वरी का कलेजा पसीज गया। वह कुछ देर तक उसकी और स्थिर दृष्टि से देखती रही । फिर उन्होंने एक लंबी साँस लेकर मन ही मन कहा यह मेरा पुत्र होता तो आज मुझसे बढ़कर भाग्यवान स्त्री संसार में दूसरी न होती । निगोड़ा मरा कितना सुंदर है, और कैसी प्यारी बातें करता है । यही जी चाहता की उठाकर छाती से लगा लें । यह सोचकर वह उसके सिर पर हाथ फेरने वाली थी कि इतने में उन्हें मौन देखकर बोला, ''तुम हमें पतंग नहीं मँगवा दोगी, तो ताऊ जी से कह देंगे।'' यद्यपि बच्चे की इस भोली बात में भी मधुरता थी, तथापि रामेश्वरी का मुँह क्रोध के मारे लाल हो गया । वह उसे झिड़क कर बोली- ''जा कह दे अपने ताऊ जी से देखें, वह मेरा क्या कर लेंगे ।''

मनोहर भयभीत होकर उनके पास से हट आया, और फिर सतृष्ण नेत्रों से आकाश में उड़ती हुई पतंगों को देखने लगा । इधर रामेश्वरी ने सोचा-यह सब ताऊ जी के दुलार का फल है कि बालिश्त भर का लड़का मुझे धमकाता है । ईश्वर करें, इस दुलार पर बिजली टूटे ।'' उसी समय आकाश से एक पतंग कटकर उसी छत की ओर आई और रामेश्वरी के ऊपर से होती हुई छज्जे की ओर गई । छत के चारों ओर चहारदीवारी थी । जहाँ रामेश्वरी खड़ी हुई थीं, केवल वहाँ पर एक द्‌वार था , जिससे छज्जे पर आ-जा सकते थे । रामेश्वरी उस द्‌वार से सटी हुई खड़ी थीं । मनोहर ने पतंग को छज्जे पर जाते देखा । पतंग पकड़ने के लिए वह दौड़कर छज्जे की ओर चला । रामेश्वरी खड़ी देखती रहीं । मनोहर उसके

आसपास

पक्षी अपने बच्चों की देखभाल किस तरह करते हैं, इसके बारे में अंतरजाल से जानकारी प्राप्त कीजिए ।

पास से होकर छज्जे पर चला गया, और उससे दो फिट की दूरी पर खड़ा होकर पतंग को देखने लगा । पतंग छज्जे पर से होती हुई नीचे घर के आँगन में जा गिरी । एक पैर छज्जे की मुँड़ेर पर रखकर मनोहर ने नीचे आँगन में झाँका और पतंग को आँगन में गिरते देख, वह प्रसन्नता के मारे फूला न समाया । वह नीचे जाने के लिए शीघ्रता से घूमा, परंतु घूमते समय मुँड़ेर पर से उसका पैर फिसल गया । वह नीचे की ओर चला । नीचे जाते-जाते उसके दोनों हाथों में मुँड़ेर आ गई । वह उसे पकड़कर लटक गया और रामेश्वरी की ओर देखकर चिल्लाया ''ताई !''

रामेश्वरी ने धड़कते हुए हृदय से इस घटना को देखा । उसके मन में आया कि अच्छा है, मरने दो, सदा का पाप कट जाएगा । यही सोच कर वह एक क्षण रुकी । इधर मनोहर के हाथ मुँड़ेर पर से फिसलने लगे । वह अत्यंत भय तथा करुण नेत्रों से रामेश्वरी की ओर देखकर चिल्लाया-''अरी ताई !'' रामेश्वरी की आँखें मनोहर की आँखों से जा मिलीं । मनोहर की वह करुण दृष्टि देखकर रामेश्वरी का कलेजा मुँह में आ गया । उन्होंने व्याकुल होकर मनोहर को पकड़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाया उनका हाथ मनोहर के हाथ तक पहुँचा ही कि मनोहर के हाथ से मुँड़ेर छूट गई वह नीचे आ गिरा । रामेश्वरी चीख मार कर छज्जे पर गिर पड़ीं ।

रामेश्वरी एक सप्ताह तक बुखार से बेहोश पड़ी रहीं । कभी-कभी जोर से चिल्ला उठतीं, और कहतीं-''देखो-देखो, वह गिरा जा रहा है-उसे बचाओ, दौड़ो -मेरे मनोहर को बचा लो ।'' कभी वह कहतीं- ''बेटा मनोहर, मैंने तुझे नहीं बचाया । हाँ, हाँ, मैं चाहती तो बचा सकती थी-देर कर दी ।'' इसी प्रकार के प्रलाप वह किया करतीं ।

मनोहर की टाँग उखड़ गई थी, टाँग बिठा दी गई । वह क्रमशः फिर अपनी असली हालत पर आने लगा ।

एक सप्ताह बाद रामेश्वरी का ज्वर कम हुआ । अच्छी तरह होश आने पर उन्होंने पूछा-''मनोहर कैसा है ?''

रामजीदास ने उत्तर दिया-''अच्छा है ।''

रामेश्वरी-''उसे पास लाओ ।

मनोहर रामेश्वरी के पास लाया गया । रामेश्वरी ने उसे बड़े प्यार से हृदय से लगाया । आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई, हिचकियों से गला रुँध गया । रामेश्वरी कुछ दिनों बाद पूर्ण स्वस्थ हो गईं । अब वह मनोहर और उसकी बहन चुन्नी से द्‍वेष नहीं करतीं और मनोहर तो अब उसका प्राणाधार हो गया । उसके बिना उन्हें एक क्षण भी कल नहीं पड़ती ।

—०—

संभाषणीय

संयुक्त परिवार का महत्व बताते हुए अपने विचार कक्षा के सामने प्रस्तुत कीजिए ।

पाठ से आगे

'आपसी स्नेह संयुक्त परिवार की नींव है' इसपर अपने विचार स्पष्ट कीजिए ।

शब्द संसार

शुष्क (वि.सं.) = सूखा, नीरस
तीक्ष्ण (वि.) = प्रखर, तीव्र
मुँड़ेर (स्त्री. सं.) = छत के किनारे की दीवार
छज्जा (पुं.सं.) = छत, छप्पर
प्रलाप (पुं.सं.) = पागलों की तरह कही हुई व्यर्थ की बातें

मुहावरे

गिरगिट की तरह रंग बदलना = स्वार्थ पूर्ति हेतु व्यवहार बदलना ।
कलेजा पसीजना = हृदय द्रवित होना ।
कलेजा मुँह में आना = लगभग जान निकलने की स्थिति में होना ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :–

(क) कारण लिखिए :
१. मनोहर रेलगाड़ी में ताऊ जी को ले जाएगा .....
२. मनोहर रोने लगा ....

(ख) आकृति पूर्ण कीजिए :
(त) रामेश्वरी को दुख था –
(थ) इससे नाम चलता है –

(ग) संजाल :

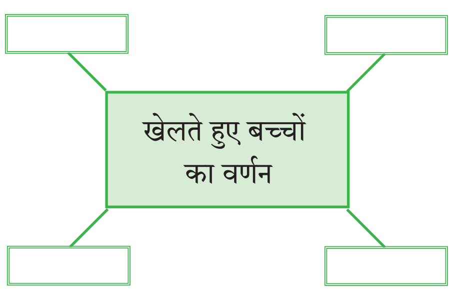

(घ) ताई का स्वभाव

(छ) कहानी में आए संत साहित्यकार
१. ____________ २. ____________

(च) अर्थपूर्ण शब्द तैयार कीजिए :
(प) र्धा | द् | गि | अ | नी ______
(फ) ता | ष्ण | स | तृ ______

(२) पाठ में प्रयुक्त अव्ययों को ढूँढ़कर उनका भेदानुसार वर्गीकरण कीजिए । उनमें से किन्हीं चार का सार्थक वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

(३) 'ताई की बदलती स्वाभाविक स्थिति' स्पष्ट कीजिए ।

रचना बोध

....
....
....

भाषा बिंदु

(१) निर्देशानुसार संधि विच्छेद, संधि तथा उनका नामोल्लेख कीजिए :

क्र.	संधि विच्छेद	संधि	संधि का प्रकार
१.	सेवार्थ	.... + ...	
२.	....	अभि + इष्ट	
३.	....	नव + ऊढ़ा	
४.	ब्रह्मर्षि	.... + ...	
५.	....	दंत + ओष्ठ	
६.	महौषधि	.... + ...	
७.	उपर्युक्त	.... + ...	
८.	....	अनु + इति	
९.	....	वाक् + जाल	
१०.	सन्मति	.... + ...	
११.	निर्विघ्न	.... + ...	
१२.	दुश्चक्र	.... + ...	
१३.	....	निः + संतान	
१४.	....	दुः + प्रकृति	
१५.	चतुष्पाद	.... + ...	

(२) परिच्छेद पढ़िए और उसमें आए शब्दों के लिंग एवं वचन बदलकर लिखिए ।

मैं गाँव से शहर पढ़ने आता था । गाँव का मेरा एक मित्र भी था । सावन-भादों की बादलों से ढँकी रात में बीहड़ पानी बरसता है । पूरा सन्नाटा शेर की दहाड़ सरीखा गरज उठता है । छमाक से बिजलियाँ कड़कती हैं । माँ बच्चे को अपने छाती से चिपकाती है । हाँड़ी में उबलते दाल-भात के साथ उसकी उम्मीद भी पकती है । उसका श्रम पकता है । अंत में कभी-कभी माँ हाँड़ी में चिपके मुट्ठी भर बचे चावल खाती है । न जाने कहाँ से अपनी आँखों में इतनी तेज चमक पैदा कर लेती है कि भरे पेटवाले की आँखें चौंधियाँ जाती हैं ।

उसके त्याग और संतान की तृप्ति के पानी से उसकी साध लहलहाती है । बैलगाडी में बैठी-संतान को छतरी की छाँव करती है ।

बस में बच्चा खिड़की के पास बैठा बाहर दृश्यों को देखता है और वह पूरी यात्रा बच्चे को देखती रहती है । सँभालती रहती है । रेल जब बोगदे के भीतर से गुजरती है, तो अनायास उसका हाथ बच्चे की बाँह पर चला जाता है और पिता का सामान पर ।

(डॉ. श्रीराम परिहार, 'ठिठके पल पाँखरी पर' से साभार)

३. गोदान

– प्रेमचंद

मौलिक सृजन

पाठ्यपुस्तक का कौन-सा पाठ और उसके लेखक आपको अच्छे लगते हैं, इसपर चर्चा कीजिए और अपना मत लिखिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

• विद्यार्थियों से पसंदीदा पाठों के और लेखकों के नाम पूछें । • पाठ का केंद्रीय विचार पूछें । • लेखक की जानकारी पाने के लिए आवश्यक मुद्दे देकर चर्चा कराएँ • उनका अपना मत लिखने के लिए प्रेरित करें ।

दूसरे दिन प्रातःकाल गोबर विदा होकर लखनऊ चला । होरी उसे गाँव के बाहर तक पहुँचाने आया । गोबर के प्रति इतना प्रेम उसे कभी न हुआ था । जब गोबर उसके चरणों पर झुका तो होरी रो पड़ा मानो फिर उसे पुत्र के दर्शन न होंगे । उसकी आत्मा में उल्लास था, गर्व था, संकल्प था। पुत्र से यह श्रद्‌धा और स्नेह पाकर वह तेजवान हो गया है, विशाल हो गया है । कई दिन पहले उसपर जो अवसाद-सा छा गया था, एक अंधकार-सा जहाँ वह अपना मार्ग भूल जाता था, वहाँ अब उत्साह और प्रकाश है ।

रूपा होरी की बेटी अपनी ससुराल में खुश थी । जिस दशा में उसका बालपन बीता था, उसमें पैसा सबसे कीमती चीज थी । मन में कितनी साधें थीं, जो मन ही में घुट-घुटकर रह गई थीं । वह अब उन्हें पूरा कर रही थी और रामसेवक अधेड़ होकर भी जवान हो गया था । रूपा के लिए वह पति था, उसके जवान, अधेड़ या बूढ़े होने से उसकी नारी-भावना में कोई अंतर न आ सकता था । उसकी वह भावना पति के रंग-रूप या उम्र पर आश्रित न थी, उसकी बुनियाद इससे बहुत गहरी थी, श्वेत परंपराओं की तह में, जो केवल किसी भूकंप से ही हिल सकती थी । उसका यौवन अपने ही में मस्त था, वह अपने ही लिए अपना बनाव-सिंगार करती थी और आप ही खुश होती थी । रामसेवक के लिए उसका दूसरा रूप था । तब वह गृहिणी बन जाती थी, घर के काम-काज में लगी हुई । किसी तरह की अपूर्णता का भाव उसके मन में न आता था । अनाज से भरे हुए बखार और गाँव से सिवान तक फैले हुए खेत और द्‌वार पर ढोरों की कतारें और किसी प्रकार की अपूर्णता को उसके अंदर आने ही न देती थी ।

उसकी सबसे बड़ी अभिलाषा थी अपने घरवालों की खुशी देखना । उनकी गरीबी कैसे दूर कर दे ? उस गाय की याद अभी तक उसके दिल में हरी थी, जो मेहमान की तरह आई थी और सबको रोता छोड़कर चली गई थी । वह स्मृति इतने दिनों के बाद अब और भी मृदु हो गई थी । अभी उसका निजत्व इन नए घर में न जम पाया था । वही पुराना घर उसका अपना घर था । वहीं के लोग अपने आत्मीय थे, उन्हीं का दुख उसका दुख और उन्हीं का सुख था । इस द्‌वार पर ढोरों का एक रेवड़ देखकर उसे वह हर्ष न हो सकता था, जो अपने द्‌वार पर एक गाय देखकर होता । उसके

परिचय

जन्म : ३१ जुलाई १८८० लमही, वाराणसी (उ.प्र.) **मृत्यु :** ८ अक्टूबर १९३६

परिचय : उपन्यास सम्राट, कलम के सिपाही प्रेमचंद जी का मूल नाम धनपत राय था । आप १३ वर्ष की उम्र में साहित्यकार की पंक्ति में खड़े थे । आप आधुनिक हिंदी कहानी के पितामह माने जाते हैं । आपकी अधिकतर कहानियों में किसानों, मजदूरों, स्त्रियों आदि की समस्याएँ गंभीरता से चित्रित हुई हैं। आपने हिंदी कहानी और उपन्यास की ऐसी परंपरा विकसित की जिसने पूरी सदी के साहित्य का मार्गदर्शन किया ।

प्रमुख कृतियाँ : मानसरोवर १ से ८ भाग (कहानी संग्रह) गोदान, सेवासदन, निर्मला, गबन, रंगभूमि, (उपन्यास) संग्राम, कर्बला, प्रेम की वेदी (नाटक) टालस्टॉय की कहानियाँ, आजाद कथा, चाँदी की डिबिया आदि (अनुवाद) ।

गद्‌य संबंधी

उपन्यास : यह गद्‌य की लोकप्रिय विधा है। एक विस्तृत कथा जो अपने भीतर अन्य गौण कथाएँ समाहित किए रहती है । इस कथा के भीतर समाज और व्यक्ति की विविध अनुभूतियों और संवेदनाओं, अनेक प्रकार के दृश्य और घटनाओं के साथ-साथ अनेक प्रकार के चरित्र भी होते हैं ।

प्रस्तुत अंश 'गोदान' उपन्यास से लिया गया है । इसमें गरीबी से जूझते मानव जीवन का चरित्र, उसकी आंतरिक-बाह्य परि-स्थितियों से संघर्ष, उसके चारों ओर का वातावरण और जीवन के सत्य को बड़े ही मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया गया है ।

दादा की यह लालसा कभी पूरी न हुई । जिस दिन वह गाय आई थी, उन्हें इतनी समाई ही न हुई कि कोई दूसरी गाय लाते; पर वह जानती थी, वह लालसा होरी के मन में उतनी ही सजग है । अबकी यह जाएगी तो साथ वह धौरी गाय जरूर लेती जाएगी । नहीं, और दूसरे दिन एक अहीर के मारफत रूपा ने गाय भेज दी । अहीर से कहा, 'दादा से कह देना, मंगल के दूध पीने के लिए भेजी है ।' होरी भी गाय लेने की फिक्र में था । यों अभी उसे गाय की कोई जल्दी न थी; मगर मंगल यहीं है और बिना दूध के कैसे रह सकता है ! रुपये मिलते ही वह सबसे पहले गाय लेगा । मंगल अब केवल उसका पोता नहीं है, केवल गोबर का बेटा नहीं है, मालती देवी का खिलौना भी है । उसका लालन-पालन उसी तरह का होना चाहिए ।

मगर रुपये कहाँ से आएँ ? संयोग से उसी दिन एक ठेकेदार ने सड़क के लिए गाँव के ऊसर में कंकड़ की खुदाई शुरू की । होरी ने सुना तो चट-पट वहाँ जा पहुँचा, और आठ आने रोज पर खुदाई करने लगा; अगर यह काम दो महीने भी टिक गया तो गाय भर को रुपये मिल जाएँगे । दिनभर लू और धूप में काम करने के बाद वह घर आता तो बिलकुल मरा हुआ; अवसाद का नाम नहीं । उसी उत्साह से दूसरे दिन काम करने जाता । रात को भी खाना खाकर डिब्बी के सामने बैठ जाता और सुतली कातता । कहीं बारह-एक बजे सोने जाता । धनिया भी पगला गई थी, उसे इतनी मेहनत करने से रोकने के बदले खुद उसके साथ सुतली कातती । गाय तो लेनी ही है, रामसेवक के रुपये भी तो अदा करने हैं । गोबर कह गया है उसे बड़ी चिंता है ।

रात के बारह बज गए थे । दोनों बैठे सुतली कात रहे थे । धनिया ने कहा- ''तुम्हें नींद आती हो तो जाके सो रहो । भोरे फिर तो काम करना है ।''

होरी ने आसमान की ओर देखा- ''चला जाऊँगा । अभी तो दस बजे होंगे । तू जा, सो रह ।''

''मैं तो दोपहर को छन-भर पौढ़ रहती हूँ ।''

''मैं भी चबेना करके पेड़ के नीचे सो लेता हूँ ।''

''बड़ी लू लगती होगी ।''

''लू क्या लगेगी ? अच्छी छाँह है ।''

''मैं डरती हूँ, कहीं तुम बीमार न पड़ जाओ ।''

''चल; बीमार वह पड़ते हैं, जिन्हें बीमार पड़ने की फुरसत होती है । यहाँ तो यह धुन है कि अबकी गोबर आए तो रामसेवक के आधे रुपये जमा रहें । कुछ वह भी लाएगा । बस, इस रिन से गला छूट जाए तो दूसरी जिंदगी हो ।'

''गोबर की अबकी बड़ी याद आती है । कितना सुशील हो गया है ।''

''चलती बेर पैरों पर गिर पड़ा ।''

''मंगल वहाँ से आया तो कितना तैयार था । यहाँ आकर दुबला हो गया है ।'' ''वहाँ दूध,मक्खन, क्या नहीं पाता था ? यहाँ रोटी मिल जाए, वही

संभाषणीय

'गोदान' उपन्यास के अंश में वर्णित 'होरी' की समस्याओं पर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

लेखनीय

समाचार पत्र के किसी महत्त्वपूर्ण अंश का लिप्यंतरण एवं अनुवाद कीजिए ।

बहुत है । ठीकेदार से रुपये मिले और गाय लाया ।'' 'होरी बोला ।'

''गाय तो कभी आ गई होती लेकिन तुम जब कहना मानो । अपनी खेती तो सँभाले न सँभलती थी, पुनिया का भार भी अपने सिर ले लिया ।''

''क्या करता, अपना धरम भी तो कुछ है । हीरा ने नालायकी की तो उसके बालबच्चों को सँभालने वाला तो कोई चाहिए ही था । कौन था मेरे सिवा बता ? मैं न मदद करता, तो आज उनकी क्या गति होती, सोच । इतना सब करने पर भी तो मँगरू ने उसपर नालिश कर ही दी ।''

''रुपये गाड़कर रखेगी तो क्या नालिश न होगी ?''

''क्या बकती है । खेती से पेट चल जाए, यही बहुत है । गाड़कर कोई क्या रखेगा !''

✻'हीरा तो जैसे संसार ही से चला गया ।'

'मेरा मन तो कहता है कि वह आवेगा, कभी-न-कभी जरूर ।'

दोनों सोए । होरी अँधेरे मुँह उठा तो देखता है कि हीरा सामने खड़ा है, बाल बढ़े हुए, कपड़े तार-तार, मुँह सूखा हुआ, देह में रक्त और मांस का नाम नहीं, जैसे कद भी छोटा हो गया है । दौड़कर होरी के कदमों में गिरा पड़ा ।

होरी ने उसे छाती से लगाकर कहा-''तुम तो बिलकुल घुल गए हीरा ! कब आए ? आज तुम्हारी बार-बार याद आ रही थी । बीमार हो क्या ?''

आज उसकी आँखों में वह हीरा न था, जिसने उसकी जिंदगी तल्ख कर दी थी; बल्कि वह हीरा था, जो माँ-बाप का छोटा-सा बालक था । बीच के ये पचीस-तीस साल जैसे मिट गए, उनका कोई चिह्न भी नहीं था ।

हीरा ने कुछ जवाब न दिया । खड़ा रो रहा था ।

होरी ने उसका हाथ पकड़कर गद्गद कंठ से कहा- ''क्यों रोते हो भैया, आदमी से भूलचूक होती ही है । कहाँ रहा इतने दिन ?''✻

हीरा कातर स्वर में बोला-''कहाँ बताऊँ दादा ! बस, यही समझ लो कि तुम्हारे दर्शन बदे थे, बच गया । हत्या सिर पर सवार थी । ऐसा लगता था कि वह गऊ मेरे सामने खड़ी है; हरदम, सोते-जगते, कभी आँखों से ओझल न होती । मैं पागल हो गया और पाँच साल पागलखाने में रहा । आज वहाँ से निकले छह महीने हुए । माँगता-खाता फिरता रहा । यहाँ आने की हिम्मत न पड़ती थी । संसार को कौन मुँह दिखाऊँगा ? कलेजा मजबूत करके चला आया । तुमने बाल-बच्चों को... ' ''तुमसे जीते-जी उरिन न हूँगा दादा !''

''मैं कोई गैर थोड़े हूँ भैया ।''

होरी प्रसन्न था । जीवन के सारे संकट, सारी निराशाएँ मानो उसके चरणों पर लोट रही थीं । कौन कहता है, जीवन-संग्राम में वह हारा है । यह उल्लास, यह गर्व, यह पुलक क्या हार के लक्षण हैं ? इन्हीं हारों में उसकी विजय है । उसके टूटे-फूटे अस्त्र उसकी विजय पताकाएँ हैं । उसकी छाती फूल उठी है, मुख पर तेज आ गया है । हीरा की कृतज्ञता में उसके जीवन की सारी सफलता

पठनीय

किसी संवाद के केंद्रीय विचार को समझते हुए मुखर एवं मौन वाचन कीजिए ।

सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए : -

(१) संजाल

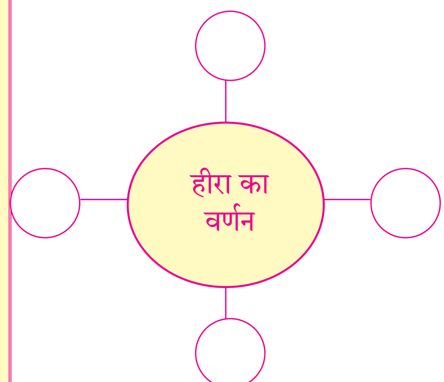

(२) वाक्य पूर्ण कीजिए :

(क) होरी की आँखों में वह हीरा था जो ....

(ख) होरी अँधेरे मुँह उठा तो देखता है कि ....

(३) परिच्छेद में आए हुए शरीर के किसी एक अंग पर प्रयुक्त मुहावरा लिखिए ।

(४) 'आदमी से भूलचूक होती ही है', इसपर अपने विचार लिखिए ।

श्रवणीय

यू-ट्यूब पर 'कोळी गीत' सुनिए और उसकी लय-ताल के साथ प्रस्तुति कीजिए ।

मूर्तिमान हो गई है । उसके बखार सौ-दो-सौ मन अनाज भरा होता उसकी हाँड़ी में हजार-पाँच सौ गड़े होते, पर उससे यह स्वर्ग का सुख क्या मिल सकता था ?

हीरा ने उसे सिर से पाँव तक देखकर कहा-''तुम भी तो बहुत दुबले हो गए दादा !'' होरी ने हँसकर कहा-'तो क्या यह मेरे मोटे होने के दिन हैं ? मोटे वह होते हैं, जिन्हें न रिन का सोच होता है, न इज्जत का । इस जमाने में मोटा होना बेहयाई है । सौ को दुबला करके तब एक मोटा होता है । ऐसे मोटेपन में क्या सुख ? सुख तो जब है कि सभी मोटे हों । सोभा से भेंट हुई ?'

'उससे तो रात ही भेंट हो गई थी । तुमने तो अपनों को भी पाला, जो तुमसे बैर करते थे, उनको भी पाला और अपना मरजाद बनाए बैठे हो ! उसने तो खेती-बारी सब बेच-बाच डाली और अब भगवान ही जाने, उसका निबाह कैसे होगा ?''

आज होरी खुदाई करने चला तो देह भारी थी । रात की थकन दूर न हो पाई थी; पर उसके कदम तेज थे और चाल में निर्द्वंदता की अकड़ थी ।

आज दस बजे ही से लू चलने लगी और दोपहर होते-होते तो आग बरस रही थी । होरी कंकड़ के झौवे उठा-उठाकर खदान से सड़क पर लाता था और गाड़ी पर लादता था । जब दोपहर की छुट्टी हुई तो वह बेदम हो गया था । ऐसी थकन उसे कभी न हुई थी । उसके पाँव तक न उठते थे । देह भीतर से झुलसी जा रही थी । उसने न स्नान ही किया न चबेना । उसी थकन में अपना अँगोछा बिछाकर एक पेड़ के नीचे सो रहा मगर प्यास के मारे कंठ सूखा जाता है । खाली पेट पानी पीना ठीक नहीं । उसने प्यास को रोकने की चेष्टा की लेकिन प्रतिक्षण भीतर की दाह बढ़ती जाती थी । न रहा गया । एक मजदूर ने बाल्टी भर रखी थी और चबेना कर रहा था । होरी ने उठकर एक लोटा पानी खींचकर पिया और फिर आकर लेट रहा; मगर आधा घंटे में उसे कै हो गई और चेहरे पर मुर्दनी-सी छा गई ।

उस मजदूर ने कहा- ''कैसा जी है होरी भैया ?''

होरी के सिर में चक्कर आ रहा था । बोला-''कुछ नहीं, अच्छा हूँ ।''

यह कहते-कहते उसे फिर कै हुई और हाथ-पाँव ठंडे होने लगे । यह सिर में चक्कर क्यों आ रहा है ? आँखों के सामने कैसा अँधेरा छाया जाता है । उसकी आँखें बंद हो गईं और जीवन की सारी स्मृतियाँ सजीव हो-होकर हृदय-पट पर आने लगीं; लेकिन बे क्रम, आगे की पीछे, पीछे की आगे, स्वप्न-चित्रों की भाँति बेमेल, विकृत और असबंद्ध, वह सुखद बालपन आया, जब वह गुल्लियाँ खेलता था और माँ की गोद में सोता था । फिर देखा, जैसे गोबर आया है और उसके पैरों पर गिर रहा है । फिर दृश्य बदला, धनिया दुलहिन बनी हुई, लाल चुँदरी पहने उसको भोजन करा रही थी । फिर एक गाय का चित्र सामने आया, बिलकुल कामधेनु-सी । वह उसका दूध मंगल को पिला रहा था कि गाय एक देवी बन गई और...

मौलिक सृजन

'होरी के जीवन में 'परिवार और गाय' दो ही शीर्षस्थ थे,' सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।

hindisamay.com/contentDetail.aspx?id=244&pageno=1

उसी मजदूर ने फिर पुकारा-''दोपहरी ढल गई होरी, चलो झौवा उठाओ ।''

होरी कुछ न बोला । उसके प्राण तो न जाने किस-किस लोक में उड़ रहे थे । उसकी देह जल रही थी, हाथ-पाँव ठंडे हो रहे थे । लू लग गई थी ।

उसके घर आदमी दौड़ाया गया । एक घंटा में धनिया दौड़ी हुई आ पहुँची । शोभा और हीरा पीछे-पीछे खटोले की डोली बनाकर ला रहे थे ।

धनिया ने होरी की देह छुई तो उसका कलेजा सन से हो गया । मुख कांतिहीन हो गया था । काँपती हुई आवाज से बोली- 'कैसा जी है तुम्हारा ?' होरी ने अस्थिर आँखों से देखा और बोला-''तुम आ गए गोबर ? मैंने मंगल के लिए गाय ले ली है । वह खड़ी है, देखो ।''

उमड़ते हुए आँसुओं को रोककर बोली-''मेरी ओर देखो, मैं हूँ, क्या मुझे नहीं पहचानते ?'' होरी की चेतना लौटी । मृत्यु समीप आ गई थी; आग दहकने वाली थी । धुआँ शांत हो गया था । धनिया को दीन आँखों से देखा, कोनों से आँसू की दो बूँदें ढुलक पड़ीं । क्षीण स्वर में बोला-'मेरा कहा-सुना माफ करना धनिया ! अब जाता हूँ । गाय की लालसा मन में ही रह गई । अब तो यहाँ के रुपये क्रिया-करम में जाएँगे । रो मत धनिया, अब कब तक जिलाएगी ? सब दुर्दशा तो हो गई । अब मरने दे ।'' और उसकी आँखें फिर बंद हो गईं । उसी वक्त हीरा और शोभा डोली लेकर पहुँच गए । होरी को उठाकर डोली में लिटाया और गाँव की ओर चले ।

गाँव में यह खबर हवा की तरह फैल गई । सारा गाँव जमा हो गया । होरी खाट पर पड़ा शायद सब-कुछ समझता था; पर जबान बंद हो गई थी । हाँ, उसकी आँखों से बहते आँसू बतला रहे थे कि मोह का बंधन तोड़ना कितना कठिन हो रहा है । जो कुछ अपने से नहीं बन पड़ा उसी के दुख का नाम मोह है । पाले हुए कर्तव्य और निपटाए हुए कामों का क्या मोह तो उन अनाथों को छोड़ जाने में है, जिसके साथ हम अपना कर्तव्य न निभा सके; उन अधूरे मंसूबों में है, जिन्हें हम न पूरा कर सके ।

मगर सब कुछ समझकर भी धनिया आशा की मिटती हुई छाया को पकड़े हुए थी । आँखों से आँसू गिर रहे थे, मगर यंत्र की भाँति दौड़-दौड़कर कभी आम भूनकर पना बनाती, कभी होरी की देह में गेहूँ की भूसी की मालिश करती । क्या करे, पैसे नहीं हैं, नहीं किसी को भेजकर डॉक्टर बुलाती ।

हीरा ने रोते हुए कहा-''भाभी, दिल कड़ा करो, गोदान करा दो, दादा चले ।''

धनिया ने उसकी ओर तिरस्कार की आँखों से देखा । अब वह दिल को और कितना कठोर करे ? अपने पति के प्रति उसका जो कर्म है, क्या वह उसको बताना पड़ेगा ? जो जीवन का संगी था, उसके नाम को रोना ही

आसपास

किसी विषय से संबंधित जानकारी का प्रस्तुतीकरण करने हेतु पी.पी.टी. के मुद्दे बनाइए ।

क्या उसका धर्म है ?

और कई आवाजें आईं–''हाँ, गो–दान करा दो, अब यही समय है ।''

धनिया यंत्र की भाँति उठी, आज जो सुतली बेची थी, उसके बीस आने पैसे लाई और पति के ठंडे हाथ में रखकर सामने खड़े दातादीन से बोली– ''महाराज, घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा । यही पैसे हैं, यहीं इनका गोदान है और पछाड़ खाकर गिर पड़ी ।''

—०—

('गोदान' से)

पाठ से आगे

ऑनलाइन सुविधा का उपयोग करते हुए बस/रेल टिकट का आरक्षण कीजिए ।

शब्द संसार

बखार (पुं.सं) = वह गोल घेरा या बड़ा पात्र जिसमें किसान अन्न रखते हैं।
सिवान (पुं.सं.) = हद, सीमा
साधें (स्त्री.सं.) = अभिलाषा, उत्कंठा
रेवड़ (पुं.सं.) = भेड़, बकरियों आदि का झुंड
ऊसर (पुं.सं.) = अनुपजाऊ जमीन
नालिश (पुं.सं.) = फरियाद, अभियोग
पुलक (पुं.सं.) = रोमांच
झौवे (पुं.सं.) = अरहर की बनी हुई दौरी
पौढ़ना (क्रि.) = लेटना
चबेना (पुं.सं.) = चर्वण करने के अनाज

मुहावरा :

पछाड़ खाकर गिरना = मूर्छित होकर गिरना

पाठ के आँगन में

सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए : –

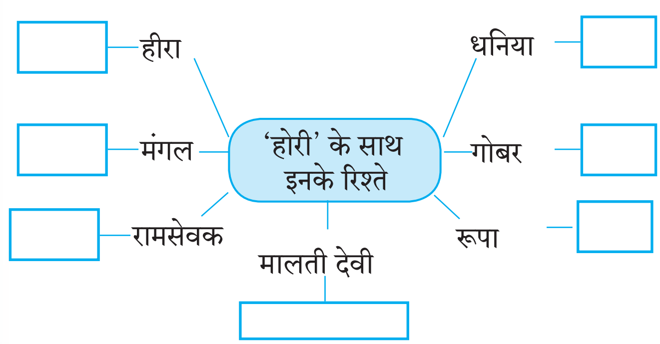

(२)

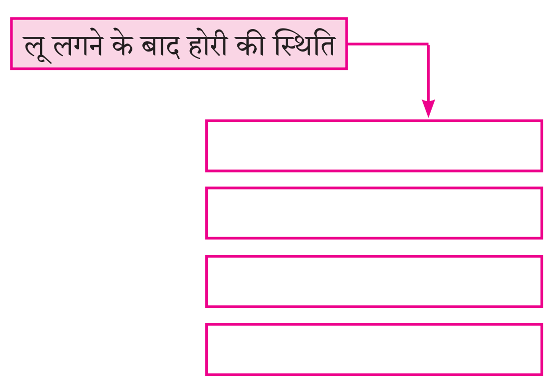

(३) (क) कहीं, कोई इन सर्वनामों का उपयोग करके अर्थपूर्ण वाक्य तैयार कीजिए ।

(ख) पाठ में प्रयुक्त मुहावरे ढूँढ़कर उनका अर्थ लिखिए तथा वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

(४) देहदान की संकल्पना स्पष्ट करते हुए उसका महत्त्व बताइए ।

रचना बोध

....
....
....

भाषा बिंदु

✲ निम्न संवाद को पढ़िए, समझिए तथा कारक रेखांकित करके उसके चिह्नों के नाम लिखिए :-

जंगल के राजा शेरसिंह टेलीविजन पर समाचार देख रहे थे, कई समाचार बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं के बारे में थे, वे इसके समाधान के लिए कुछ करना चाहते थे -

शेरसिंह - जंबो हाथी को बुलाया जाए ।

सेवक - जो आज्ञा महाराज ।

जंबो - प्रणाम महाराज, आपने मुझे याद किया ।

शेरसिंह - जंगल में सड़क दुर्घटनाएँ बहुत बढ़ गई हैं । लोग नियमों से दूर जा रहे हैं । इससे मैं बहुत दुखी हूँ ।

जंबो - चिंता न करें, मैं इस मामले में आपकी सहायता करूँगा । मुझे रिपोर्ट बनाने के लिए समय दें ।

शेरसिंह - जंबो ! तुम पूरा समय लो ।

(कुछ दिनों बाद रिपोर्ट लेकर जंबो पहुँचा ।)

जंबो - महाराज, जंगल निवासी ट्रैफिक के नियमों का पालन नहीं करते हैं ।

शेरसिंह - ठीक है, हम नागरिकों से ट्रैफिक के नियमों का सख्ती से पालन करवाएँगे ।

जंबो - दोपहिया चलाने वालों को हेल्मेट पहनना और कार चलाने वालों को सीट बेल्ट बांधना अनिवार्य कर सकते हैं ।

शेरसिंह - विद्‌यालयों, अस्पतालों और पार्किंगवाले स्थानों के पास गति सीमा को बताने वाले चिह्नों को क्यों न लगा दिया जाए ?

जंबो - महाराज, सायकिल चलाने वालों और पैदल चलने वालों के लिए आप एक अलग से रास्ता बनवा सकते हैं ।

शेरसिंह - तुम्हारी सलाह के लिए तुम्हें धन्यवाद ।

क्र.	कारक	कारक चिह्न	क्र.	कारक	कारक चिह्न

४. निर्मल जिंदगी

पूरक पठन

अनूदित

अनुवादक-रमेश यादव

(पारंपारिक वाद्य के साथ पाँच-छह कलाकार मिलकर भारूड़ गाते हैं)

सभी एक साथ : सूरज उगा, प्रकाश आया, आड़ा डगर
आड़ा डगर और उसको मेरा नमस्कार ।

सूत्रधार : अरे... रे... रे... बिच्छू ने काटा (डसा) दैया रे दैया... बिच्छू ने काटा, अब मैं क्या करूँ .... बिच्छू ने काटा अब मैं क्या करूँ ... बिच्छू ने काटा, मैया रे मैया... बिच्छू ने काटा....

कोरस : अरे बिच्छू ने काटा, रे बिच्छू ने काटा, रे बिच्छू ने काटा..., हो !

साथी : महाराज, महाराज ये एकाएक क्या हुआ ?

सूत्रधार : काम, क्रोध, मद, मोह, गंदगी के बिच्छू ने काटा ऽ ऽ ऽ ऽ तम पसीने से अंग-अंग लथपथ, जान खा रही झटपट, मनुष्य का डंक अति दारुण

साथी : अच्छा-अच्छा अति ''दारू'' न

सूत्रधार : अरे दारू और डंक का यहाँ क्या संबंध भाई ... ? दारुण मतलब भयंकर

साथी : भयंकर मतलब तो अभ्यंकर क्या ,

सूत्रधार : अभ्यंकर का कोई संबंध नहीं, अरे अभ्यंकर नहीं, भयंकर मतलब अति भयंकर

साथी : अति भंयकर माने ,

सूत्रधार : खूब भयंकर

साथी : और खूब भयंकर माने ?

सूत्रधार : बड़ा भयंकर

साथी : और बड़ा भयंकर माने

सूत्रधार : तुम्हारे दांत तोड़ने के बाद जितनी पीड़ा होगी उतना भयंकर

साथी : बाप रे... !

सूत्रधार : मनुष्य डंक अति दारुण, डस लिया समाज को उसने

साथी : उसने मतलब उस निचले मोहल्ले के गंगी ने ?

सूत्रधार : गंगी का यहाँ क्या संबंध !

साथी : तो क्या रंगी ने ?

सूत्रधार : किसी का यहाँ कोई संबंध नहीं, उसने मतलब... उस इंगली ने

साथी : महाराज, महाराज इंगली मतलब ?

सूत्रधार : बड़े बिच्छू का जहर !

परिचय

जन्म : ९ अक्टूबर १९६२ मुंबई (महाराष्ट्र)

परिचय : आपकी कहानियाँ, कविताएँ, समीक्षा, लेख, साक्षात्कार इत्यादि विविध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं । आपने अनुवाद, बालसाहित्य और मराठी लोक साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है ।

प्रमुख कृतियाँ : लोकरंग-महाराष्ट्र की लोक कलाएँ एवं संस्कृति-एक परिचय, शाहिरीनामा-शाहिरी महाराष्ट्र की लोक गायन परंपरा, महक फूल-सा मुसकाता चल (बालकविता संग्रह) बिंब-प्रतिबिंब, वैकल्य (अनूदित उपन्यास) कविता की पाठशाला (बालसाहित्य) थिरकणारे पंख (अनुवाद) आदि ।

पद्‍य संबंधी

भारूड़ : भारूड़ मराठी साहित्य की एक विधा है । इसके द्‍वारा धार्मिक और नैतिक मूल्यों की बातें सामान्य लोगों तक पहुँचाए जाती है । मराठी की यह साहित्यिक विधा प्रथमत: हिंदी में प्रस्तुत की जा रही है । संत एकनाथ जी के भारुड़ पर आधारित इस रचना का आप आनंद उठाएँ ।

प्रस्तुत भारुड़ में मनुष्य को षड्‌विकारों से दूर रहने का संदेश दिया है । मनुष्य को स्वस्थ जीवन और समाज के लिए बुरी आदतों को त्यागने के लिए प्रेरित किया गया है ।

साथी : कद से कितना बड़ा ?

सूत्रधार : तेरे जितना ... मनुष्य इंगली अति दारुण, डस लिया समाज को उसने, पूरे शरीर और समाज मन में वेदना उसकी ....

साथी : बिच्छू के जहर पर उपाय क्या महाराज ?

सूत्रधार : धुम्रपान से बचो, गंदगी दूर भगाओ, स्वच्छता अपनाओ, अपना तन-मन, पास-पड़ोस और परिसर को साफ सुथरा ऽऽऽऽ रखो, हटेगा कचरा तो मिटेगी गंदगी,बनेगा सुंदर वातावरण, निर्मल जिंदगी, तमाखू खाना छोड़ो, तमो गुण छोड़ो,

साथी : क्या बोला ! क्या बोला ! इस बिच्छू के जहर पर उपाय ... तमो गुण छोड़ो ? तमो गुण मतलब क्या महाराज ?

सूत्रधार : घमंड से यदि छाती का गुब्बारा फूल गया हो तो आलपिन लगाकर थोड़ी-सी हवा कम करो, सत्व गुणों का तिलक करो, स्वछता के मंत्र का जाप करो, फिर देखो बिच्छू का जहर उतरेगा झर-झर, झर-झर ऽऽऽऽ

सूत्रधार : सत्य का उतारा लेकर

साथी : अरे लाया क्या ?

सूत्रधार : सत्य का उतारा लेकर, दूर किया सारा तमो गुण, समय आ गया सुधरो, सुधरो, सुधारो भूल ऽऽऽऽ रह गई थोड़ी-सी जो कसर तो शांत किया जनार्दन ने पुंडलीक वरदा, हरि विठ्ठल ऽऽऽऽ श्री ज्ञानदेव, तुकाराम पंढरीनाथ महाराज की जय !!

—०—

पठनीय

'महाराष्ट्र का लोकसाहित्य' से संबंधित पुस्तकें अंतरजाल की सहायता से पढ़िए ।

लेखनीय

किसी जीवनमूल्य के विषय पर संवाद लेखन कीजिए ।

संभाषणीय

यह भारूड़ शालेय समारोह में प्रस्तुत कीजिए ।

आसपास

अंधविश्वास से दूर रहने का संदेश देने वाले घोषवाक्य तैयार कीजिए ।

श्रवणीय

संत एकनाथ महाराज का कोई भारूड़ यू ट्यूब पर सुनिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) आकृति :

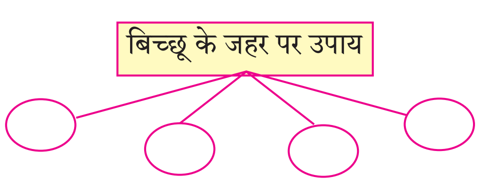

(ख) भारूड़ में आए संतों के नाम ।

पाठ से आगे

'महाराष्ट्र की लोकधारा' यह मंचीय कार्यक्रम देखिए ।

रचना बोध

....

....

....

५. चेतना

– डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

पठनीय

'वसुधैव कुटुंबकम्' विषय पर समूह में चर्चा कीजिए और प्रभावशाली मुद्दों को सुनाइए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● इस सुवचन का अर्थ बताने के लिए कहें । ● आज के युग में विश्व शांति की अनिवार्यता के बारे में पूछें । ● पूरे विश्व में एकता लाने के लिए वे क्या कर सकते हैं, चर्चा कराएँ ।

अरुण : इस विशाल वट वृक्ष के नीचे बैठकर कितनी गहन अनुभूति होती है । त्रिपुरा के शिल्पकारों ने बाँस की कितनी सुंदर कुटी बनाई है !

डॉ. कलाम : मैंने इसे अमर कुटी का नाम दिया है ।

अरुण : अमर कुटी ही क्यों ?

डॉ. कलाम : यहाँ बैठकर मुझे कुछ ऐसी अनुभूति होती है, जो अमर है। यहाँ बैठकर संसार की सारी घटनाएँ किसी अनदेखी शक्ति की लीला भर नजर आती हैं । मन, आकाश और अंतरिक्ष का विन्यास एक जैसे लगते हैं ।

अरुण : जी, लेकिन मन का संसार तो बहुत ही अव्यस्थित और बड़ा भ्रांति भरा है । भावों, अनुभूतियों और कल्पनाओं के कैसे-कैसे बहुरंगी स्वरूप देखने को मिलते हैं-कभी यह तो कभी वह इसके विपरीत, यह संसार तो बड़े व्यवस्थित रूप से संचालित होता है ।

डॉ. कलाम : यह संपूर्ण ब्रह्मांड तो निश्चित व्यवस्था के अंतर्गत निरंतर गतिशील रहता है परंतु संसार के विषय में तो ऐसा नहीं है । यहाँ तो बड़ी अफरा-तफरी है । जिस प्रकार सृष्टि के बाह्य संसार के संचालन के लिए कुछ निश्चित नियम हैं, जैसे-गुरुत्व का नियम और वायुगतिकी का नियम; ठीक उसी प्रकार मन के आंतरिक संसार के संचालन के लिए भी निर्धारित नियम हैं । इन नियमों की समझ से जीवन के अनुभवों को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है । एक बार अपनी आत्मा के संपर्क में आ जाने पर मनुष्य मानो इस ब्रह्मांड के केंद्रबिंदु के रूप में क्रियाशील हो जाता है ।

अरुण : संपूर्ण ब्रह्मांड का केंद्रबिंदु बनना तो सचमुच एक महान अनुभूति है लेकिन इसका अभिप्राय क्या है?

डॉ. कलाम : ब्रह्मांड के केंद्रबिंदु के रूप में क्रियाशील होने पर आप यह अनुभव कर सकते हैं कि यहाँ संयोगजन्य कुछ भी नहीं है । हम सभी एक-दूसरे से संबद्ध हैं । यहाँ एक

परिचय

जन्म : १५ अक्टूबर १९३१ धनुषकोडी, रामेश्वरम, (तमिलनाडु)

मृत्यु : २७ जुलाई २०१५ शिलांग, (मेघालय)

परिचय : भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति, प्रतिष्ठित वैज्ञानिक, अभियंता और भारतरत्न डॉ. ए. पी. जे. कलाम 'मिसाइल मैन' के नाम से प्रख्यात थे ।

प्रमुख कृतियाँ : 'इंडिया माय ड्रीम, एन विजनिंग एन एंपावर्ड नेशन : टेक्नालॉजी फॉर सोसायटल ट्रांसफार्मेशन' (चिंतन परक रचनाएँ),
विंग्स ऑफ फायर, साइंटिस्ट्ट प्रेसिडेंट (आत्मकथात्मक रचनाएँ)

गद्‌य संबंधी

साक्षात्कार : दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच बातचीत एवं विचारों का आदान-प्रदान साक्षात्कार कहलाता है । इसमें एक या कई व्यक्ति किसी एक व्यक्ति से प्रश्न पूछते हैं और वह व्यक्ति इन प्रश्नों के उत्तर देता है या इनपर अपनी राय व्यक्त करता है ।

प्रस्तुत साक्षात्कार में डॉ. कलाम जी ने संसार, ब्रह्मांड, मानवता, मैं की वास्तविकता, आत्मा आदि विविध विषयों पर बड़ी ही गहराई से अपने विचार व्यक्त किए हैं ।

जीव को दूसरे जीव से उसी प्रकार अलग नहीं किया जा सकता है, जैसे हवा से झोंके को ।

अरुण : कितना सुंदर विचार है-शाश्वत अंतर्संबद्‌धता ! जन्म से भी पहले घटित हुई घटनाओं का प्रभाव अब भी आपके ऊपर है और जो लोग आपसे पहले हुए हैं, वे भी किसी-न-किसी रूप में आपके साथ हैं ।

डॉ. कलाम : इस शाश्वत अंतर्संबद्‌धता का अर्थ है-जहाँ एक का अंत होता है वहीं से दूसरा आरंभ भी होता है ।
केवल उस समय हमें इसका ज्ञान नहीं होता । सभी प्राणियों में कुछ गहन और व्यापक अर्थ निहित होता है, जिससे प्रायः हम अनभिज्ञ होते हैं ।

अरुण : जैसे सूँड़ी (Caterpiller) को प्राण त्यागते समय तितली के रूप में अपने पुनर्जन्म का ज्ञान नहीं होता है ।

डॉ. कलाम : इसक बोध होना कि हम सभी एक भव्य आकृति का हिस्सा हैं, बड़ा जरूरी है । यह ब्रह्मांड किसी निश्चित प्रयोजन के बिना न तो बना है, न ही चल रहा है । हम सभी को इस महानाटक में एक पात्र की भूमिका में स्वयं अपना-अपना कार्य करने में विश्वास रखना होगा ।

अरुण : बड़ा कठिन है । यहाँ चारों ओर इतना दुःख-दर्द और कठिनाइयाँ हैं । कैसे किसी को यह एहसास हो पाएगा कि वे एक महानाटक के पात्र के रूप में अपनी भूमिका अदा कर रहे हैं ?

डॉ. कलाम : यथार्थ के संबंध में निजी स्वीकृति अथवा अस्वीकृति का कोई महत्व नहीं होता । यह विवश मानसिकता के चलते किए गए दंभ प्रदर्शन की तरह निरर्थक है । दुनिया में दुःख, दर्द और कठिनाइयों के साथ-साथ कितना प्रेम, सौंदर्य और आनंद भी तो है । जब हम अपने चारों ओर व्याप्त सौंदर्य और आनंद की ओर से अपनी आँखें बंद कर लेते हैं तो अंततः हम कष्ट ही भोगते हैं । मनुष्य जीवन एक साहस भरी अस्मिता है, जिसकी अनुभूति पाने के लिए हमें अपने जीवन के प्रति पारदर्शी बनना ही होगा ।

अरुण : तो लोग ऐसा करते क्यों नहीं हैं ?

डॉ. कलाम : क्योंकि हम भ्रमवश स्वयं को ही अपने जीवन का केंद्र मान बैठते हैं । ऐसी स्थिति में हम सदैव इस उम्मीद में रहते हैं कि दुनिया-समाज में होने वाला प्रत्येक कार्य हमारे अनुकूल और हमारे लाभ के लिए ही हो ।

संभाषणीय

डॉ. जयंत नारळीकर जी द्‌वारा लिखित विज्ञान कथाओं को पढ़िए और इसपर चर्चा कीजिए ।

मौलिक सृजन

विज्ञान के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों का विवरण देते हुए नकारात्मक प्रभावों से बचने के लिए सुझाव दीजिए ।

श्रवणीय

यू ट्यूब पर डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम के भाषण सुनिए ।

मैं हूँ यहाँ

https://youtu.be/obWHem4K03w

अरुण : ऐसी उम्मीद करना तो मनुष्य की स्वाभाविक सोच है ।

डॉ. कलाम : इसे सामान्य तो कहा जा सकता है, पर किसी भी प्रकार से स्वाभाविक नहीं कहा जा सकता । मनुष्य जन्म के समय दुनिया में अपने लिए क्या लेकर आता है ? क्या हम सभी इस दुनिया में खाली हाथ, निर्वस्त्र अवस्था में रोते हुए नहीं आते ?

अरुण : ✻ जी, लेकिन हम अपने आनुवांशिक गुण-धर्म तो लेकर आते हैं ।

डॉ. कलाम : लाता कौन है ? वह तो स्वयं आते हैं । यही तो मनुष्य के जीवन, मानवता का तत्व है । दुनिया में आने पर जल्दी ही इस तत्व को एक नाम देकर उम्मीदों और जिम्मेदारियों तथा मोह-माया के जाल में जकड़ दिया जाता है ।

अरुण : जी हाँ ! इस प्रकार मानवता का अस्तित्व एक व्यक्ति के रूप में उपस्थित होता है । प्रत्येक शिशु के अंदर से एक अद्‍वितीय अस्मित का प्रादुर्भाव होता है ।

डॉ. कलाम : क्या अद्‍वितीय ? वही घिसे-पिटे खाँचे-मुखौटे ! या कहें कि शायद मूलभूत मानवता से टूटे, भटकते पिंजर । मानवता के मूल से मानव जीवन यह भटकाव ही जीवन के दु:खों और कठिनाइयों का प्रमुख कारण है । ✻

अरुण : हम अपने मूल-तत्व से किस प्रकार संबंध स्थापित कर सकते हैं ?

डॉ. कलाम : हम अपनी वाणी, विचारों, भावनाओं और कार्यों को एक लय में बद्‍ध कर, ईश्वर की इच्छा के साथ उसकी ताल मिलाकर ऐसा कर सकते हैं ।

अरुण : यह दुष्कर तो नहीं होना चाहिए !

डॉ. कलाम : मेरा विश्वास है कि मेरा वास्तविक अस्तित्व मेरा मूल तत्त्व है । मेरी पहचान तो बस एक नामपट्‍टिका है, जिसे मुझ पर लगा दिया गया है । कभी-कभी तो यह बस एक मुखौटा भर रह जाता है ।

अरुण : तो इस 'मैं' की हकीकत क्या है ?

डॉ. कलाम : वास्तव में 'आत्मा' शब्द ही मुझे मनुष्य के वास्तविक अस्तित्व की सर्वोत्तम व्याख्या प्रतीत होता है । इस नाम से संबंध जुड़ते हैं और समाज में अपनी एक पहचान बनती है । यह प्रक्रिया अनवरत रूप से रिश्ते-नातों के ताने-बाने और जीवन के जाल-जंजाल बुनती जाती है ।

अरुण : व्यक्तित्व निश्चय ही सांसारिक है, जिसे भगवान् बुद्‍ध ने 'नाम' और 'रूप' की संज्ञा दी थी ।

✻ सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) आकृति पूर्ण कीजिए :-

दुनिया में आने के बाद मनुष्य इनमें जकड़ा जाता है –

[ ] [ ]

(२) कारण लिखिए :
मनुष्य जीवन में दु:ख और कठिनाइयाँ आना

(३) (क) उपसर्ग तथा प्रत्ययुक्त शब्द लिखिए :
१. उपसर्गयुक्त ______
२. प्रत्यययुक्त ______

(ख) वचन बदलिए ।
(१) कठिनाइयाँ = ...
(२) उम्मीद = ...
(३) एक = ...
(४) व्यक्ति = ...

(४) 'मानवता जीवन का मूल आधार है', स्पष्ट कीजिए ।

आसपास

'एक संवेदनशील युवा नागरिक होने के नाते विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में अपनी भूमिका स्पष्ट कीजिए ।

डॉ. कलाम : ऋषि अष्टावक्र ने अपनी 'अष्टावक्र गीता' में लिखा है-''आप न तो पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु हैं और न ही आकाश हैं । आप स्वयं को बस चेतना की अंतर्वस्तु, इन पाँच तत्वों का साक्षी भर मानें ।''

अरुण : एक साक्षी मात्र ! तो फिर यह चेतना क्या है ? उसका वास कहाँ है ?

डॉ. कलाम : चेतना रचना अथवा निर्माण की वस्तु नहीं है । यह तो शाश्वत है, अनंत है । इसका क्रम सतत और अविच्छिन्न है । यह मन और मस्तिष्क से परे है ।

अरुण : आत्मा के संबंध में 'श्रीमद्‌भगवद्‌गीता' में भी लिखा हुआ है- ''आत्मा अदृश्य, अचिंत्य और निर्विकार है । यह अनंत है और सब में विद्‌यमान है । इसे न शस्त्र वेध सकता है, न अग्नि जला सकती है, न जल गीला कर सकता है और न वायु सुखा सकती है । यह अजर और अमर है ।''

डॉ. कलाम : हाँ, सचमुच । पीढ़ी-दर-पीढ़ी मनुष्य की उत्पत्ति के माध्यम से इस अलौकिक अविच्छिन्नता की धारणा विश्व के सभी प्रमुख धर्मों में समाविष्ट है ।

शब्द संसार

अनभिज्ञ (वि). = अपरिचित, अनजान
दंभ (पुं.सं) = अभिमान
पिंजर (पुं.सं) = हड्डियों की ठठरी
चेतना (स्त्री.सं) = सजगता
शाश्वत (वि.) = जो सदा बना रहे, नित्य
अविच्छिन्न (वि.) = अटूट, लगातार चलने वाला
अचिंत्य (वि.) = जिसका चिंतन न हो सके, कल्पनातीत
प्रतीत (वि.) - ज्ञात, विदित

पाठ के आँगन में

(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) संजाल

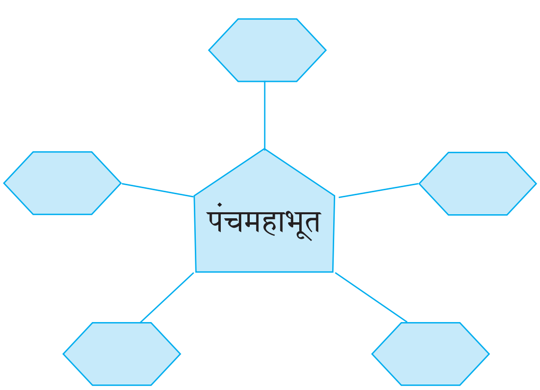

(ख) कृति कीजिए: -

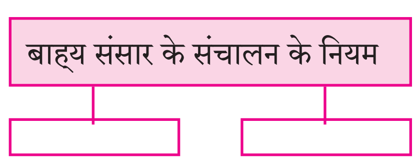

(२) पाठ में आए अव्ययों को ढूँढ़िए और उनके भेद बताकर वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

(३) 'राष्ट्रहित में आपका योगदान', इस विषय पर विचार लिखिए ।

पाठ से आगे

'वैज्ञानिकता की दौड़ में बिखरते हुए मानवीय रिश्ते' विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

रचना बोध

....
....
....

भाषा बिंदु

छंदः चौपाई, दोहा, सोरठा पढ़िए और समझिए :–

छंद

- अक्षरों की संख्या
- मात्रा गणना
- यति–गति से सबद्ध विशिष्ट नियमों से नियोजित पद्‍य–रचना ।

उदा.

बहु धनुहीं तोरी लरिकाईं । कबहुँ न यसि रिसि कीन्हि गुसाईं ।।
यहि धनु पर ममता केहि हेतू । सुनि रिसाइ बोले वृषकेतू ।।

चौपाई

- मात्रिक समछंद
- प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ
- चरण के अंत में जगण (ISI) और नगण (III) का आना वर्जित ।
- तुक पहले की–दूसरे से तीसरे की–चौथे से ।
- गति प्रत्येक चरण के अंत में ।

उदा.

नित नूतन मंगल पुर माहीं । निमिष सरिस जामिनि जाही ।।
बड़े भोर भूपतिमनि जागे । जाचक गन गुन गावन लागे ।

दोहा

- अद्‌र्ध सममात्रिक छंद
- चार चरण
- पहले–तीसरे चरण में १३–१३ मात्राएँ ।
- दूसरे –चौथे में ११–११ मात्राएँ
- पहल–तीसरे के प्रारंभ में जगण नहीं
- दूसरे –चौथे के अंत में गुरु और लघु

उदा.

श्री गुरु चरण सरोज रज,
नित मन मुकुर सुधार ।
बरनौ रघुवर विमल जस,
दो दायक फल चार ।।

सोरठा

- अद्‌र्ध सममात्रिक छंद
- यह दोहे का उलटा होता है ।
- विषम चरणों में ११ मात्राएँ
- सम चरणों में १३ मात्राएँ
- तुक प्रथम और तृतीय चरण में ।

उदा.

निज मन मुकुर सुधार, श्री गुरु चरण सरोज रज ।
दो दायक फल चार, बरनौ रघुवर विमल जस ।।

६. नवनीत

– संत तुकाराम

आसपास

महाराष्ट्र का प्रसिद्‌ध 'पालखी सोहळा' (पालखी उत्सव) यू ट्यूब पर देखिए और उसका वर्णन कीजिए ।

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

- 'पालखी सोहळा' देखने के लिए प्रेरित करें । ● किसी दृश्य का वर्णन करने के लिए कहें ।
- 'पालखी सोहळा' पर कक्षा में चर्चा कराएँ ।

तुकादास राम का, मन में एकहि भाव ।
तो न पालटू आवे, येही तन जाय ।।१।।
तुका रामसूं चिता बाँध राखूं, तैसा आपनी हात ।
घेनु बदरा छोर जावे, प्रेम न छुटे सात ।।२।।
चित सुंचित जब मिले, तब तन थंडा होय ।
तुका मिलना जिन्ह सुं, ऐसा बिरला कोय ।।३।।
चित्त मिले तो सब मिले, नहिं तो फुकट संग ।
पानी पथर एक ही ठोर कोर न भीजे अंग ।।४।।
तुका संगत तिन से कहिए, जिन से सुख दुनाए ।
दुर्जन तेरा तू काला, थीतो प्रेम घटाए ।।५।।
तुका मिलना तो भला, मन सूं मन मिल जाय ।
उपर उपर मीटा घासनी, उन को को न बराय ।।६।।
तुका कुटुंब छोरे रे लड़के, जोरो सिर मुंडाव ।
जब ते इच्छा नहीं मुई, तब तूँ किया काय ।।७।।
तुका इच्छा मीट नहीं तो, काहा करे जटा खाक ।
मथीया गोलाडार दिया तो, नहिं मिले फेरन ताक ।।८।।
ब्रीद मेरे साइयाँ को, तुका चलावे पास ।
सुरा सोहि लरे हम से, छोरे तन की आस ।।९।।
कहे तुका भला भया, हुआ संतन का दास ।
क्या जानू केते मरता, न मिटती मन की आस ।।१०।।
तुका और मिठाई क्या करूँ, पाले विकार पिंड ।
राम कहावे सो भली रूखी, माखन खीर खांड ।।११।।

परिचय

जन्म : खोजकर्ताओं के अनुसार आपका जन्म १६०८ के बीच देहू, पुणे (महाराष्ट्र)
मृत्यु : १६५०
परिचय : संत तुकाराम एक महान संत और कवि थे । वे सत्रहवीं शताब्दी के भारत में चल रहे भक्ति आंदोलन के प्रमुख स्तंभ थे । संत तुकाराम जी धर्म संरक्षण के साथ-साथ पाखंड के खंडन का कार्य निरंतर रूप से किया । आपके 'अभंग' अंग्रेजी भाषा में भी अनूदित हुए हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'अभंग वाणी' आपकी प्रमुख कृति है ।

पद्‌य संबंधी

दोहरे : कबीरदास जी के दोहे भी तुकाराम जी के समय महाराष्ट्र में भली-भाँति प्रचलित थे । तुकाराम जी ने भी कुछ दोहरे बनाए । हिंदी दोहरों की दृष्टि से इनमें छंदोभंग तो पद-पद पर है पर तुकाराम जी की अभंग कविता को किसी भंग का डर ही न था । इन दोहरों का भी आस्वाद लीजिए ।

प्रस्तुत दोहरों में तुकाराम जी ने हमें नीति संबंधी उपदेश दिए हैं । ये चरित्र संवर्धन में सहायक हो सकते हैं ।

शब्द संसार

बिरला (वि.दे.) = अलग, निराला

थीतो (पुं.सं.) = स्थित

मुंडाव (पुं.सं.) = मुंडन

विकार (पुं.सं.) = बिगाड़; दोष, खराबी

कल्पना पल्लवन

'तुकाराम जी संत ही नहीं समाज सुधारक भी थे', इस विषय पर अपने विचार लिखिए ।

लेखनीय

किसी महिला संत का कोई पद सुंदर अक्षरों में भावार्थसहित लिखिए ।

पठनीय

महाराष्ट्र की संत परंपरा पर भाषण पढ़कर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए ।

श्रवणीय

'खरा तो एकचि धर्म' यह कविता सुनिए और सस्वर गायन कीजिए ।

संभाषणीय

निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर विविध संतों के बारे में कक्षा में चर्चा का आयोजन कीजिए ।

- महाराष्ट्र संतों की भूमि
- विविध संतों के नाम और काल
- सुवचन
- ग्रंथ संपदा

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(क) आकृति पूर्ण कीजिए :

शरीर में विकार उत्पन्न करने वाले व्यंजन

- ....
- ....
- ....

(ख) कविता से निम्न शब्दों के अर्थवाले शब्द लिखिए :

- शरीर — ....
- कौन — ....
- निराला — ....
- लंबे बाल — ....

(२) चित्त समाधान के लिए साधना स्पष्ट करने वाली पंक्तियाँ स्पष्ट कीजिए ।

(३) संत तुकाराम के किन्हीं चार दोहरों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए ।

पाठ से आगे

कविवर्य रवींद्रनाथ टैगोर जी की हिंदी में अनूदित कविता पढ़िए ।

रचना बोध

....

....

....

७. सपनों से सत्य की ओर–

पूरक पठन

– *आनंद बनसोडे*

आनंद बनसोडे जी ने अपने बचपन की असफलता के दौर में संसार के सबसे ऊँचे शिखर मांउट एवरेस्ट पर जाने का स्वप्न देखा । 'कठिन से कठिन समय में संकटों पर मात करने वाला इनसान ही जीवन में इतिहास रच पाता है ।एक स्वप्न और उसपर रखी हुई असीम श्रद्‌धा मनुष्य को कई चमत्कारिक तथा आश्चर्यजनक बातें दिखाती है' यही आनंद बनसोडे ने अपने भाषण में बताई है । ''ध्यास हिमशिखरों का–सपनों से सत्य की ओर'' किताब में आनंद ने अपने जीवन की कहानी बताई है । अपने सपनों के दौर में उन्हें अमेरिका, इग्लैंड, जर्मनी, रुस, ऑस्ट्रेलिया और उसके बाद पाँच महाद्‌वीपों की यात्रा करने का अवसर मिला और अंततः संसार के सबसे ऊँचे शिखर माउंट एवरेस्ट पर पहुँचकर के श्री के सामने नतमस्तक होने का सौभाग्य मिला। उन्होंने स्कूल और कॉलेज के बच्चों को प्रेरित करने का आंदोलन शुरू किया है । 'सपनों पर अपार निष्ठा तथा प्रेम संसार के किसी भी मनुष्य को अपने सपने साकार करने से रोक नहीं सकता' यही बात आनंद अपने भाषण में बताते हैं । जगह–जगह जाकर बनसोड़े जी युवकों को मुसीबतों से घबराकर पीछे न हटने की प्रेरणा देते हैं । वे आज नवयुवकों के लिए प्रेरणास्रोत बन गए हैं । उनके भाषण के कुछ अंश प्रस्तुत पाठ में संकलित हैं ।

माँ ने मुझे बचपन में कहा था, ''जिंदगी में भले ही सफलता ना मिले किंतु अच्छा इनसान बनने की हर कोशिश करते रहना.... मुझे तुम पर नाज होगा कि तुमने संसार का सबसे मुश्किल काम किया है ।'' मैं बचपन से सपने देखने वाला लेकिन शरीर से कमजोर और पढ़ाई में भी बिलकुल निकम्मा था । हरदम अकेला रहना पसंद करता था । मेरा जन्म एक अँधेरी झोंपड़ी में हुआ । मेरा बचपन आभावों से भरा था । आज के बच्चों की तरह कई–कई कपड़े, घूमने–फिरने के साधन, खेलने के खिलौने, टी.वी, फोन आदि के बारे में तो हम सोच भी नहीं सकते थे । पूरे परिवार का जीवन कष्टमय था । साइकिल तथा गाड़ी के पहियों की पंक्चर निकालकर मेरे पिता जी अशोक बनसोडे अपनी तीन बेटियों तथा मेरी परवरिश करते थे । पढ़ाई में कमजोर होने के कारण मुझे हर जगह अपमान का सामना करना पड़ता था । इसलिए मेरा एकमात्र शौक था सपने देखना एकांत में सोचता था कि ''मैं संसार के सबसे ऊँचे शिखर पर पहुँच जाऊँ जहाँ मेरा अपमान करने कोई न आए।'' आज के युवक थोड़े से अपमान से हार जाते हैं लेकिन दुनिया का इतिहास यह बताता है कि आजतक दुनिया के बड़े व्यक्तियों ने अपमान सहकर खुद

परिचय

जन्म : २९ जुलै १९८५, सोलापुर (महाराष्ट्र)

परिचय : आनंद बनसोडे जी ने माउंट एवरेस्ट पर विजय प्राप्त करके विश्व के चार महाद्‌वीपों के चार सर्वोच्च शिखरों को फतह कर विश्व में एक कीर्तिमान स्थापित किया है । आपने अनुभवों पर आधारित भाषणों द्‌वारा लोगों को प्रेरित करने का काम किया है ।

प्रमुख कृतियाँ : ध्यास उत्तुंग, हिमशिखरांचा, स्टेपिंग स्टोन टू सक्सेस, स्वप्नातून सत्याकडे, स्वप्नपूर्तिचा खजिना, नालंदा आदि ।

गद्‌य संबंधी

भाषण : समाज को प्रेरित करने के लिए समूह के सामने मौखिक मुखर अभिव्यक्ति को भाषण कहा जाता है ।

प्रस्तुत भाषण में बनसोडे जी ने अपने अनुभवों के आधार पर युवकों को मुसीबतों से हार न मानने तथा जीवन में सदैव संघर्ष के लिए तत्पर रहने हेतु प्रेरित किया है ।

मुकाम हासिल किया है ।

पढ़ाई में बहुत ही कमजोर होने के कारण मै नौवीं कक्षा में अनुत्तीर्ण हो गया कुछ समय पढ़ाई छोड़कर मैंने अपने पिता जी के साथ काम पर जाना शुरू किया परंतु माँ की प्रेरणा से मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सका । मेरी माँ पार्वती ने बचपन से ही बड़े सपने देखने के लिए प्रेरित किया इसलिए मैं दसवीं कक्षा में स्कूल में दूसरे नंबर से उत्तीर्ण हो गया ।

आप के बीच ऐसे कई बच्चे होंगे जो पढ़ाई में कमजोर होने के कारण अपने आप को कमतर समझते हैं । उनको यही लगता होगा कि अब सब कुछ खत्म हो चुका । लेकिन मैं उनको यह बताना चाहता हूँ कि 'आप क्या हैं और कहाँ से आए हो ये बात महत्त्वपूर्ण नहीं है । आपको कहाँ जाना है यह अगर आपको पता होगा तो दुनिया की कोई भी ताकत आपको रोक नहीं सकती । आप अभी क्या हो इसके अलावा जीवन में क्या करना है इस बात पर आपको ध्यान देना है ।''

बारहवीं साइंस उत्तीर्ण होने के बाद मैंने बी. एस.सी. के लिए प्रवेश ले लिया । अब मुझे बचपन से देखा हुआ 'दुनिया की सबसे ऊँची चोटी पर चढ़ने' का सपना पूरा करना था । सोलापुर जैसे सतही प्रदेश में जहाँ गिर्यारोहण का नाम तक नहीं लिया जाता ऐसे स्थान पर रहकर मैं माउँट एवरेस्ट की चढ़ाई की पूछताछ करता था और काफी सारी खोजबीन करने के बाद मेरी भेंट 'पिंपरी-चिंचवड माउंटेनिअरिंग असोसिएशन' के सेक्रेटरी सुरेंद्र शेळके जी से हो गई । पहली ही मुलाकात में मैंने उनसे कहा कि, ''मैं माउँट एवरेस्ट की चढ़ाई करना चाहता हूँ ।''

मैंने अपने गुरु शेळके सर के मार्गदर्शन में माउंट एवरेस्ट शिखर की चढ़ाई के लिए माउंटेनिअरिंग कोर्स की तैयारी शुरू की । मुझे इसके लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ी। बचपन से ही मेरी शारीरिक स्थिति कमजोर थी । इसलिए मुझे अपनी शारीरिक कसरत पर ध्यान देना जरुरी था । मुझे पता था कि मेहनत से ही मैं अपना लक्ष्य पूरा कर सकता हूँ । कोर्स का शुल्क कम होने पर भी मुझे अपनी माँ के गहने गिरवी रखने पड़े । परिवार का विरोध होने के बावजूद मैंने ''नेहरू इन्स्टिट्यूट ऑफ माउंटेनियरिंग'' उत्तरकाशी (उत्तराखंड) से माउंटेनियरिंग का कोर्स पूरा किया । वहाँ मुझे कई नई-नई बातें सीखने का अवसर मिला । एक बार तो कोर्स की तकलीफों से तंग आकर मैंने कोर्स अधूरा छोड़कर वापस लौट आने की बात भी सोची थी । तभी फोन पर मेरी माँ ने मुझसे कहा, 'मुझे अपने दूध पर पूरा भरोसा है । वह इतना कमजोर नहीं पड़ सकता ।' इस बात को सुनकर मुझे बहुत प्रेरणा मिली । तब से अपने जीवन में जब भी पीछे हटने का खयाल मेरे दिमाग में आता है तो मुझे अपनी माँ के वे शब्द याद आते हैं । इसी कोर्स के दौरान मेरी मित्रता एक अमेरिकन नागरिक स्टीव के साथ

श्रवणीय

विश्वास नांगरे पाटील जी के प्रेरणादायी भाषण सुनिए ।

पठनीय

'शेरपा तेनसिंग' की माऊंट एवरेस्ट पर चढ़ाई की कहानी पढ़िए ।

हो गई ।

इस कोर्स में मुझे 'बी' ग्रेड मिल गई । मैं बहुत निराश हो गया । इसी के दौरान मैंने विपश्यना ध्यान साधना का भी अध्ययन किया । दूसरी बार मुझे बेसिक माउंटेनियरिंग कोर्स के लिए जाना था लेकिन मेरे परिवार से ही विरोध हुआ, तब मुझे घर से भागकर कोर्स के लिए जाना पड़ा । ''हिमालयन माउंटेनियरिंग इन्स्टिटयूट', दार्जिलिंग के कोर्स में मुझे'ए' ग्रेड मिल गई । इसी वर्ष उसी इनस्टिट्यूट में एडव्हांस कोर्स को 'बी' ग्रेड मिल गई । बी. एस. सी. के बाद मैने सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय में एम.एससी. पदार्थ विज्ञान के लिए प्रवेश ले लिया । होस्टल में रहते हुए मैंने एक सपना देखा कि मैं एक बहुत ऊँचे शिखर पर चढ़कर तिरंगा फहरा रहा हूँ । इस सपने के कारण मैं फिर एक बार बेचैन हो गया । एम.एससी. की परीक्षा के बाद मैं फिर एडवान्स कोर्स के लिए मनाली चला गया । इस कोर्स के लिए भी मुझे झूठ बोलकर ही जाना पड़ा था । इस कोर्स के बाद तुरंत मैं एक बंगाली टीम के साथ टी-२ शिखर चढ़ाई के लिए निकल पड़ा । लेह-मनाली हाईवे के पाटसिओ से कुछ भीतर की ओर जो वर्जिन शिखर है, उसकी चढ़ाई मुश्किल थी । वर्जिन की चढ़ाई करने के लिए मेरे साथ सात बंगाली और दो शेर्पा जुड़ गए । २०१० में लेह में बादल फट जाने, तथा ३-४ दिन लगातार बारिश होने के कारण मैं और मेरी टीम बेसकैंप से १६००० फीट की उँचाई पर ही अटक गई । बंगाली टीम के लीडर ने वापस लौटने का निर्णय लिया लेकिन मेरा इरादा शिखर चढ़ने का था । कुछ समय के लिए मौसम साफ हो गया और मैं तथा मेरी टीम चढ़ाई के लिए आगे बढ़ गई । टीम के अन्य लोगों ने बहुत थकान के कारण आगे की चढ़ाई बीच में ही छोड़ दी किंतु मैंने दो शेर्पाओं की मदद से वर्जिन शिखर पर पहला कदम रखा । इस उपलब्धि के साथ ''टी-२'' शिखर पर चढ़ने वाला मैं पहला व्यक्ति बन गया । मैं आपको एक बात बताना चाहता हूँ कि सपने नींद में देखे हों या खुली आँखों से उनपर दृढ़ विश्वास रखने से ही सपने साकार होते हैं । अगर आपका अपने सपनों पर विश्वास है तो प्रकृति भी आपकी मदद करती है ।

इस सफलता के बाद मैंने सुरेंद्र शेळके जी की सहायता से एवरेस्ट २०११ की तैयारी का आरंभ किया । इस एवरेस्ट फतह के लिए मुझे २० से २५ लाख रुपयों की आवश्यकता थी, जिसको पूरा करना मेरे परिवार के लिए असंभव था।

मेरा अमेरिकन मित्र स्टीव मेरे सपनों के संघर्ष से अवगत था । उसने मुझे अमेरिका बुलाया । जीवन के बड़े-बड़े फैसले अंतःप्रेरणा से किए जाते हैं । इसी अंतःप्रेरणा से मैंने अमेरिका जाने का फैसला लिया । परिवार का विरोध होने के बावजूद मैं अपने फैसले पर अडिग रहा । आखिर जुलाई

लेखनीय

'हिमालय पर्वत की बर्फ पिघल कर खत्म हो जाए तो' इसपर अपने विचार लिखिए ।

आसपास

'एवरेस्ट' नाम क्यों पड़ा, जानकारी प्राप्त कीजिए ।

२०११ में मेरे अमेरिका जाने का दिन आ गया सुबह तीन बजे मेरे हवाई जहाज ने आकाश में उड़ान भरी । मैंने नीचे देखा । सारी मुंबई निद्रावस्था में थी और मैं जाग रहा था । मेरे सपनों को पंख मिल गए , 'अग्निपंख' । मुझे ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी का कथन याद आया -

'चिंता न करो, क्षोभ ना करो,
खेद न करो, कुछ करने का अवसर मिला है ।
अभी सर्वोत्तम होना शेष है,
अभी सर्वोत्तम किया ही नहीं ।'

अमेरिका में रहते मैंने १५ अगस्त २०११ को कैलिफोर्निया के माउंट शास्ता शिखर की चढ़ाई कर वहाँ मैंने अपने देश का राष्ट्रगीत बजाया । यहीं पर रहकर मैंने स्कूबा डाईविंग भी सीख ली । पैसिफिक महासागर के किनारे बाईक चलाते हुए बाईक एक्सपिडीशन भी कर ली । छह महीने अमेरिका में रहने के बाद मैंने सबसे भावभीनी विदा ली और एवरेस्ट मुहिम के लिए थोड़ी राशि समेटकर मैं भारत लौट आया ।

*भारत में आकर हालात फिर वही थे । एवरेस्ट के लिए जितने पैसे आवश्यक थे उतने मेरे पास नहीं थे । आखिर मेरे पिता जी ने अपना घर गिरवी रखा । माँ और बहनों ने अपने गहने बेच दिए और जीजा जी ने ऋण ले लिया । सब कुछ दाँव पर लगाकर मैं एवरेस्ट चढ़ाई के लिए निकल पड़ा ।

काठमांडू से एवरेस्ट जाते समय 'नामचे बाजार' से एवरेस्ट शिखर का प्रथम दर्शन हुए। मैंने पुणे की टीम 'सागरमाथा गिर्यारोहण संस्था' के साथ इस मुहीम पर था । बहुत जल्द हमने १९००० फीट पर स्थित माउंट आयलैंड शिखर पर चढ़ाई की । इसके बाद हम एवरेस्ट बेसकैंप में पहुँचे । चढ़ाई के पहले पड़ाव पर सागरमाथा संस्था के अध्यक्ष रमेश गुळवे जी को पक्षाघात का दौरा पड़ा । उन्हें वैद्यकीय उपचार के लिए काठमांडू से पूना ले गए किंतु उनका देहांत हो गया। मैं और मेरे साथियों पर मानो दुख का एवरेस्ट ही टूट पड़ा । फिर भी हमने आगे बढ़ने का निर्णय लिया । *

बर्फ की चोटियाँ, हिमनद, आँधी-तूफान, हड्डियाँ जम जाए इतनी ठंड आदि का सामना करते हुए एवरेस्ट कैंप-१, कैंप-२ तक चढ़ाई करने में टीम सागरमाथा सफल हुई । १६ मई को एवरेस्ट कैंप-२ पर भारत का राष्ट्रगीत बजाकर मैंने विश्व रिकार्ड बनाया । उसके बाद मेरी सेहत बिलकुल बिगड़ गई । इसलिए मुझे नीचे डोंगबोचे नामक स्थान पर भेजा गया । वहाँ मैं बहुत हताश होकर बैठ गया था । वह अत्यंत बुरा क्षण था । जिन सपनों का पीछा मैं बचपन से कर रहा था उसमें मुझे असफलता मिलने वाली थी । आखिर मैंने ''विपश्यना'' से अपनी साँसों पर नियंत्रण

सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) आकृति पूर्ण कीजिए :
परिच्छेद में प्रयुक्त रिश्ते

(२) परिच्छेद में प्रयुक्त शहरों के नाम :
(अ) ____ (ब) ____

(३) (क) परिच्छेद में आए सर्वनामों की सूची तैयार कीजिए ।
(ख) परिच्छेद से समुच्च्यबोधक अव्यय ढूँढकर लिखिए ।

(४) परिच्छेद से प्राप्त प्रेरणा लिखिए ।

पाया और सुबह होते ही मैं चत्मकारिक ढंग से एकदम ठीक हो गया । अपने सपनों पर होने वाली अपार निष्ठा ने ही मुझे ठीक किया था । मैं एवरेस्ट चढ़ाई के लिए निकल पड़ा । एवरेस्ट का डेथ झोन -५०, -६० (माइनस ५०, माइनस ६०) तापमान हड्डियाँ जम जाए इतनी ठंड, दो बार ऑक्सीजन खतम हो जाने के कारण मृत्यु को करीब से देखा । बहुत पहले मरे हुए गिर्यारोहकों के मृतदेह आदि का सामना करते हुए १९ मई २०१२ की सुबह ११.२० को मै संसार के सर्वोच्च शिखर पर बड़े गर्व के साथ पहुँच गया ।

नौवी कक्षा में अनुत्तीर्ण फिर भी निराश ना होते हुए आज मैंने इतनी ऊँचाई हासिल की है । गिर्यारोहण के साथ मैं पढ़ाई में भी आगे बढ़ता रहा । आज मै पदार्थ विज्ञान जैसे जटिल विषय में अनुसंधान कर रहा हूँ । एवरेस्ट चढ़ाई के बाद मैंने 'वर्ल्ड पीस सेव्हन समिट' मुहीम शुरू की । अब तक चार महाद्वीपों के चार सर्वोच्च शिखर चढ़ चुका हूँ उनमें एशिया, यूरोप, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया आदि महाद्वीपों के ऊँचे शिखर शामिल हैं । ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप से सबसे ऊँचे दस शिखरों की चढ़ाई करने वाली पहली भारतीय टीम का नेतृत्व मैंने सफलता से किया है । अपने गिर्यारोहण के साथ सामाजिक काम करते हुए मुझे युनायटेड नेशन्स के साथ काम करने का अवसर भी प्राप्त हुआ है । मैंने अब तक छह किताबें लिखी हैं जो सबको प्रेरित कर रही हैं । मुझे यही बताना है कि अगर आप किसी लक्ष्य को दिलोजान से चाहते हैं तो उसे पूरा करने के लिए सारी दुनिया आपकी मदद करती है । आप कुछ कर नहीं सकते यह बताने का अधिकार किसी को मत दीजिए। आप में बहुत सारी ताकत है । अपने जीवन का कोई भी और कितना भी बड़ा लक्ष्य आप पूरा कर सकते हैं । जीवन में कठिनाइयाँ तो आती ही हैं । असफलता भी मिल सकती है पर हमें सदैव ध्यान में रखना चाहिए कि असफलता, सफलता की पहली सीढ़ी है । दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर कोई भी कार्य असंभव नही है ।

—०—

संभाषणीय

''गाँव और शहर दोनों जगह जीवन का संघर्ष है ।'' भाषण दीजिए ।

मौलिक सृजन

मनुष्य को अपने अच्छे और सच्चे सपनों को पूरा करने से कोई रोक नहीं सकता ।'' कथन की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।

शब्द संसार

अवगत (वि.सं.) = विदित, ज्ञात
भावभीनी (पुं.वि.) = भावमिश्रित

मुहावरे

नतमस्तक होना = नम्र होना ।
हासिल करना = प्राप्त करना
अडिग रहना = स्थिर रहना
दाँव पर लगाना = बाजी लगाना

पाठ के आँगन में

(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :–

(क) आकृति पूर्ण कीजिए :–

आनंद जी ने इन महाद्‌वीपों के
सर्वोच्च शिखर पर चढ़ाई की है ।

(ग) आनंद जी ने सपनों की यात्रा इन महाद्‌वीपों में की :–

१) .... २) .... ३) .... ४) .... ५) ....

(घ) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :–

आनंद जी पढ़ाई तथा पर्वतारोहण के दौरान इन संस्थाओं से जुड़ गए

[ ]
↓
[ ]
↓
[ ]
↓
[ ]

(२) आप अपने सहपाठियों के साथ किसी पर्वतारोहण के लिए गए थे । वहाँ के रोमांचक अनुभव को शब्दबद्‌ध कीजिए ।

पाठ से आगे

'अंत:प्रेरणा से ही जीवन का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है' – स्पष्ट कीजिए ।

रचना बोध

....
....
....

भाषा बिंदु

(१) डायरी अंश पढ़िए और वाक्य के प्रकार ढूँढ़िए :-

१० मई २०१७ (बुधवार)

आज कक्षा में सूचना आई कि इन गर्मियों में हमारे स्कूल की ओर से एक दल शिमला भ्रमण को भेजने की योजना बनी है । मैंने भी अपना नाम उसके लिए दिया । मैं इस यात्रा के लिए उत्सुक हूँ ।

२० मई २०१७ (शनिवार)

तीस विद्‌यार्थियों का दल पी. टी. आई. श्री जयचंद वर्मा जी के साथ रवाना हुआ । रात्रि के साढ़े दस बजे हम दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुँच गए । गाड़ी ग्यारह बजे चलनी थी । हमने अपने पूर्व निर्धारित स्थान ले लिए । भयंकर गर्मी पड़ रही थी । ग्यारह बजे गाड़ी चल पड़ी । हम अपने-अपने स्थान पर सो गए ।

२१ मई २०१७ (रविवार)

प्रातः साढ़े छह बजे गाड़ी कालका स्टेशन पर रुकी । यहाँ से हमें गाड़ी बदलनी थी । शिमला के लिए छह डिब्बों की खिलौने जैसी गाड़ी प्लेटफार्म पर लगी हुई थी । खिलौना गाड़ी के डिब्बे छोटे-छोटे थे और रेलवे लाईन 'नैरो गैज' थी । गाड़ी ठीक साढ़े सात बजे चल पड़ी । गाड़ी की गति पर्याप्त धीमी थी और वह पर्वत की पीठ पर मानो रेंगते हुए चढ़ रही थी । दूर तक घाटियों में फैली हरियाली दिखाई पड़ती थी । करीब साढ़े दस बजे गाड़ी लंबी सुरंग द्‌वारा बहुत सुंदर फूलों से सजे छोटे-से स्टेशन बड़ौग पर पहुँची जिसे देख राकेश बोला- 'ओह ! कितनी लंबी सुरंग ?'

२२ मई २०१७ (सोमवार)

दूसरे दिन हम हिमाचल पर्यटन विभाग की बसों में बैठकर कुफरी, वाइल्ड फ्लॉवर हॉल, क्रिग नैनी और नालदेश की यात्रा के लिए गए ।

२३ मई २०१७ (मंगलवार)

तीसरे दिन हम जाखू पर्वत पर पिकनिक के लिए गए । शिमला शहर के मध्य रिज से लगभग पंद्रह सौ फुट की ऊँचाई पर स्थित यह चोटी सैलानियों के आकर्षण का केंद्र है ।

२४ मई २०१७

चौथे दिन प्रातः (बुधवार) सात बजे हम वापस चल पड़े । सचमुच ही शिमला पहाड़ों की रानी है ।

(२) उपरोक्त डायरी अंश के आधार पर निर्देश-१ के अनुसार वाक्य लिखिए तथा निर्देश-२ के अनुसार परिवर्तित करके कॉपी में लिखिए :-

क्र.	निर्देश-१	वाक्य	निर्देश-२
१.	संयुक्त वाक्य	बसों में बैठकर कुफरी, क्रिगनैनी और नालदेरा की यात्रा के लिए गए ।	मिश्र वाक्य
२.	सरल वाक्य		संयुक्त वाक्य
३.	मिश्र वाक्य		सरल वाक्य
४.	विधानार्थक		निषेधार्थक
५.	प्रश्नार्थक		संकेतार्थक
६.	विस्मयार्थक		इच्छार्थक
७.	आज्ञार्थक		संदेहार्थक

८. मित्रता

–चेतना

संभाषणीय

विपत्ति में ही सच्चे मित्र की पहचान होती है, स्पष्ट कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● विद्‌यार्थियों से उनके मित्रों के नाम पूछें । ● विद्‌यार्थी किसे अपना सच्चा मित्र मानते हैं, बताने के लिए कहें । ● किन-किन कार्यों में मित्र ने उनकी सहायता की है, पूछें । ● विद्‌यार्थी अपने-अपने मित्रों के सच्चे मित्र बनने के लिए क्या करेंगे, बताने के लिए प्रेरित करें ।

उसने मेरा हाथ कसकर पकड़ लिया । वह बार-बार मुझे देखे जा रहा था । मैं इतनी हैरान थी कि कुछ समझ नहीं पा रही थी । हम दोनों एक-दूसरे को टुकुर-टुकुर देख रहे थे । उसका चेहरा बदला-बदला-सा लग रहा था । ऐसा लग रहा था कि वह बहुत दूर से और बहुत थककर आया है । वह कुछ बोल नहीं रहा था । बस खड़ा था । मैं उससे बहुत कुछ पूछना चाहती थी लेकिन कुछ बोल नहीं पा रही थी । वह देखता रहा । गुस्से में थी । मैंने उसका हाथ झटका और तेजी से आगे की ओर बढ़ गई । मैंने एक पल भी पलटकर नहीं देखा । वह शायद वहीं पर खड़ा था । मैं पलटना चाहती थी, मगर नहीं । मुझमें भी एक अहम था कि वह आए और कुछ बोले। लेकिन वह आ ही नहीं रहा था ।

मैं जल्दी-जल्दी अपने कमरे में पहुँचकर उसे छुपकर और पलटकर देखने लगी । वह वहाँ नहीं था । मैं उदास चेहरा लिए जैसे ही पलटी तो वह मेरे पीछे ही खड़ा था । मैं सहम-सी गई । उसने फिर से मेरा हाथ पकड़ लिया । तभी मम्मी ने तेज आवज लगाई । उनकी आवाज सुनकर मेरा शरीर कँपकँपा गया पर वह था कि मेरा हाथ छोड़ने का नाम ही नहीं ले रहा था । मैं उसे और अपने हाथ को ही देख रही थी कि मेरी आँखों से टप-टप आँसू बहने लगे । मैं अपना हाथ छुड़ाने के लिए गिड़गिड़ाने लगी ।

मुझे याद है, जब मैं स्कूल में पढ़ती थी । छुट्‌टी के बाद वह मुझे रोज मिलता था । और कहता था-'रिश्ता है प्यारा-प्यारा, दोस्ताना है हमारा ।' बोलते हुए उसकी हँसी और ठिठोली कितनी अच्छी लगती थी उस पर छोटे-छोटे से हम कैसे गली की सबसे ऊँची छत पर जाकर पतंग उड़ाया करते थे । वह मुझे सिखाता था । गली के सभी लोगों के काम करता था । किसी का दूध लाना, किसी की सब्जी, किसी के लिए कुछ पर वह तो अलग ही लग रहा था ।

मुझे याद है, उसका यही एक पुराना ठिकाना था जहाँ वह हमेशा खड़ा रहता था । दीवार की वह बाउंड्री जिसके सहारे वह खड़ा पल-पल मेरी राह ताकता रहता था । गली में लोग और भी हुआ करते थे लेकिन हमारी दोस्ती तो सबसे अलग थी । दिनभर खेलना और घूमना बहुत अच्छा लगता था । वह एक रुपये की साइकिल लेकर चलाना, मुझे

परिचय

जन्म : २१ जनवरी २००२, डॉ. आंबेडकर नगर, दक्षिणपुरी, नई दिल्ली

परिचय : दिल्ली की आसपास की कामगार बस्तियों के तरुण-युवा लेखकों की रचनाओं को 'अंकुर' 'घुसपैठिये' नामक स्तंभ में स्थान देती रही है । चेतना जी इस पत्रिका में तीन सालों से नियमित लिख रही हैं ।

गद्‌य संबंधी

सत्य कहानी : जब कहानी पूर्णतः किसी सत्य घटना पर आधारित हो और घटना के पात्रों को ज्यों काव्यों का कहानी में रेखांकित किया हो तो वह सत्य कहानी का रूप ले लेती है।

प्रस्तुत सत्य कहानी के माध्यम से युवा अवस्था की दहलीज पर कदम रखते युवक-युवतियों की दोस्ती, उनके आपसी लगाव, निश्छल प्रेम, रूठना-मनाना, उनकी मित्रता के प्रति समाज के दृष्टिकोण को रेखांकित किया गया है ।

सिखाना, वे दिन मेरे दिमाग में आ-जा रहे थे । मुझे याद है, जब वह नहीं दिखता था, तब मेरी नजरें बेचैनी से उसे खोजती थीं । कुछ समय के बाद मैं जब उस जगह से गुजरती थी तो पीछे मुड़-मुड़कर देखती रहती पर वह नजर ही नहीं आता था । उसे वहाँ न देखकर मेरी आँखें भर जातीं और दिल बेचैन हो जाता । मैं कुछ आगे बढ़कर पेड़ के सहारे खड़ी हो, उसके आने का इंतजार करती । घर पहुँचकर भी दिमाग उसके खयालों में डूबा रहता । आखिर उसे क्या हुआ ? मेरे मन में तरह-तरह के ख्याल आने लगे थे । न मेरा दिन कटता था और न सवाल रुकते थे ।

दूसरे दिन फिर से वही ठिकाना, वही पेड़, वही समय और वही मेरा पलट-पलटकर देखना लेकिन आज जब वह मुझे नजर आया तो मन के सारे अहसास अचानक होठों पर आकर थम गए । आँखें सवालों से भर गईं । तभी मैंने तेजी से उसका हाथ झटककर अपना हाथ छुड़ाया और वह भी मेरे पीछे-पीछे आने लगा । उसे देखते ही मम्मी ने पूछा, ''क्या हुआ तुम्हें ? तुम दोनों इतने गुस्से में क्यों हो ?''

मैं अंदर वाले कमरे में चली गई । वह हँसता हुआ कमरे की चौखट को देखते हुए बोला, ''आंटी, आपकी लड़की पागल हो गई है, कुछ समझती ही नहीं, कुछ बोलो तो भड़क जाती है, न सुनने की तो मानो इसने कसम खा ली है।''

मैं अंदर से बोली, ''माँ, यह चाय पीने आया है, इसे चाय पिलाओ और भेजो ! मुझे इससे कोई बात नहीं करनी ।''

मम्मी ने धीरे से हँसते हुए कहा, ''देख लो इतने दिन गायब होने का नतीजा, वैसे कहाँ था इतने दिन ?''

वह झिझकता हुआ बोला, ''कुछ नहीं ऐसे ही ।''

'हाँ-हाँ, ऐसे ही दिमाग खराब है न तेरा !'' मैंने कहा ।

उसकी नजरें झुकी हुई थीं । कहीं भी नहीं देख रहा था । ऐसा लगता था कि जैसे वह किन्हीं बातों में खो गया है । उस दिन को मैं कभी नहीं भूलती जब वह बिना बताए चला गया था । घनी गर्मी का दिन था । हमारे स्कूल की छुट्टियाँ पड़ने वाली थीं । हमने उस दिन प्लान बनाया था कि हम मार्केट में पतंग की दुकान पर जाएँगे और पाँच-पाँच रुपये वाली चार पतंगें खरीदेंगे फिर गली के कोने वाले घर की छत पर जाएँगे । हमे पतंग उड़ाने के लिए सिर्फ दोपहर का ही वक्त मिलता था । मैं स्कूल से आकर, जल्दी से अपनी ड्रेस बदलकर तैयार हो गई थी । घर के दरवाजे पर खड़ी थी । वह आएगा मुझे मालूम था । मैं गली की दोनों ओर देख रही थी। कितना वक्त हो चुका था इसकी भनक तक नहीं थी । मैं बस देखे जा रही थी । मम्मी भी आज आने में लेट हो गई थीं । घर में कोई नहीं था । गली में धूप कम होने लगी थी, यह देखकर लग रहा था कि काफी टाइम हो

श्रवणीय

अपने मित्र/सहेली के स्वभाव की विशेषताओं को कक्षा में सुनाइए ।

लेखनीय

'मित्रता के लिए कोई आयु सीमा निर्धारित नहीं होती' इसपर अपने विचार लिखिए ।

गया है । मैं वहीं पर खड़े-खड़े यह भी सोच रही थी कि काश ! मम्मी भी आ जाएँ तो मैं उसके घर जाकर देखती । मैं खड़े-खड़े थक गई थी । मैं जेसे ही घर के अंदर जाने लगी तो मम्मी को आते देखा । मैं खुश हो गई । मम्मी के आते ही बोली, ''मम्मी, मैं अभी आती हूँ।'' यह कहकर चली गई । मैं तेज-तेज चल रही थी । उसके घर पहुँची तो पाया कि उसके घर पर ताला लगा है । मैंने उनके पड़ोस में रहने वाली अपनी सहेली से पूछा कि, ''रोहन कहाँ गया है ?'' तो वह तुरंत ही बोली कि, ''ये सभी शादी में गए हैं ।'' यह सुनकर मैं वहाँ से चली आई कि अब आएगा तो बात नहीं करूँगी ।

✲ दो दिनों तक मैंने उसका नाम भी नहीं लिया था । उसे पूरी तरह से भूल चुकी थी । लेकिन एक दिन सोचा कि अब जाकर देखती हूँ शायद वे लोग आ गए होंगे । बेमन से मैं उसके घर गई । उसका घर खुला था । उसकी मम्मी बाहर ही खड़ी थीं । लाइट नहीं थी । घर में अँधेरा था । मैंने उसकी मम्मी से पूछा, ''आँटी, रोहन कहाँ है ?'' तो वह बोलीं, ''वह तो अपने मामा के घर ही रुक गया।'' यह सुनकर मैं बहुत दुखी हुई थी । फिर मैंने पूछा, ''वह कब आएगा ?''

वह बोलीं, ''अब तो वह तभी आएगा जब कुछ सीख लेगा।''

इतना कहकर वह अंदर चली गई । लाइट आ गई थी । मैं उसकी माँ से और भी कुछ पूछना चाहती थी लेकिन लाइट आने के कारण वह अंदर चली गई थीं । आज पहली बार लाइट के आने का दुख हो रहा था ।

और, आज यह मेरे सामने सिर झुकाकर बैठा था ।

मम्मी तेजी से हँसती हुई हाथ में चाय की ट्रे लिए किचन से बाहर निकलीं । वह सीढ़ियों पर बैठा था । उसने चाय का कप उठाया और कुछ नमकपारे भी ले लिए । चाय की चुसकी लेते हुए बोला, ''वाह आंटी! आपके हाथों की चाय आज भी उतनी ही कड़क है, किसी को मिल जाए तो उसका दिमाग ही खुल जाए ।''✲

मैंने बाहर आकर कहा, ''माँ, यह तुम्हें चढ़ा रहा है!'' तभी मेरी मम्मी उसको तिरछी नजरों से देखते हुए बोली, ''क्या मैं चाय अच्छी नहीं बनाती ?''

''हाँ बताओ भाई, क्या आंटी चाय अच्छी नहीं बनातीं ?'' मैं कुछ नहीं बोली ।

उसी ने आँखों को मटकाते हुए बोला, ''हाँ, आप बहुत बढ़िया चाय बनाती हैं । यह तो बस किसी को पागल बना सकती है ।''

माँ ने अब वही बात पूछ डाली जो मेरे मन में चल रही थी । ''सुना है तू अपने मामा के यहाँ पर था इतने समय । वहाँ करता क्या था तू ?''

वह बोला, ''काम, काम और बस काम । पापा ने मुझे वहाँ पर यह कहकर रुकने को कहा कि तू कुछ सीख लेगा । लेकिन मामा ने मुझे अपनी दुकान पर रख लिया । बस मैं वहीं था । मैं मेकैनिक तो बन गया आंटी

पठनीय

'ईसप' पुस्तक से मित्रता पर आधारित कहानियाँ पढ़िए ।

✲ सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) आकृति पूर्ण कीजिए :

लेखिका ने देखा तो
रोहन का घर

- ...
- ...
- ...
- ...

(२) उत्तर लिखिए :

(क) लेखिका को लाईट आने का दुख हुआ कारण.........

(ख) रोहन के अनुसार आंटी के हाथों की चाय की विशेषता ....

(ग) रोहन का माया के घर रुकने का कारण ....

मौलिक सृजन

मेरे मित्र/सहेली के आचार-विचार मेरे जीवन के मार्गदर्शक हैं । टिप्पणी लिखिए ।

मगर ...'' वह बोलते-बोलते रुक गया । शायद उसकी चुप्पी में ही उसका असली जवाब छुपा था ।

उसकी चाय का कप खाली हो गया था । वह बोला, ''चाय तो खत्म हो गई !'' मैंने कहा, ''चल जल्दी से अपने घर जा वरना बहुत मारूँगी !''

वह मुस्काराते हुए बोला, ''अरे, जा रहा हूँ, तू इतना क्यों भड़क रही है ?'' कुछ समय बाद जब वह जाने ही वाला था कि मैंने पूछा, ''फिर कब आएगा ?''

उसने बड़े ताव से जवाब दिया, ''कभी भी, जब मन करे, पर तुझे आना है तो कभी भी आ जाना, तेरे लिए तो मेरे घर के दरवाजे हमेशा खुले हैं ।'' चंद पलों बाद वह चला गया और जाते-जाते आँखों को मटकाते हुए बोला, ''सॉरी, गलती हो गई, मिलेंगे, बॉय ।''

उसके पीछे मुड़ते ही मैंने उससे पूछा, ''तू था कहाँ इतने दिन ?'' वह मुस्कराने लगा और बोला, ''यह बड़ा हो जाना भी न, एक जुर्म ही है । इसकी लंबी सजा है ।'' यह कहकर वह चलने लगा । वह कुछ कहता हुआ, कदमों को आगे बढ़ाता हुआ अपने घर की तरफ रवाना हो गया ।

मैं उसकी यह बात पूरी तरह से समझ गई थी ।

आज उसका हाथ पकड़ना सभी को दिख रहा था । लेकिन यह नहीं दिख रहा था कि बचपन में छोटे-छोटे से हम दोनों कैसे गली की सबसे ऊँची छत पर जाकर पतंग उड़ाया करते थे ।

आसपास

आपके किसी दोस्त/सहेली द्‌वारा किए गए सराहनीय कार्य की कक्षा में चर्चा कीजिए ।

पाठ से आगे

'विश्वबंधुता की नींव आपसी विश्वास पर खड़ी होती हैं', स्पष्ट कीजिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) उचित विकल्प चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए

१. पंतग उड़ाने के लिए सिर्फ ....

(क) शाम का वक्त मिलता था ।

(ख) सुबह का वक्त मिलता था ।

(ग) दोपहर का वक्त मिलता था ।

२. आज वह पूरे ....

(क) तीन साल के बाद दिखाई दिया था ।

(ख) पाँच साल के बाद दिखाई दिया था ।

(ग) दो साल के बाद दिखाई दिया था ।

(ख) संजाल पूर्ण कीजिए :

लड़के की विशेषताएँ

(२) पाठ में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों की सूची तैयार कीजिए ।

(३) अपने बचपन में घटी संस्मरणीय घटना का वर्णन कीजिए ।

रचना बोध

....

....

....

भाषा बिंदु

(१) इस निबंध के अंश पढ़कर विदेशी, तत्सम, तद्‌भव शब्द समझिए । इसी प्रकार के अन्य पाँच-पाँच शब्द ढूँढ़िए ।

कुछ भाषाओं के शब्द किसी भी अन्य भाषा से मित्रता कर लेते हैं और उन्हीं में से एक बन जाते हैं । अंग्रेजी भाषा के कई शब्द जिस किसी प्रदेश में गए, वहाँ की भाषाओं में घुलमिल गए । जैसे- 'बस, रेल, कार, रेडियो, स्टेशन' आदि । कहा जाता है कि तमिळ भाषा के शब्द केवल अपने परिवार द्रविड़ परिवार तक ही सीमित रहते हैं । वे किसी से घुलना, मिलना नहीं चाहते । अलबत्ता हिंदी के शब्द मिलनसार हैं परंतु सब नहीं; कुछ शब्द तो अंत तक अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखते हैं । अपने मूल रूप में ही वे अन्य स्थानों पर जाते हैं । कुछ शब्द अन्य भाषा के साथ इस प्रकार जुड़ जाते हैं कि उनका स्वतंत्र रूप खत्म-सा हो जाता है ।

हिंदी में कुछ शब्द ऐसे भी पाए जाते हैं जो दो भिन्न भाषाओं के शब्दों के मेल से बने हैं । अब वे शब्द हिंदी के ही बन गए हैं । जैसे- हिंदी-संस्कृत से वर्षगाँठ, माँगपत्र; हिंदी-अरबी/फारसी से थानेदार, किताबघर; अंग्रेजीसंस्कृत से रेलयात्री, रेडियोतरंग; अरबी/फारसी-अंग्रेजी से बीमा पॉलिसी आदि । इन शब्दों से हिंदी का भी शब्द संसार समृद्‌ध हुआ है । कुछ शब्द अपनी माँ के इतने लाड़ले होते हैं कि वे माँ-मातृभाषा को छोड़कर औरों के साथ जाते ही नहीं । कुछ शब्द बड़े बिंदास होते हैं, वे किसी भी भाषा में जाकर अपने लिए जगह बना ही लेते हैं ।

शब्दों के इस प्रकार बाहर जाने और अन्य अनेक भाषाओं के शब्दों के आने से हमारी भाषा समृद्‌ध होती है । विशेषतः वे शब्द जिनके लिए हमारे पास प्रतिशब्द नहीं होते । ऐसे हजारों शब्द जो अंग्रेजी, पुर्तगाली, अरबी, फारसी से आए हैं; उन्हें आने दीजिए । जैसे- ब्रश, रेल, पेंसिल, रेडियो, कार, स्कूटर, स्टेशन आदि परंतु जिन शब्दों के लिए हमारे पास सुंदर शब्द हैं, उनके लिए अन्य भाषाओं के शब्दों का उपयोग नहीं होना चाहिए । हमारे पास 'माँ' के लिए, पिता के लिए सुंदर शब्द हैं, जैसे- माई, अम्मा, बाबा, अक्का, अण्णा, दादा, बापू आदि । अब उन्हें छोड़ मम्मी-डैडी कहना अपनी भाषा के सुंदर शब्दों को अपमानित करना है ।

हमारे मुख से उच्चरित शब्द हमारे चरित्र, बुद्‌धिमत्ता, समझ और संस्कारों को दर्शाते हैं इसलिए शब्दों के उच्चारण के पूर्व हमें सोचना चाहिए । कम-से-कम शब्दों में अर्थपूर्ण बोलना और लिखना एक कला है । यह कला विविध पुस्तकों के वाचन से, परिश्रम से साध्य हो सकती है । मात्र एक गलत शब्द के उच्चारण से वर्षों की दोस्ती में दरार पड़ सकती है । अब किस समय, किसके सामने, किस प्रकार के शब्दों का प्रयोग करना चाहिए इसे अनुभव, मार्गदर्शन, वाचन और संस्कारों द्‌वारा ही सीखा जा सकता है । सुंदर, उपयुक्त और अर्थमय शब्दों से जो वाक्य परीक्षा में लिखे जाते हैं उस कारण ही अच्छी श्रेणी प्राप्त होती है । अनाप-शनाप शब्दों का प्रयोग हमेशा हानिकारक होता है ।

प्रत्येक व्यक्ति के पास स्वयं की शब्द संपदा होती है । इस शब्द संपदा को बढ़ाने के लिए साहित्य के वाचन की जरूरत होती है । शब्दों के विभिन्न अर्थों को जानने के लिए शब्दकोश की भी जरूरत होती है । शब्दकोश का एक पन्ना रोज एका-ग्रता से पढ़ोगे तो शब्द संपदा की शक्ति का पता चल जाएगा ।

तो अब तय करो कि अपनी शब्द संपदा बढ़ानी है। इसके लिए वाचन-संस्कृति को बढ़ाओ । पढ़ना शुरू करो । तुम भी शब्द संपदा के मालिक हो जाओगे।

(डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे का निबंध 'शब्द संपदा' से साभार)

(२) उपर्युक्त अंश से पंद्रह शब्द ढूँढ़िए उनमें प्रत्यय लगाकर शब्दों को पुनः लिखिए ।

९. बादल को घिरते देखा है

-नागार्जुन

किसी प्राकृतिक चित्र का सूक्ष्म निरीक्षण करके उसके सौंदर्य का वर्णन लिखिए :-

लेखनीय

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● चित्र का सूक्ष्म निरीक्षण कराएँ । ● चित्र का विषय पूछें । ● चित्र में किन-किन चीजों को चित्रित किया है बताने के लिए कहें । ● चित्र का वर्णन करने के लिए कहें ।

अमल धवल गिरि के शिखरों पर,
बादल को घिरते देखा है ।
छोटे-छोटे मोती जैसे
उसके शीतल मोती जैसे
उसके शीतल तुहिन कणों को,
मानसरोवर के उन स्वर्णिम
कमलों पर गिरते देखा है,
बादल को घिरते देखा है ।

तुंग हिमालय के कंधों पर
छोटी-बड़ी कई झीलें हैं,
उनके श्यामल नील सलिल में
समतल देशों से आ-आकर
पावस की उमस से आकुल
तिक्त-मधुर विस-तंतु खोजते
हंसो को तिरते देखा है ।
बादल को घिरते देखा है ।

ऋतु बसंत का सुप्रभात था
मंद-मंद था अनिल बह रहा
बालारुण की मृदु किरणें थीं
अलग-बगल स्वर्णाभ शिखर थे
एक-दूसरे से विरहित हो
अगल-बगल रहकर ही जिनको
सारी रात बितानी होगी,

परिचय

जन्म : ३० जून १९११, तैरोनी, दरभंगा (बिहार)

मृत्यु : ५ नवंबर १९९८

परिचय : नागार्जुन जी हिंदी और मैथिली के अप्रतिम लेखक और कवि थे । आप भारतीय वर्ग संघर्ष के कवि हैं । बाबा नागार्जुन हिंदी, मैथिली, संस्कृत तथा बांग्ला में कविताएँ लिखते थे ।

प्रमुख कृतियाँ : युगधारा, खिचड़ी, विप्लव देखा हमने, भूल जाओ पुराने सपने आदि (कविता संग्रह) बाबा वटेसर नाथ, नई पौध, आसमान थे चाँद तारे आदि उपन्यास) कथा मंजरी भाग १-२, विद्यापति की कहानियाँ (बालसाहित्य), अन्नहीनम क्रियानाम (निबंध संग्रह)

पद्य संबंधी

कविता : रस की अनुभूति कराने वाली, सुंदर अर्थ प्रकट करने वाली, हृदय की कोमल अनुभूतियों का साकार रूप कविता है ।

प्रस्तुत कविता में बाबा नागार्जुन जी ने प्रकृति सौंदर्य के वास्तविक रूप का बड़ा सुंदर वर्णन किया है ।

निशाकाल के चिर-अभिशापित
बेबस उन चकवा-चकई का
बंद हुआ क्रंदन, फिर उनमें
उस महान सरवर के तीरे
शैवालों की हरी दरी पर
प्रेम-कलह छिड़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है ।

शत-सहस्र फुट ऊँचाई पर
दुर्गम बर्फानी घाटी में
अलख नाभि से उठने वाले
निज के ही उन्मादक परिमल
के पीछे धावित हो-होकर
तरल तरुण कस्तूरी मृग को
अपने पर चिढ़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है ।

कहाँ गया धनपति कुबेर वह ?
कहाँ गई उसकी वह अलका ?
नहीं ठिकाना कालिदास के
व्योम प्रवाही गंगाजल का,
ढूँढ़ा बहुत परंतु लगा क्या
मेघदूत का पता कहीं पर,
कौन बताए वह छायामय
बरस पड़ा होगा न यहीं पर,
जाने दो, वह कवि कल्पित था,
मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभचुंबी कैलाश शीर्ष पर,
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है ।

—०—

श्रवणीय

यू-ट्यूब पर 'मानसरोवर' से संबंधित जानकारी सुनिए ।

पठनीय

'दीपदान' नामक डॉ. रामकुमार वर्मा की एकांकी पढ़िए ।

संभाषणीय

'कस्तूरी मृग' विषय पर टिप्पणी तैयार कीजिए ।

मैं हूँ यहाँ

https://youtu.be/G-nHHTCa4CQ

शब्द संसार

तुहिन (पुं.सं.) = तुषार बिंदु

सलिल (पुं.सं.)= जल

शीर्ष (वि.सं.) = शिखर

देवदारु (पुं.सं.)) = देवदार वृक्ष

कुवलय (पुं.सं.) = नीलकमल

आसपास

अपने राज्य के पर्यटन स्थल की जानकारी प्राप्त कीजिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) संजाल :

कवि ने बादल को यहाँ देखा है -

(ख) विशेष्य और विशेषण का मिलान कीजिए :

गिरि कमल

शिखर छोटे मोती

कमल स्वर्णाभ

धवल स्वर्णिम

लाल

(ग) कवि के अनुसार अकल्पित कल्पनाएँ

(घ) आकृति पूर्ण कीजिए :

ऋतु वसंत का सुप्रभात

बाल अरुण अनिल

(२) भावार्थ लिखिए :-

ऋतु वसंत का .... बितानी होगी ।

पाठ से आगे

अंतरजाल से बादल, हिमवर्षा, कोहरा, तुषार संबंधी जानकारी प्राप्त कीजिए ।

रचना बोध

....

....

....

१०. क्रोध

पूरक पठन

– आचार्य रामचंद्र शुक्ल

सामाजिक जीवन में क्रोध की जरूरत बराबर पड़ती है। यदि क्रोध न हो तो मनुष्य दूसरों के द्‌वारा पहुँचाए जाने वाले बहुत से कष्टों की चिरनिवृत्ति का उपाय ही न कर सके । कोई मनुष्य किसी दुष्ट के नित्य दो चार प्रहार सहता है। यदि उसमें क्रोध का विकास नहीं हुआ है तो वह केवल आह–उह करेगा जिसका उस दुष्ट पर कोई प्रभाव नहीं । उस दुष्ट के हृदय में विवेक, दया आदि उत्पन्न करने में बहुत समय लगेगा । संसार किसी को इतना समय ऐसे छोटे–छोटे कामों के लिए नहीं दे सकता। भयभीत होकर प्राणी अपनी रक्षा कभी–कभी कर लेता है; पर समाज में इस प्रकार प्राप्त दुखनिवृत्ति चिरस्थायिनी नहीं होती । हमारे कहने का अभिप्राय यह नहीं है कि क्रोध करने वाले के मन में सदा भावी कष्ट से बचने का उद्‌देश्य रहा करता है । कहने का तात्पर्य केवल इतना ही है कि चेतना सृष्टि के भीतर क्रोध का विधान इसीलिए है ।

जिससे एक बार दुख पहुँचा, पर उसके दुहराए जाने की संभावना कुछ भी नहीं है, जो कष्ट पहुँचाया जाता है वह प्रतिकार मात्र है; उसमें रक्षा की भावना कुछ भी नहीं रहती । अधिकतर क्रोध इसी रूप में देखा जाता है। एक दूसरे से अपिरिचत दो आदमी रेल मे चले जा रहे हैं । इनमें से एक को आगे ही के स्टेशन पर उतरना है । स्टेशन तक पहुँचते–पहुँचते बात ही बात में एक ने दूसरे को एक तमाचा जड़ दिया और उतरने की तैयारी करने लगा । अब दूसरा मनुष्य भी यदि उतरते–उतरते उसे एक तमाचा लगा दे तो यह उसका बदला या प्रतिकार ही कहा जाएगा क्योंकि उसे फिर उसी व्यक्ति से तमाचे खाने का कुछ भी निश्चय नहीं था । जहाँ और दुख पहुँचाने की कुछ भी संभावना होगी, वहाँ शुद्‌ध प्रतिकार न होगा, उसमें स्वरक्षा की भावना भी मिली होगी।

हमारा पड़ोसी कई दिनों से नित्य आकर हमें दो चार टेढ़ी–सीधी सुना जाता है, यदि हम एक दिन उसे पकड़कर पीट दें तो हमारा यह कर्म शुद्‌ध प्रतिकार न कहलाएगा, क्योंकि हमारी दृष्टि नित्य गालियाँ सहने के दुख से बचने के परिणाम की ओर भी समझी जाएगी । इन दोनों दृष्टांतों को ध्यानपूर्वक देखने से पता लगेगा कि दुख से उद्‌विग्न होकर दुखदाता को कष्ट पहुँचाने की प्रवृत्ति दोनों में है; पर एक में वह परिणाम आदि का विचार बिलकुल छोड़े हुए है और दूसरे में कुछ, लिए हुए । इनमें से पहले दृष्टांत का क्रोध उपयोगी नहीं दिखाई पड़ता । पर क्रोध करने वाले के पक्ष में उसका उपयोग चाहे न हो पर लोक के भीतर वह बिलकुल खाली नहीं जाता । दुख पहुँचाने वाले से हमें फिर दुख पहुँचने का डर न सही, पर

परिचय

जन्म : ४ अक्टूबर १८८४ अगौना, बस्ती (उ.प्र.)
मृत्यु : २ फरवरी १९४१ वाराणसी (उ.प्र.)
परिचय : आप हिंदी साहित्य के कीर्ति स्तंभ हैं । हिंदी में वैज्ञानिक आलोचना का सूत्रपात आपके ही द्‌वारा हुआ है । आप श्रेष्ठ और मौलिक निबंधकार थे । आपने सरल के साथ–साथ परिमार्जित भाषा में पूर्ण अधिकार के साथ लिखा है । व्याकरण की दृष्टि से पूर्ण निर्दोष भाषा आपकी विशेषता है ।
प्रमुख कृतियाँ : विचार वीथी, चिंतामणि भाग १,२,३ (निबंध संग्रह), रस मीमांसा, त्रिवेणी, सूरदास (आलोचना) जायसी ग्रंथावली, तुलसी ग्रंथावली आदि (संपादन) हिंदी साहित्य का इतिहास (ऐतिहासिक ग्रंथ) शशांक (अनुवादित उपन्यास) विश्व प्रपंच, आदर्श जीवन, मेगास्थानीज का भारतवर्षीय वर्णन आदि (अंग्रेजी से अनुवादित)

गद्‌य संबंधी

मनोवैज्ञानिक निबंध : यह गद्‌य लेखन की विशेष विधा है । किसी विषय वस्तु से संबंधित ज्ञान को क्रमबद्‌ध रूप से बाँधते हुए लेखन करना निबंध है । विचारपूर्वक क्रमबद्‌ध रूप से लिखी गई रचना निबंध है ।

प्रस्तुत निबंध में शुक्ल जी ने क्रोध, वैर, चिड़चिड़ाहट आदि भावों का मनोवैज्ञानिक विवेचन किया है ।

समाज को तो है । इससे उसे उचित दंड दे देने से पहले तो उसी की शिक्षा या भलाई हो जाती है फिर समाज के और लोगों के बचाव का बीज भी बो दिया जाता है । यहाँ पर भी वही बात है कि क्रोध के समय लोगों के मन में लोककल्याण की यह व्यापक भावना सदा नहीं रहा करती । अधिकतर तो क्रोध प्रतिकार के रूप में ही होता है ।

क्रोध की उग्र चेष्टाओं का लक्ष्य हानि या पीड़ा पहुँचाने के पहले आलंबन में भय का संचार करना रहता है । जिस पर क्रोध प्रकट किया जाता है वह यदि डर जाता है और नम्र होकर पश्चात्ताप करता है तो क्षमा का अवसर सामने आता है । क्रोध का गर्जन-तर्जन क्रोधपात्र के लिए भावी दुष्परिणाम की सूचना है, जिससे कभी-कभी उद्‌देश्य की पूर्ति हो जाती है और दुष्परिणाम की नौबत नहीं आती । एक की उग्र आकृति देख दूसरा किसी अनिष्ट व्यापार से विरत हो जाता है या नम्र होकर पूर्वकृत दुर्व्यवहार के लिए क्षमा चाहता है । बहुत से स्थलों पर क्रोध पर क्रोध का लक्ष्य किसी का गर्व चूर करना मात्र रहता है अर्थात दुख का विषय केवल दूसरे का गर्व या अहंकार होता है । अभिमान दूसरों के मन में या उसकी भावना में बाधा डालता है उससे वह बहुत से लोगों को यों ही खटका करता है । लोग जिस तरह हो सके-अपराध द्‌वारा, अभिमानी को नम्र करना चाहते हैं । अभिमान पर जो रोष होता है उसकी प्रवृत्ति, अभिमानी को केवल नम्र करने की रहती है उसका हानि या पीड़ा पहुँचाने का उद्‌देश्य नहीं होता । संसार में बहुत से अभिमान का उपचार अपमान द्‌वारा ही हो जाता है ।

क्रोध का वेग इतना प्रबल होता है कि कभी-कभी मनुष्य यह भी विचार नहीं करता कि जिसने दुख पहुँचाया है, उसमें दुख पहुँचाने की इच्छा थी या नहीं । इसी से कभी तो यह अचानक पैर कुचल जाने पर किसी को मार बैठता है और कभी ठोकर खाकर कंकड़-पत्थर तोड़ने लगता है । यात्रियों ने बहुत से ऐसे जंगलियों का हाल लिखा है जो रास्ते में पत्थर की ठोकर लगने पर बिना उसको चूर-चूर किए आगे नहीं बढ़ते। अधिक अभ्यास के कारण यदि कोई मनोविकार बहुत प्रबल पड़ जाता है, तो वह अंतःप्रकृति में व्यवस्था उत्पन्न कर मनुष्य को बचपन से मिलती जुलती अव्यवस्था में ले जाकर पटक देता है ।

क्रोध शांति भंग करने वाला मनोविकार है । एक का क्रोध दूसरे में भी क्रोध का संचार करता है । जिसके प्रति क्रोध प्रदर्शन होता है वह तत्काल अपमान का अनुभव करता है और इस दुख पर उसकी भी त्योरी चढ़ जाती है । यह विचार करने वाले बहुत थोड़े निकलते हैं कि हम पर जो क्रोध प्रकट किया जा रहा है, वह उचित है या अनुचित । इसी से धर्म, नीति और शिष्टाचार तीनों में क्रोध के निरोध का उपदेश पाया जाता है । संत लोग तो खलों के वचन सहते ही हैं, दुनियादार लोग भी न जाने

संभाषणीय

संत समर्थ रामदास जी द्‌वारा लिखित मन को उपदेश देने वाले 'मनाचे श्लोक' सुनिए और उसका आशय बताइए ।

श्रवणीय

'संत-महात्माओं की रचनाएँ समाज का प्रबोधन करने में सक्षम होती है', इस विषय के प्रमुख मुद्‌दे सुनाइए ।

लेखनीय

'क्षमाशीलता दुर्बलता नहीं', इस विचार पर टिप्पणी तैयार कीजिए ।

कितनी ऊँची-नीची पचाते रहते हैं । सभ्यता के व्यवहार में भी क्रोध के चिह्‌न दबाए जाते हैं । इस प्रकार का प्रतिबंध समाज की सुख-शांति के लिए बहुत आवश्यक है । पर इस प्रतिबंध की भी सीमा है । यह परपीड़कोन्मुख क्रोध तक नहीं पहुँचता ।

क्रोध के प्रेरक को दो प्रकार के दुख हो सकते हैं, अपना दुख और पराया दुख । जिस क्रोध के त्याग का उपदेश दिया जाता है वह पहले प्रकार के दुख से उत्पन्न क्रोध है । दूसरे के दुख पर उत्पन्न क्रोध बुराई की हद के बाहर समझा जाता है । क्रोधोत्तेजक दुख जितना ही अपने संपर्क से दूर होगा, उतना ही लोक में क्रोध का स्वरूप सुंदर और मनोहर दिखाई देगा । दुख से आगे बढ़ने पर भी कुछ दूर तक क्रोध का कारण थोड़ा बहुत अपना ही दुख कहा जा सकता है; जैसे, अपने या आत्मीय परिजन का दुख, इष्ट-मित्र का दुख । इसके आगे भी जहाँ तक दुख की भावना के साथ कुछ ऐसी विशेषता लगी रहेगी कि जिसे कष्ट पहुँचाया जा रहा है वह हमारे ग्राम, पुर, देश का रहने वाला है, वहाँ तक हमारे क्रोध से सौंदर्य की पूर्णता में कुछ, कसर रहेगी । जहाँ उक्त भावना निर्विशेष रहेगी वहीं सच्ची परदुखकातरता मानी जाएगी ।

बहुत दूर तक और बहुत काल से पीड़ा पहुँचाते चले आते हुए किसी घोर अत्याचारी का बना रहना ही लोक की क्षमा की सीमा है । इनके आगे क्षमा न दिखाई देगी-नैराश्य, कायरता और शिथिलता ही छाई दिखाई पड़ेगी । ऐसी गहरी उदासी की छाया के बीच आशा, उत्साह और तत्परता की प्रभा जिस क्रोधग्नि के साथ फूटती दिखाई, पड़ेगी उसके सौंदर्य का अनुभव सारा लोक करेगा ।

वैर क्रोध का प्रचार या मुरब्बा है । जिससे हमें दुख पहुँचा है उस पर यदि हमने क्रोध किया और यह क्रोध हमारे हृदय में बहुत दिनों तक टिका रहा तो वह वैर कहलाता है । इस स्थायी रूप में टिक जाने के कारण क्रोध का वेग और उग्रता तो धीमी पड़ जाती हैं; पर लक्ष्य को पीड़ित करने की प्रेरणा बराबर बहुत काल तक हुआ करती है । क्रोध अपना बचाव करते हुए शत्रु को पीड़ित करने की युक्ति आदि सोचने का समय प्रायः नहीं देता, पर वैर उसके लिए बहुत समय देता है । पूछिए तो क्रोध और वैर का भेद केवल कालकृत है । दुख पहुँचाने के साथ ही दुखदाता को पीड़ित करने की प्रेरणा करने वाला मनोविकार क्रोध और कुछ काल बीत जाने पर प्रेरणा करने वाला भाव वैर है । किसी ने आपको गाली दी यदि आपने उसी समय उसे मार दिया तो आपने क्रोध किया । मान लीजिए कि वह गाली देकर भाग गया और दो महीने बाद आपको कहीं मिला । अब यदि आपने उससे बिना फिर गाली सुने मिलने के साथ ही उसे मार दिया तो यह आपका वैर निकालना हुआ । इस विवरण से स्पष्ट है कि वैर उन्हीं प्राणियों में होता है जिनमें

आसपास

आपके परिवेश में जो 'हास्य क्लब' चलाया जाता है, उसकी जानकारी लेकर उससे होने वाले लाभ पर टिप्पणी लिखिए ।

मौलिक सृजन

'मन, वाणी, व्यवहारों में संयम ये मानवता के सोपान हैं' इसपर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

धारणा अर्थात भावों के संचय की शक्ति होती है । पशु और बच्चे किसी से वैर नहीं मानते । चूहे और बिल्ली के संबंध का 'वैर' नाम अलंकारिक है । आदमी का न आम-अंगूर से कुछ वैर है न भेड़-बकरे से । पशु और बच्चें दोनों क्रोध करते है और थोड़ी देर के बाद भूल जाते हैं ।

✻ क्रोध का एक हल्का रूप है चिड़चिड़ाहट, जिसकी व्यंजना प्रायः शब्दों ही तक रहती है । इसका कारण भी वैसा उग्र नहीं होता । कभी-कभी चित्त व्यग्र रहने, किसी प्रवृत्ति में बाधा पड़ने या किसी बात का ठीक सुभीता न बैठने के कारण ही लोग चिड़चिड़ा उठते हैं । ऐसे सामान्य कारणों के अवसर बहुत अधिक आते रहते हैं इससे चिड़चिड़ाहट स्वभावगत होने की संभावना बहुत अधिक रहती है । किसी मत, संप्रदाय या संस्था के भीतर निरूपित आदर्शों पर ही अनन्य दृष्टि रखने वाले बाहर की दुनिया देख-देखकर अपने जीवन भर चिड़चिड़ाते चले जाते हैं । जिधर निकलते हैं, रास्ते भर मुँह बिगड़ा रहता है । चिड़चिड़ाहट एक प्रकार की मानसिक दुर्बलता है, इसी से रोगियों और बुड्ढो में अधिक पाई जाती है । इसका स्वरूप उग्र और भयंकर न होने से यह बहुतों के-विशेषतः बालकों के-विनोद की एक सामग्री भी हो जाती है । बालकों को चिड़चिड़े बुड्ढ़ों को चिढ़ाने में बहुत आनंद आता है और कुछ विनोदी बुड्ढे भी चिढ़ने की नकल किया करते हैं । ✻

—०—

('चिंतामणि' से)

✻ कृति कीजिए :-

(१) चिड़चिड़हाट के कारण

(२) एक शब्द में उत्तर लिखिए :-

(अ) क्रोध का एक हल्का रूप = ...

(ब) बच्चों को इन्हें चिढ़ाने में आनंद आता है = ...

शब्द संसार

क्रोध (पुं.सं.) = रोष, गुस्सा
गर्जन (पुं.सं.) = गरजना
तर्जन (पुं.सं.) = बिगड़ना, डाँटना
त्योरी (स्त्री.स.) = दृष्टि, निगाह
निर्विशेष (कि.वि.) = एकटक
परदुखकातरता (भा.सं.) = दूसरों के दुख से होने वाला दुख

पाठ के आँगन में

(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) उत्तर लिखिए

१. क्रोध के प्रेरक प्रकार

२. क्रोध के रूप

(२) क्रोध मनुष्य का मानसिक स्वास्थ्य बिगाड़ता है', इस बारे में अपने विचार लिखिए ।

पाठ से आगे

चरित्र समृद्ध बनाने के लिए जिन गुणों की आवश्यकता है, उनकी सूची बनाइए ।

रचना बोध

....
....
....

भाषा बिंदु

(१) 'शिक्षक दिवस' पर उत्कृष्ट कार्य हेतु विद्‌यालय द्‌वारा शिक्षक को सम्मानपत्र देकर उनका अभिनंदन किया जा रहा है । इस सम्मानपत्र से अव्यय ढूँढ़कर उनसे अन्य वाक्य बनाइए :-

सम्मानपत्र

श्री/श्रीमती. ....
विद्‌यालय का नाम : ....
पता : - ....
सम्माननीय,

आज डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के जन्म दिन 'शिक्षक दिवस' पर आयोजित अभिनंदन समारोह में हम आपको अपने बीच पाकर हर्षित व गौरवान्वित हैं ।

आपके मार्गदर्शन में प्राप्त उपलब्धियों पर संपूर्ण विद्‌यालय, परिवेश व समाज को गर्व है । आपने न केवल विद्‌यार्थियों की बहुमुखी प्रतिभा और असाधारण योग्यता को उभारा वरन प्रेरणाप्रद सफलता भी दिलवाई । आपके इस कार्य तथा आपके अन्य अति विशिष्ट कार्यों के लिए विद्‌यालय आप का अभिनंदन करते हुए गर्व का अनुभव करता । आपके सहयोग से विद्‌यालय का विकास अक्षुण्ण होता रहा है ।

हे ! गुरुवर्य, आप सदैव स्वस्थ-संपन्न रहें एवं दीर्घायु हों, ऐसी हम सबकी आत्मिक कामना है ।

अनंत हार्दिक शुभकामनाओं सहित ...

दिनांक :- ५ सितंबर २०१७

शिक्षक दिवस
स्थान :- विद्‌यालय सभागार
समय :- प्रात: १०:३० बजे

विद्‌यालय प्रमुख
क, ख, ग

(२) निर्देशानुसार अव्यय परिवर्तित करके लिखिए :-

क्र.	अव्यय भेद	अव्यय शब्द	अन्य वाक्य
१.	क्रिया विशेषण		
२.	संबंध बोधक		
३.	समुच्चय बोधक		
४.	विस्मयादि बोधक वाचक		

११. अद्‌भुत वीर

– रामधारी सिंह 'दिनकर'

कल्पना पल्लवन

'युग की अवहेलना शूरमा कब तक सह सकता है', इस पंक्ति का विस्तार कीजिए ।

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● विद्‌यार्थियों से भारतीय शहीद जवानों के नाम पूछिए । ● घटनास्थल के बारे में कहलवाएँ । ● घटित घटना के बारे में कहने के लिए प्रेरित करें । ●विद्‌यार्थियों को इन घटनाओं से प्राप्त प्रेरणा बताने के लिए कहें ।

'जय हो' जग में जहाँ भी, नमन पुनीत अनल को,
जिस नर में भी बसे, हमारा नमन तेज को, बल को ।
किसी वृंत पर खिले विपिन में, पर नमस्य है फूल,
सुधी खोजते नहीं गुणों का आदि, शक्ति का मूल ।

ऊँच-नीच का भेद न माने, वही श्रेष्ठ ज्ञानी है,
दया-धर्म जिसमें हो, सबसे वही पूज्य प्राणी है ।
क्षत्रिय वही, भरी हो जिसमें निर्भयता की आग,
सबसे श्रेष्ठ वही ब्राह्मण है, हो जिसमें तप-त्याग ।

तेजस्वी सम्मान खोजते, नहीं गोत्र बतलाके,
पाते है जग से प्रशस्ति अपना करतब दिखलाके ।
हीन मूल की ओर देख जग गलत कहे या ठीक,
वीर खींचकर ही रहते हैं इतिहासों में लीक ।

जिसके पिता सूर्य थे, माता कुंती सती कुमारी,
उसका पलना हुई धार पर बहती हुई पिटारी ।
सूत वंश में पला, चखा भी नहीं जननि का क्षीर,
निकला कर्ण सभी युवकों में तब भी अदुभत वीर ।

तन से समरशूर, मन से भावुक, स्वभाव से दानी,
जाति-गोत्र का नहीं, शील का, पौरुष का अभिमानी ।
ज्ञान-ध्यान, शस्त्रास्त्र का कर सम्यक अभ्यास,
अपने गुण का किया कर्ण ने आप स्वयं सुविकास ।

परिचय

जन्म : २३ सितंबर १९०८ सिमरिया, मुंगेर (बिहार) **मृत्यु :** २४ अप्रैल १९७४ चेन्नई (तमिलनाडु)

परिचय : रामधारी सिंह 'दिनकर' जी अपने युग के प्रखरतम कवि के साथ-साथ सफल और प्रभावशाली गद्य लेखक भी थे । आपने निबंध के अतिरिक्त डायरी, संस्मरण, दर्शन व ऐतिहासिक तथ्यों के विवेचन भी लिखे हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी (खंड काव्य) टेसू राजा अड़े-अड़े (बालसाहित्य) परशुराम की प्रतीक्षा, रेणुका, नील कुसुम आदि (काव्य संग्रह), संस्कृति के चार अध्याय, चेतना की शिखा, रेती के फूल आदि (निबंध), वट पीपल (संस्मरण), देश-विदेश, मेरी यात्राएँ (यात्रा वर्णन), आत्मा की आँखें (अनुवाद) ।

पद्‌य संबंधी

खंडकाव्य : हिंदी साहित्य में यह प्रबंध काव्य का रूप है । मानव जीवन की किसी विशेष घटना को लेकर लिखा गया काव्य 'खंडकाव्य' होता है । इसमें केवल प्रमुख कथा होती है । प्रासंगिक कथाओं को इसमें स्थान नहीं मिल पाता है । कम से कम आठ सर्गों के प्रबंध काव्य को खंडकाव्य माना जाता है ।

प्रस्तुत काव्यांश 'रश्मिरथी' खंडकाव्य से लिया गया है । इसमें कवि ने कर्ण के बहाने तेज को नमन, समाज में समानता, कुलीनता छोड़कर योग्यता, कर्मठता को प्रधानता देने की प्रेरणा दी है ।

अलग नगर के कोलाहल से, अलग पुरी-पुरजन से,
कठिन साधना में उद्योगी लगा हुआ तन-मन से ।
निज समाधि में निरत, सदा निज कर्मठता में चूर,
वन्य कुसुम-सा खिला कर्ण जग की आँखों से दूर ।
नहीं फूलते कुसुम मात्र राजाओं के उपवन में,
अमित वार खिलते वे पुर से दूर कुंज कानन में ।
समझे कौन रहस्य ? प्रकृति का बड़ा अनोखा हाल
गुदड़ी में रखती चुन-चुन कर बड़े कीमती लाल ।
जलद-पटल में छिपा, किंतु रवि कबतक रह सकता है ?
युग की अवहेलना शूरमा कबतक सह सकता है ?
पाकर समय एक दिन आखिर उठी जवानी जाग,
फूट पड़ी सबके समक्ष पौरुष की पहली आग ।

रंग-भूमि में अर्जुन था जब समाँ अनोखा बाँधे,
बढ़ा भीड़ भीतर से सहसा कर्ण शरासन साधे ।
कहता हुआ, ''तालियों से क्या रहा गर्व में फूल ?
अर्जुन ! तेरा सुयश अभी क्षण में होता है धूल ।

—०—

('रश्मिरथी' से)

शब्द संसार

पुनीत (पुं.सं) = पवित्र
अनल (पुं.सं) = अग्नि
करतब (पुं.सं) =कर्तव्य
वृंत (पु.) = वह पतला डंठल जिस पर फूल लगा रहता है ।
विपिन (पुं.सं.) = जंगल
क्षीर (पुं.सं.) = दूध
शरासन (पुं.सं.) = धनुष
शूरमा (पुं.सं.) =वीर

लेखनीय

'मैं लाल किला बोल रहा हूँ...' निबंध लिखिए ।

श्रवणीय

'दानवीर कर्ण' के बारे में कहानी सुनिए - महत्त्वपूर्ण अंश सुनाइए ।

आसपास

भारत के महत्त्वपूर्ण दस ऐतिहासिक स्थलों से संबंधित जानकारी अंतरजाल से प्राप्त कर हस्तलिखित पत्रिका बनाइए ।

संभाषणीय

किसी शहीद जवान के शौर्य संबंधी घटना का वर्णन कीजिए ।

विषय से...

दूध से दही बनने की प्रक्रिया पढ़िए और वैज्ञानिक कारण बताइए ।

नौवीं कक्षा, पृष्ठ ८८, विज्ञान और प्रौद्योगिकी,

पठनीय

हमारे देश की राजधानी दिल्ली में मनाए जाने वाले गणतंत्र दिवस समारोह का वर्णन समाचारपत्र से पढ़िए ।

पाठ से आगे

'हमारे देश की ऐतिहासिक वास्तुएँ हमारी धरोहर हैं ।' इनकी सुरक्षा हेतु उपायों की सूची बनाइए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :–

(क) संजाल पूर्ण कीजिए :

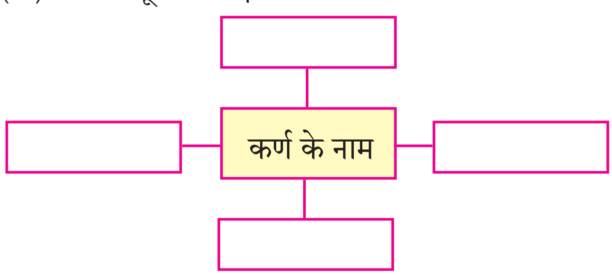

(ग) आकृति पूर्ण कीजिए :

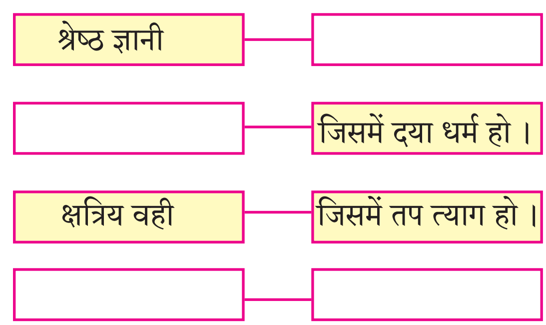

(ख) प्रवाह तख्ता पूर्ण कीजिए :

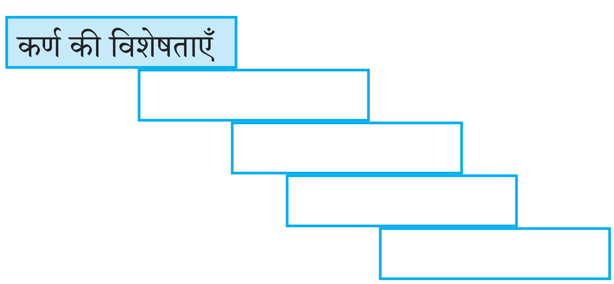

(घ) साम्य-भेद लिखिए :

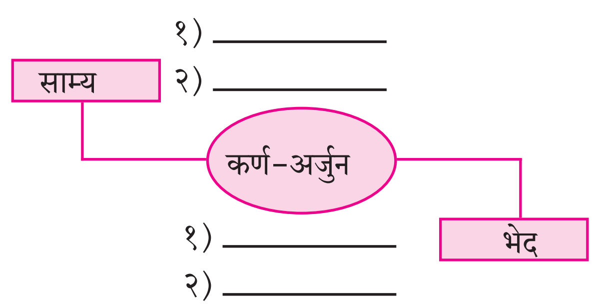

(च) भिन्नार्थक शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

(छ) तुकांत शब्द लिखिए ।

(२) ''समझे कौन रहस्य ? प्रकृति का बड़ा अनोखा हाल'' काव्य पंक्ति से कर्ण की विवशता स्पष्ट कीजिए ।

(३) कविता में प्रयुक्त विरामचिह्नों के नाम लिखकरउनका अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

रचना बोध

....

....

....

१२. सच का सौदा

–सुदर्शन

ईश्वरचंद्र विदयासागर जी की किसी कथा पर संवाद तैयार करके कक्षा में सुनाइए :–

श्रवणीय

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● विद्‍यार्थियों से कहानी का नाम पूछें । ● कहानी के पात्रों के नाम बताने के लिए कहें ।
● इसी कहानी को क्यों चुना इसका कारण जानें । ● संवाद प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करें ।

विद्‍यार्थी–परीक्षा में फेल होकर रोते हैं, सर्वदयाल पास होकर रोए । जब तक पढ़ते थे, तब तक कोई चिंता नहीं थी; खाते थे; दूध पीते थे । अच्छे–अच्छे कपड़े पहनते, तड़क–भड़क से रहते थे । उनके मामा एक ऊँचे पद पर नियुक्त थे। उन्होंने चार वर्ष का खर्च देना स्वीकार किया परंतु यह भी साथ ही कह दिया– ''देखो, रुपया लहू बहाकर मिलता है । मैं वृद्‍ध हूँ, जान मारकर चार पैसे कमाता हूँ ।''

सर्वदयाल ने वृद्‍ध मामा की बात का पूरा–पूरा ध्यान रखा। सर्वदयाल बी.ए. की डिग्री लेकर घर को चले । जब तक पढ़ते थे सैकड़ों नौकरियाँ दिखाई देती थीं । परंतु पास हुए, तो कोई ठिकाना न दीख पड़ा ।

दोपहर का समय था, सर्वदयाल अखबार में 'वान्टेड' (wanted) देख रहे थे । एकाएक एक विज्ञापन देखकर उनका हृदय धड़कने लगा । अंबाले के प्रसिद्‍ध रईस रायबहादुर हनुमंतराय सिंह एक मासिक पत्र 'रफ़ीक हिंद' के नाम से निकालने वाले थे । उनको उसके लिए एक संपादक की आवश्यकता थी । वेतन पाँच सौ रुपये मासिक। सर्वदयाल बैठे थे, खड़े हो गए और सोचने लगे– ''यदि यह नौकरी मिल जाए तो द्ररिद्रता कट जाए । मैं हर प्रकार से इसके योग्य हूँ । ''कंपित कर से प्रार्थना–पत्र लिखा और रजिस्ट्री करा दिया परंतु बाद में सोचा– व्यर्थ खर्च किया । मैं साधारण ग्रेजुएट हूँ, मुझे कौन पूछेगा ? पाँच सौ रुपया तनखाह है, सैकड़ों उम्मीदवार होंगे और एक से एक बढ़कर । इन्ही विचारों में कुछ दिन बीत गए । कभी आशा कल्पनाओं की झड़ी बाँध देती थी, कभी निराशा हृदय में अंधकार भर देती थी । पंद्रह दिन बीत गए, परंतु कोई उत्तर न आया ।

जब तीसरा सप्ताह भी बीत गया और कोई उत्तर न आया तो सर्वदयाल निराश हो गए और समझ गए कि वह मेरी भूल थी । इतने ही में तार के चपरासी ने पुकारा । सर्वदयाल का दिल उछलने लगा । जीवन के भविष्य में आशा की लता दिखाई दी । लपके–लपके दरवाजे पर गए, और तार देखकर उछल पड़े। लिखा था– ''स्वीकार है, आ जाओ ।''

हृदय आनंद से गद्‍गद हो रहा था और मन में सैकड़ों विचार उठ रहे थे । पत्र–संपादन उनके लिए जातीय सेवा का उपयुक्त साधन था । सोचते थे– ''यह मेरा सौभाग्य है, जो ऐसा अवसर मिला । बैग में कागज और

परिचय

जन्म : १८९६ सियालकोट (अविभाजित भारत)

मृत्यु : १९६७

परिचय : आपका मूल नाम पं. बद्रीनाथ भट्‍ट था । गद्‍य–पद्‍य पर समान अधिकार रखने वाले सुदर्शन जी का दृष्टिकोण सुधारवादी एवं आदर्शवादी है । 'तेरी गठरी में लागा चोर मुसाफिर जाग जरा' और 'बाबा मन की आँखें खोल' आपके प्रसिद्‍ध गीत हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : भागवंती (उपन्यास) हार की जीत, पत्थरों का सौदागर, साइकिल की सवारी आदि कहानियाँ सुदर्शन सुधा, सुदर्शन सुमन, गल्पभंडारी, सुप्रभात, पनघट (कहानी संग्रह) ऑनरेरी (प्रहसन)

गद्‍य संबंधी

चरित्रात्मक कहानी : जीवन की किसी घटना का रोचक, प्रवाही एवं चरित्रपूर्ण वर्णन चरित्रात्मक कहानी है ।

प्रस्तुत चरित्रात्मक कहानी में सुदर्शन जी ने स्वाभिमान से जीने, परिस्थितियों के सामने डटे रहने और सिद्‍धांतों से समझौता न करने की बात की है । आपका मानना है कि सत्य हमेशा विजयी होता है ।

पेंसिल निकालकर पत्र की व्यवस्था ठीक करने लगे। पहले पृष्ठ पर क्या हो? संपादकीय वक्तव्य कहाँ दिए जाएँ? सार और सूचना के लिए कौन-सा स्थान उपयुक्त होगा? 'टाइटिल' का स्वरूप कैसा हो? संपादक का नाम कहाँ रहे? इन सब बातों को सोच-सोचकर लिखते गए। एकाएक विचार आया- कविता के लिए कोई स्थान न रक्खा, और कविता ही एक ऐसी वस्तु है, जिससे पत्र की शोभा बढ़ जाती है। जिस प्रकार भोजन के साथ चटनी एक विशेष स्वाद देती है, उसी प्रकार विद्वत्ता-पूर्ण लेख और गंभीर विचारों के साथ कविता एक आवश्यक वस्तु है। उसे लोग रुचि से पढ़ते हैं। सर्वदयाल को निश्चय हो गया कि इसके बिना पत्र को सफलता न होगी।

सर्वदयाल बैठे थे। खड़े हो गए और पत्र के तैयार किए हुए नोट गद्दे पर रखकर इधर-उधर टहलने लगे। फिर बैठकर काग़ज पर सुंदर अक्षरों में लिखा- पंडित सर्वदयाल बी.ए., एडिटर 'रफ़ीक हिंद', अंबाला।

वे संपादन के स्वप्न देखा करते थे। अब आशा की हरी-हरी भूमि सामने आई तो उनके कानों में वहीं शब्द जो उस काग़ज पर लिखे थे:-

पंडित सर्वदयाल बी.ए., एडिटर 'रफ़ीक हिंद', अंबाला।

देर तक इसी धुन और आनंद में मग्न रहने के पश्चात पता नहीं कितने बजे उन्हें नींद आई परंतु आँखें खुलीं तो दिन चढ़ चुका था और गाड़ी अंबाला स्टेशन पर पहुँच चुकी थी। इतने में एक नवयुवक ने पास आकर पूछा-''क्या आप रावलपिंडी से आ रहे हैं ?''

''हाँ, मैं वहीं से आ रहा हूँ। तुम किसे पूछते हो ?''

''ठाकुर साहब ने गाड़ी भेजी है।''

सर्वदयाल का हृदय कमल की नाई खिल गया। आज तक कभी बग्घी में न बैठे थे। उचक कर सवार हो गए और आस-पास देखने लगे। गाड़ी चली और एक आलीशान कोठी के हाते में जाकर रुक गई। सर्वदयाल का हृदय धड़कने लगा। कोचवान ने दरवाजा खोला और आदर से एक तरफ खड़ा हो गया। सर्वदयाल रूमाल से मुँह पोंछते हुए नीचे उतरे और बोले- ''ठाकुर साहब किधर हैं ?''

कोचवान ने उत्तर में एक मुंशी को पुकारकर बुलाया और कहा, ''बाबू साहब रावलपिंडी से आए हैं। ठाकुर साहब के पास ले जाओ।''

''रफ़ीक हिंद'' के खर्च का ब्योरा इसी मुंशी ने तैयार किया था, इसलिए तुरंत समझ गया कि यह पंडित सर्वदयाल हैं, जो 'रफ़ीक हिंद' संपादन के लिए चुने गए हैं। आदर से बोला-''आइए साहब !''

पंडित सर्वदयाल मुंशी के पीछे चले। मुंशी एक कमरे के आगे रूक गए और रेशमी पर्दा उठाकर बोले- ''चलिए, ठाकुर साहब बैठे हैं !''

ठाकुर हनुमंतराय सिंह तीस-बत्तीस वर्ष के सुंदर नवयुवक थे।

संभाषणीय

मराठी भाषा के प्रसिद्ध कवि कुसुमाग्रज लिखित 'कणा' कविता सुनाइए और उसका अर्थ बताइए।

आसपास

करियर से संबंधित विविध जानकारी प्राप्त कीजिए और क्षेत्रानुसार सूची बनाइए।

मुस्कराते हुए आगे बढ़े और बड़े आदर से सर्वदयाल से हाथ मिलाकर बोले– ''आप आ गए। कहिए, राह में कोई कष्ट तो नहीं हुआ ।''

सर्वदयाल ने धड़कते हुए हृदय से उत्तर दिया, ''जी नहीं ।''

''आपके लेख बहुत समय से देख रहा हूँ । ईश्वर की बड़ी कृपा है जो आज दर्शन भी हुए । निस्संदेह आपकी लेखनी में आश्चर्यमयी शक्ति है ।''

सर्वदयाल पानी–पानी हो गए। अपनी प्रशंसा सुनकर उनके हर्ष का पारावार न रहा। तो भी सँभलकर बोले– ''यह आप की कृपा है ?''

ठाकुर साहब ने गंभीरता से कहा – ''यह नम्रता आपकी योग्यता के अनुकूल है परंतु मेरी सम्मति में आप सरीखा लेखक पंजाब भर में नहीं । 'रफ़ीक हिंद' का सौभाग्य है कि आप–सा संपादक उसे प्राप्त हुआ ।''

सर्वदयाल के हृदय में जो आशंका हो रही थी, वह दूर हो गई। समझे, मैदान मार लिया। वे बात का रुख बदलने को बोले– ''पत्रिका कब से निकलेगी ?'' ठाकुर साहब ने हँसकर उत्तर दिया– ''यह प्रश्न मुझे आप से करना चाहिए था।''

* उस दिन १५ फरवरी थी। सर्वदयाल सोचकर बोले –''पहला अंक पहली अप्रैल को निकल जाए ?'' ''परंतु इतने थोड़े समय में लेख मिल जाएँगे या नहीं, इस बात का विचार आप कर लीजिएगा ।'' ''इसकी चिंता न कीजिए, मैं आज से ही काम आरंभ किए देता हूँ । परमात्मा ने चाहा, तो आप पहले ही अंक को देखकर प्रसन्न हो जाएँगे ।''

अप्रैल की पहली तारीख को 'रफ़ीक हिंद' का प्रथम अंक निकला, तो पंजाब के पढ़े–लिखे लोगों में शोर मच गया और पंडित सर्वदयाल के नाम की चर्चा होने लगी। उनके लेख लोगों ने पहले भी पढ़े थे, परंतु 'रफ़ीक हिंद' के प्रथम अंक ने तो उनको देश के प्रथम श्रेणी के संपादकों की पंक्ति में ला बिठाया । पत्र क्या था, सुंदर और सुगंधित फूलों का गुच्छा था, जिसकी एक–एक कुसुम–कलिका चटक–चटक कर अपनी मोहिनी वासना से पाठकों के मनों को मुग्ध कर रही थी । एक समाचार–पत्र ने समालोचना करते हुए लिखा– ''रफ़ीक हिंद'' का प्रथम अंक प्रकाशित हो गया है ऐसी शान से कि देखकर चित्त प्रसन्न हो जाता है । *

ठाकुर हनुमंतराय सिंह ने ये समालोचनाएँ देखीं, तो हर्ष से उछल पड़े । वह मोटर में बैठकर 'रफ़ीक हिंद' के कार्यालय में गए और पंडित सर्वदयाल को बधाई देकर बोले ''मुझे यह आशा न थी कि हमें इतनी सफलता हो सकेगी ।''

पं.सर्वदयाल ने उत्तर दिया– ''मेरे विचार में यह कोई बड़ी सफलता नहीं ।'' ठाकुर साहब ने कहा– ''आप कहें परंतु स्मरण रखिए, वह दिन दूर नहीं जब अखबारी दुनिया आपको पंजाब का शिरोमणि स्वीकार करेगी ।''

इसी प्रकार एक वर्ष बीत गया 'रफ़ीक हिंद' की कीर्ति देश भर में फैल

भा. कि. खडसे लिखित 'सत्य की विजय' कहानी पढ़िए ।

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

(१) परिणाम लिखिए :
'रफीक हिंद' का पहले अंक का परिणाम
१)......... २).........
३)......... ४).........

(२) गद्यांश में प्रयुक्त लेखन, प्रकाशन से संबंधित शब्दों को ढूँढ़कर लिखिए :

(३) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :

अ	आ
फूल	झुंड
पशु–पक्षी	पुंज
बच्चें	गुच्छा
तारें	टोली

(४) 'अगर मैं समाचार पत्र का संपादक होता तो ...' लिखिए ।

गई, और पंडित सर्वदयाल की गिनती बड़े आदमियों में होने लगी थी। उन्हें जीवन एक आनंदमय यात्रा प्रतीत होता था कि इतने में भाग्य ने पाँसा पलट दिया ।

अंबाला की म्युनिस्पैलिटी के मेंबर चुनने का समय समीप आया, तो ठाकुर हनुमंतराय सिंह भी एक पक्ष की और से मेंबरी के लिए प्रयत्न करने लगे। अमीर पुरुष थे, रुपया-पैसा पानी की तरह बहाने को उद्‌यत हो गए। उनके मुकाबले में लाला हशमतराय खड़े हुए। हाइस्कूल के हेडमास्टर, वेतन थोड़ा लेते थे कपड़ा साधारण पहनते थे। कोठी में नहीं वरन् नगर की एक गली में उनका आवास था परंतु जाति की सेवा के लिए हर समय उद्‌यत रहते थे।

ठाकुर हनुमंतराय सिंह, जातीय सेवा के अभिलाषी तो थे परंतु उनके वचन और कर्म में बड़ा अंतर था।

रविवार के दिन पंडित सर्वदयाल का भाषण सुनने के लिए सहस्त्रों लोग एकत्र हो रहे थे। विज्ञापन में व्याख्यान का विषय 'म्युनिसिपल इलेक्शन' था । पंडित सर्वदयाल क्या कहते हैं, यह जानने के लिए लोग अधीर हो रहे थे । लोगों की आँखें इस ताक में थी कि देखें पंडित जी सत्य को अपनाते हैं या झूठ की ओर झुकते हैं ? न्याय का पक्ष लेते हैं, या रुपये का ? इतने में पंडित जी प्लेटफार्म पर आए। हाथों ने तालियों से स्वागत किया । कान प्लेटफार्म की ओर लगाकर सुनने लगे। पंडित जी ने कहा-

''मैं यह नहीं कहता कि आप अमुक मनुष्य को अपना वोट दें । किंतु इतना अवश्य कहता हूँ कि जो कुछ करें, समझ-सोचकर करें ।

ठाकुर हनुमंतराय सिंह को पूरा-पूरा विश्वास था कि पंडित जी उनके पक्ष में बोलेंगे परंतु व्याख्यान सुनकर उनके तन में आग लग गई । कुछ मनुष्य ऐसे भी थे, जो पंडित जी की लोकप्रियता देखकर उनसे जलते थे । उन्हें मौका मिल गया, ठाकुर साहब के पास जाकर बोले- ''यह बात क्या है, जो वह आपका अन्न खाकर आप ही के विरूद्‌ध बोलने लग गया ?''

ठाकुर साहब ने उत्तर दिया- ''मैंने उसके साथ कोई बुरा व्यवहार नहीं किया । जाने उसके मन में क्या समाई है ?''

वे इसके लिए पहले ही से तैयार थे । उनके आने पर ठाकुर साहब ने कहा- ''क्यों पंडित जी! मैंने क्या अपराध किया है ?''

पंडित सर्वदयाल का हृदय धड़कने लगा परंतु साहस से बोले- ''मैंने कब कहा है कि आपने कोई अपराध किया है ?''

''तो इस भाषण का क्या मतलब है ?''

'' यह प्रश्न सिद्‌धांत का है ।''

'' तो मेरे विरुद्‌ध व्याख्यान देंगे आप ?''

पंडित सर्वदयाल ने भूमि की ओर देखते हुए उत्तर दिया- ''मैं

मौलिक सृजन

''सत्यमेव जयते'' इस विचार को अपने शब्दों में प्रकट कीजिए

आपकी अपेक्षा लाला हशमतराय को मेंबरी के लिए अधिक उपयुक्त समझता हूँ ।''

'' यह सौदा आपको बहुत महँगा पड़ेगा ।

पंडित सर्वदयाल ने सिर ऊँचा उठाकर उत्तर दिया- ''मैं इसके लिए सब कुछ देने को तैयार हूँ ।''

ठाकुर साहब इस साहस को देखकर दंग रह गए और बोले- ''नौकरी और प्रतिष्ठा भी ?''

'' हाँ, नौकरी और प्रतिष्ठा भी ।''

'' उस, तुच्छ, उद्धत, कल के छोकरे हशमतराय के लिए ?''

'' नहीं, सच्चाई के लिए ।''

ठाकुर साहब को ख्याल न था कि बात बढ़ जाएगी, न उनका यह विचार था कि इस विषय को इतनी दूर ले जाएँ। परंतु जब बात बढ़ गई तो पीछे न हट सके, गरजकर बोले- ''यह सच्चाई यहाँ न निभेगी । क्या तुम समझते हो कि इन भाषणों से मैं मेंबर न बन सकूँगा ?''

'' नहीं,यह बात तो नहीं समझता ।''

'' तो फिर तुम अकड़ते किस बात पर हो ?''

'' यह मेरा कर्तव्य है। उसे पूरा करना मेरा धर्म है ।'' फल परमेश्वर के हाथ में है ।''

ठाकुर साहब ने मुँह मोड़ लिया। पंडित सर्वदयाल ताँगे पर जा बैठे और कोचवान से बोले- ''चलो ।''

इसके दूसरे दिन पंडित सर्वदयाल ने त्यागपत्र भेज दिया ।

संसार की गति विचित्र है। जिस सच्चाई ने उन्हें एक दिन सुख-संपति के दिन दिखाए थे, उसी सच्चाई के कारण नौकरी करते समय पंडित सर्वदयाल प्रसन्न हुए थे। छोड़ते समय उससे भी प्रसन्न हुए ।

परंतु लाला हशमतराम ने यह समाचार सुन तो अवाक रह गए ।

वह भागे-भागे पंडित सर्वदयाल के पास जाकर बोले- ''भाई, मैंने मेंबरी छोड़ी, तुम अपना त्यागपत्र लौटा लो ।''

पंडित सर्वदयाल के मुख-मंडल पर एक अपूर्व तेज की आभा दमकने लगी,जो इस मायावी संसार में कहीं-कहीं ही देख पड़ती है। उन्होंने धैर्य और दृढ़ता से उत्तर दिया- ''यह असंभव है ।''

'' क्या मेरी मेंबरी का इतना ही खयाल है ?''

'' नहीं, यह सिद्धांत का प्रश्न है ।''

उन्होंने पत्र खोलकर पढा ऑर कहा-''मुझे पहले ही आशा थी ।''

लाला हशमतराय ने पूछा-''क्या है ? देखूँ ।''

'' त्यागपत्र स्वीकार हो गया ।''

ठाकुर हनुमंतराय सिंह ने सोचा, यदि अब भी सफलता न हुई, तो नाक

लेखनीय

अपने विद्‌यालय में मनाए गए ''वाचन प्रेरणा दिवस'' कार्यक्रम का वृतांत लिखिए ।

कट जाएगी । धनवान पुरुष थे, थैली का मुँह खोल दिया ।

परंतु लाला हशमतराय की ओर से न तो ताँगा दौड़ता था, न लड्डू बँटते थे । हाँ दो चार सभाएँ अवश्य हुईं, जिनमें पंडित सर्वदयाल ने धारा-प्रवाह व्याख्यान दिए, इलेक्शन का दिन आ पहुँचा । ठाकुर हनुमंतराय सिंह और लाला हशमतराय दोनों के हृदय धड़कने लगे, जिस प्रकार परीक्षा का परिणाम निकलते समय विद्‌यार्थी अधीर हो जाते हैं। दोपहर का समय था, पर्चियों की गिनती हो रही थी । ठाकुर हनुमंतराय के आदमी फूलों की मालाएँ, विक्टोरिया बैंड और आतशबाजी के गोले लेकर आए थे । उनको पूरा-पूरा विश्वास था कि ठाकुर साहब मेंबर बन जाएँगे परिणाम निकला, तो उनकी तैयारियाँ धरी-धराई रह गईं । लाला हशमतराय के वोट अधिक थे ।

इसके पंद्रहवें दिन पंड़ित सर्वदयाल रावलपिंडी को रवाना हुए ।

कैसी शोकजनक और हृदयद्रावी घटना है कि जिसकी योग्यता पर समाचार पत्रों के लेख निकलते हों, जिसकी वक्तृताओं पर वाग्मिता निछावर होती हो, जिसका सत्य स्वभाव अटल हो, उसको आजीविका चलाने के लिए केवल पाँच सौ रुपये की पूँजी से दुकान करनी पड़े। निस्संदेह यह सभ्य समाज का दुर्भाग्य है !

प्रातःकाल का समय था। पंडित सर्वदयाल अपनी दुकान पर बैठे 'रफ़ीक हिंद' का नवीन अंक देख रहे थे । जैसे एक माली सिरतोड़ परिश्रम से फूलों की क्यारियाँ तैयार करे, और उनको कोई दूसरा माली नष्ट कर दे ।

इतने में उनकी दुकान के सामने एक मोटरकार आकर रुकी और उसमें से ठाकुर हनुमंतराय सिंह उतरे। पंडित सर्वदयाल चौंक पड़े। ख्याल आया- ''आँखें कैसे मिलाऊँगा । एक दिन वह था कि इनमें प्रेम का वास था, परंतु आज उसी स्थान पर लज्जा का निवास है ।''

ठाकुर हनुमंतराय ने पास आकर कहा- ''अहा! पंडित जी बैठे हैं । बहुत देर के बाद दर्शन हुए। कहिए क्या हाल है ?'' पंडित सर्वदयाल ने धीरज से उत्तर दिया- ''अच्छा है। परमात्मा की कृपा है।''

'' यह दुकान अपनी है क्या ?''

'' जी हाँ ।''

'' कब खोली ?''

'' आठ मास के लगभग हुए हैं ।''

ठाकुर साहब ने उनको चुभती हुई दृष्टि से देखा और कहा- ''यह काम आपकी योग्यता के अनुकूल नहीं है ।'' पंडित सर्वदयाल ने बेपरवाही से उत्तर किया- ''संसार में बहुत से मनुष्य ऐसे हैं, जिनको वह करना पड़ता हैं, जो उनके योग्य नहीं होता। मैं भी उनमें से एक हूँ ।''

''आमदनी अच्छी हो जाती है ?''

पंडित सर्वदयाल अभी तक यही समझे हुए थे कि ठाकुर साहब मुझे जलाने के लिए आए हैं परंतु इन शब्दों से उनकी शंका दूर हो गई। अंधकार-

आवृत्त आकाश में किरण चमक उठी । उन्होंने ठाकुर साहब के मुख की ओर देखा । वहाँ धीरता, प्रेम और लज्जा तथा पश्चाताप का रंग झलकता था। आशा ने निश्चय का स्थान लिया । सकुचाए हुए बोले– ‘‘यह आपकी कृपा है ! मैं तो ऐसा नहीं समझता।’’

ठाकुर साहब अब न रह सके । उन्होंने पंडित सर्वदयाल को गले से लगा लिया और कहा– ‘‘मैंने तुम पर बहुत अन्याय किया है। मुझे क्षमा कर दो । ‘रफ़ीक हिंद’ को सँभालो, आज से मैं तुम्हें छोटा भाई समझता हूँ । परमात्मा करे तुम पहले की तरह सच्चे, विश्वासी, न्यायप्रिय और दृढ़ बने रहो, मेरी यही कामना है ।’’

पंडित सर्वदयाल अवाक् रह गए। वे समझ न सके कि ये सच है । सचमुच ही भाग्य ने फिर पल्टा खाया है। आश्चर्य से ठाकुर साहब की और देखने लगे । ठाकुर साहब ने कथन को जारी रखते हुए कहा– ‘‘उस दिन तुमने मेरी बात रद्‌द कर दी लेकिन आज यह न होगा। तुम्हारी दुकान पर बैठा हूँ, जब तक हाँ न कहोगे तब तक यहाँ से नहीं हिलूँगा ।’’

पंडित सर्वदयाल की आँखों में आँसू झलकने लगे । गर्व ने गर्दन झुका दी । तब ठाकुर साहब ने सौ–सौ के दस नोट बटुए में से निकाल कर उनके हाथ में दिए और कहा– ‘‘यह तुम्हारे साहस का पुरस्कार है । तुम्हें इसे स्वीकार करना होगा ।’’ पंडित सर्वदयाल अस्वीकार न कर सके । ठाकुर हनुमंतराय जब मोटर में बैठे तो पुलकित नेत्रों में आनंद का नीर झलकता था, मानो कोई निधि हाथ लग गई हो।

—०—

शब्द संसार

उद्‌यत (वि.सं.) = उग्र, प्रचंड
वाग्मिता (पुं.सं.) =अच्छा वक्ता, विद्‌वान
आवृत्त (वि.) = घिरा हुआ, ढँका हुआ

मुहावरे
गदगद होना = अत्यंत प्रसन्न होना
पाँसा पलटना = विपरीत होना
अवाक होना = अचंभित होना

पाठ से आगे

विविध राज्यों में प्रकाशित होने वाली हिंदी साहित्य की पत्रिकाओं की जानकारी नीचे दिए गए मुद्‌दों के आधार पर लिखिए ।

नाम — राज्य — प्रकाशक

पाठ के आँगन में

(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :–

(क) संजाल :

यातायात के साधन

(ख) पाठ्‌यपुस्तक के पाठ से बीस शब्द ढूँढ़कर लिखिए ।

(२) ‘‘कोई और काम कर लूँगा, परंतु सच्चाई को न छोड़ूँगा ।’’ पंडित सर्वदयाल जी के इस वाक्य से उनके व्यक्तित्व का परिचय दीजिए ।

रचना बोध

....
....
....

भाषा बिंदु

(१) विज्ञापन पढ़िए और शब्द-युग्म ढूँढ़कर लिखिए :

खुश खबर ! खुश खबर !! खुश खबर !!!

हस्तकला वस्तुओं की प्रदर्शनी

भारत के विविध राज्यों में हाथों से बनाई गई वस्तुओं की भव्य प्रदर्शनी आपके शहर में !

कालावधि : २० अक्टूबर २०१७ से ३० अक्टूबर २०१७

समय : सुबह ११=00 से रात ९=00 तक

स्थान : गणेश कला क्रीडा मंदिर, पुणे

खरीदारी पर आकर्षक छूट !

साथ-ही-साथ विविध राज्यों के खाद्य व्यंजनों के ठेले

(स्टॉल्स् गाँव-शहर के छोटे-बड़े, बाल-बच्चे, महिला-पुरूष सभी घूमते-फिरते, हँसते-हँसते, खान-पान का स्वाद ले सकते हैं ।)

प्रवेश : निःशुल्क

(२) निम्न विषयों पर आकर्षक विज्ञापन बनाइए :

विषय : (१) खेल-सामग्री की दुकान (२) चित्रकला प्रदर्शनी (३) अंतरराज्यीय कबड्डी प्रतियोगिता

(३) समाचार पत्र में छपवाने के लिए विज्ञापन बनाइए ।

१. नियुक्ति के लिए =लिपिक, DTP ऑपरेटर, शिक्षक, ड्राइवर आदि

१३. विप्लव-गान

– *बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'*

लेखनीय

आयोजक के नाते 'कवि संम्मेलन' संबंधी विज्ञापन बनाइए :-

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

●विद्‌यार्थियों को विज्ञापन बनाने के लिए आवश्यक मुद्‌दें दे । ● विज्ञापन के प्रारूप संबंधी चर्चा करें । ● स्थल, समय, प्रवेश शल्क आदि को लेकर विज्ञापन का कच्चा प्रारुप बनवाएँ ● आकर्षक विज्ञापन बनवाएँ ।

कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए,
एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर से आए,
प्राणों के लाले पड़ जाएँ, त्राहि-त्राहि रव नभ में छाए,
नाश और सत्यानाशों का... धुआँधार जग में छा जाए,
बरसे आग, जलद जल जाएँ, भस्मसात भूधर हो जाएँ,
पाप-पुण्य सदसद भावों की, धूल उड़ उठे दायें-बायें,
नभ का वक्षस्थल फट जाए, तारे टूक-टूक हो जाएँ
कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए ।

माता की छाती का अमृत मय पय काल- कूट हो जाए,
आँखों का पानी सूखें, वे शोणित की घूँटें हो जाएँ,
एक ओर कायरता काँपे, गतानुगति विगलित हो जाए,
अंधे मूढ़ विचारों की वह अचल शिला विचलित हो जाए,
और दूसरी ओर कँपा देने वाला गर्जन उठ धाए,
अंतरिक्ष में एक उसी नाशक तर्जन की ध्वनि मँडराएँ,
कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए ।

नियम और उपनियमों के ये बंधन टूक-टूक हो जाएँ,
विश्वंभर की पोषण वीणा के सब तार मूक हो जाएँ
शांति दंड टूटे उस महारुद्र का सिंहासन थर्राए
उसकी श्वासोच्छ्‌वास दायिका, विश्व के प्रांगण में घहराए,
नाश ! नाश हा महानाश !!! की प्रलयंकारी आँख खुल जाए,
कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाए ।

परिचय

जन्म : १८९७ भयाना, ग्वालियर (म.प्र.)
मृत्यु : २९ अप्रैल १९६०
परिचय : 'नवीन' जी को अपने देश की संस्कृति और सभ्यता पर बड़ा गर्व था । राष्ट्रप्रेम उसकी कविताओं का मुख्य स्वर है । आप कवि, गद्‌यकार, अद्‌वितीय वक्ता, राजनीतिज्ञ और पत्रकार थे । आपकी लेखनशैली पर आपकी अपनी भाषण कला का स्पष्ट प्रभाव है ।
प्रमुख कृतियाँ : प्राणार्पण, उर्मिला, अपलक, रश्मिरेखा, कुंकुम, हम विषपायी जनम के आदि (काव्यसंग्रह)

पद्‌य संबंधी

'नवीन' जी इस कविता के माध्यम से कवियों को समाज में नव जागरण करने वाली, क्रांतिकारी रचनाएँ करने के लिए प्रेरित किया है ।

प्रस्तुत कविता में कवि ने कवि को ऐसी......

सावधान ! मेरी वीणा में, चिनगारियाँ आन बैठी हैं,
टूटी हैं मिजराबें, अँगुलियाँ दोनों मेरी ऐंठी हैं ।
कंठ रुका है महानाश का मारक गीत रुद्ध होता है,
आग लगेगी कण में, हृत्तल में अब क्षुब्ध युद्ध होता है ।
झाड़ और झंखाड़ दग्ध हैं - इस ज्वलंत गायन के स्वर से
रुद्ध गीत की युद्ध तान है निकली मेरे ंतरतर से ।

आसपास

हिंदी के प्रसिद्ध कवियों की जानकारी और रचनाओं के नाम संकलित कीजिए ।

संभाषणीय

उपक्रमों की जानकारी की संगणक की सहायता से क्रमबद्ध प्रस्तुति कीजिए ।

शब्द संसार

भस्मसात (वि.सं.) = जलकर राख हो जाना ।
भूधर (पुं. सं.) = पहाड़, पर्वत
शोषित (वि.सं.) =लाल, लहू
गतानुगति (वि.सं.) =अनुसार
विगलित (वि.) =ढीला पड़ना, बिगड़ना
दायिका (वि.सं.) =दायक देनेवाला
मिजराबें (स्त्री.अ.) =तार का नुकीला छल्ला
झाड़-झंखड़ (पु.सं.) =काँटेदार पेड़ों का समूह

श्रवणीय

अंतरजाल से कोई प्रेरणागीत सुनिए ।

पठनीय

पुस्तकालय से किसी सफल महिला खिलाड़ी की जानकारी पढ़िए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) संजाल :

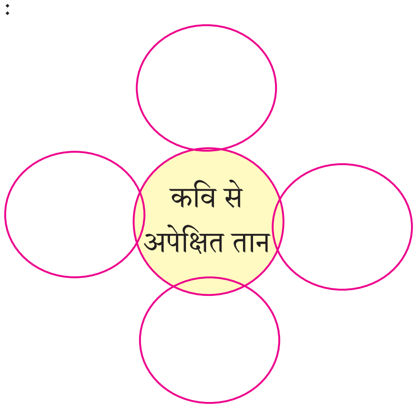

(ख) 'नियम उपनियमों के ये बंधन टूक-टूक हो जाए' इस पंक्ति द्वारा कवि सूचित करना चाहते है

(२) प्रथम चरण का भावार्थ लिखिए ।

पाठ से आगे

संस्कारक्षम उद्धरण, भाषाई सौंदर्यवाले वाक्य, सुवचनों का संकलन कीजिए ।

रचना बोध

....
....
....

रचना विभाग

- पत्रलेखन (व्यावसायिक /कार्यालयीन)
- कहानी लेखन
- गद्‍य आकलन (प्रश्न तैयार करना)
- वृत्तांत लेखन
- विज्ञापन
- निबंध

पत्रलेखन

कार्यालयीन पत्र

कार्यालयीन पत्राचार के विविध क्षेत्र

✲ बैंक, डाकविभाग, विद्‍युत विभाग, दूरसंचार, दूरदर्शन आदि से संबंधित पत्र
✲ महानगर निगम के अन्यान्य / विभिन्न विभागों में भेजे जाने वाले पत्र
✲ माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडल से संबंधित पत्र
✲ अभिनंदन/प्रशंसा (किसी अच्छे कार्य से प्रभावित होकर) पत्रलेखन करना ।
✲ सरकारी संस्था द्‍वारा प्राप्त देयक (बिल आदि) से संबंधित शिकायती पत्र

व्यावसायिक पत्र

व्यावसायिक पत्राचार के विविध क्षेत्र

✲ किसी वस्तु/सामग्री/ पुस्तकें आदि की माँग करना ।
✲ शिकायती पत्र - दोषपूर्ण सामग्री/ चीजें/ पुस्तकें/ पत्रिका आदि प्राप्त होने के कारण पत्रलेखन
✲ आरक्षण करने हेतु (यात्रा के लिए) ।
✲ आवेदन पत्र - प्रवेश, नौकरी आदि के लिए ।

प्रशंसा पत्र

प्रशंसनीय कार्य करने के उपलक्ष्य में

उद्‍यान विभाग प्रमुख

अनुपयोगी वस्तुओं से आकर्षक तथा उपयुक्त वस्तुओं की निर्मिति । जैसे- आसन व्यवस्था, पेय जल सुविधा, स्वच्छता गृह आदि ।

अभिनंदन/प्रशंसा पत्र

प्रशंसनीय कार्य के उपलक्ष्य में

बस स्थानक प्रमुख

ब्रेक फेल होने के बाद चालक ने अपनी समयसूचकता तथा होशियारी से सभी यात्रियों के प्राण बचाए ।

कहानी लेखन

- ✻ मुद्दों के आधार पर कहानी लेखन करना ।
- ✻ शब्दों के आधार पर कहानी लेखन करना ।
- ✻ किसी कहावत, सुवचन, मुहावरे, लोकोक्ति पर आधारित कहानी लेखन करना ।

मुहावरे, कहावतें/लोकोक्तियाँ, सुवचन,

मुहावरे

✻ आँखों पर परदा पड़ना ।
✻ एड़ी-चोटी का जोर लगाना ।
✻ रुपया पानी की तरह बहाना ।
✻ पहाड़ से टक्कर लेना ।
✻ जान हथेली पर धरना (रखना) ।
✻ लकीर का फकीर होना ।
✻ पगड़ी सँभालना ।
✻ काला अक्षर भैंस बराबर ।
✻ घाट-घाट का पानी पीना ।
✻ अकल के घोड़े दौड़ाना ।
✻ पत्थर की लकीर होना ।
✻ भंडाफोड़ करना ।
✻ रंगा सियार होना ।
✻ हाँ में हाँ मिलाना ।

कहावतें/लोकोक्तियाँ

✻ अंधों में काना राजा ।
✻ ओखली में सिर दिया तो मूसलों का क्या डर ।
✻ चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए ।
✻ जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि ।
✻ अंधा बाँटे रेवड़ी अपने कुल को देय ।
✻ अंधेर नगरी चौपट राजा ।
✻ आँख और कान में चार अंगुल का फर्क है ।
✻ अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत ।
✻ हाथ कंगन को आरसी क्या ।
✻ चोर की दाढ़ी में तिनका ।
✻ कोयले की दलाली में हाथ काला ।
✻ अधजल गगरी छलकत जाए ।
✻ निंदक नियरे राखिए ।
✻ ढाक के तीन पात ।

सुवचन

✻ वसुधैव कुटुंबकम् ।
✻ सत्यमेव जयते ।
✻ पेड़ लगाओ, पृथ्वी बचाओ ।
✻ जल ही जीवन है ।
✻ पढ़ेगी बेटी तो सुखी रहेगा परिवार ।
✻ अनुभव महान गुरु है ।
✻ बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ ।
✻ अतिथि देवो भवः ।
✻ राष्ट्र ही धन है ।
✻ जीवदया ही सर्वश्रेष्ठ है ।
✻ असफलता सफलता की सीढ़ी है ।
✻ श्रम ही देवता है ।
✻ राखौ मेलि कपूर में, हींग न होत सुगंध ।
✻ करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान ।

निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर कहानी लिखिए तथा उसे उचित शीर्षक देकर उससे प्राप्त होने वाली सीख भी लिखिए :

एक लड़का ——— रोज निश्चित समय पर घर से निकलना ——— वृद्धाश्रम में जाना ——— माँ का परेशान होना ——— सच्चाई का पता चलना ——— गर्व महसूस होना ।

निम्नलिखित शब्दों के आधार पर कहानी लिखिए तथा उसे उचित शीर्षक दीजिए :

रोबोट (यंत्रमानव), गुफा, झोंपड़ी, समुद्र ।

* प्रश्न निर्मिति के लिए निम्नलिखित प्रश्नचार्ट उपयुक्त हो सकता है ।

प्रश्नचार्ट-

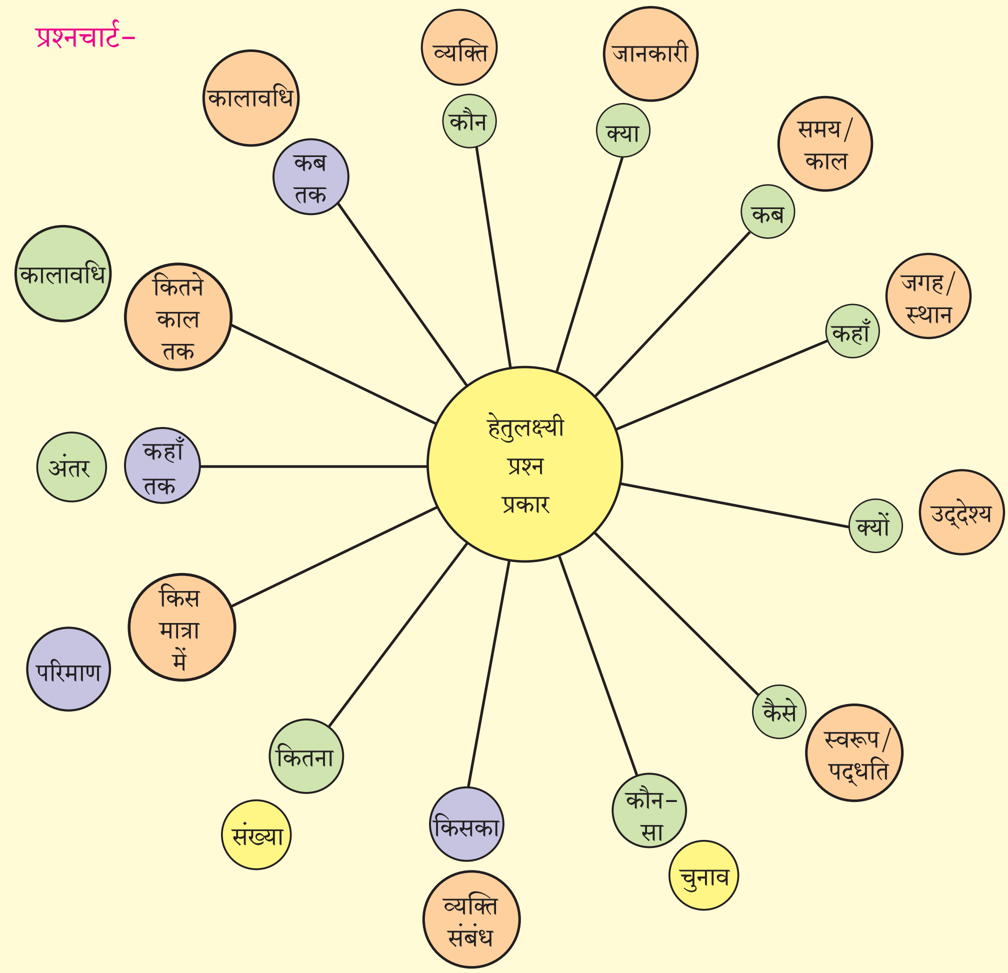

निम्नलिखित अपठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) कारण लिखिए :-

(क) विमान के प्रति लेखक का आकर्षित होना

(ख) लेखक ने एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग को अपना अध्ययन क्षेत्र चुनना

पहली बार मैंने एम. आई. टी. में निकट से विमान देखा था, जहाँ विद्‌यार्थियों को विभिन्न सब- सिस्टम दिखाने के लिए दो विमान रखे थे । उनके प्रति मेरे मन में विशेष आकर्षण था । वे मुझे बार-बार अपनी ओर खींचते थे । मुझे वे सीमाओं से परे मनुष्य की सोचने की शक्ति की जानकारी देते थे तथा मेरे सपनों को पंख लगाते थे । मैंने एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग को अपना अध्ययन क्षेत्र चुना क्योंकि उड़ान भरने के प्रति मैं आकर्षित था । वर्षों से उड़ने की अभिलाषा मेरे मन में पलती रही । मेरा सबसे प्यारा सपना यही था कि सुदूर आकाश में ऊँची और ऊँची उड़ान भरती मशीन को हैंडल किया जाए ।

(२) 'मेरी अभिलाषा' लगभग छह से आठ पंक्तियों में लिखिए ।

● वृत्तांत लेखन

अपने विद्यालय में मनाए गए 'वाचन प्रेरणा दिवस/हिंदी दिवस/विज्ञान दिवस/राजभाषा दिवस/ शिक्षक दिवस/ वसुंधरा दिवस/ क्रीड़ा दिवस आदि का वृत्तांत रोचक भाषा में लिखिए । (लगभग ६० से ८० शब्दों में)

(वृत्तांत में स्थल, काल और घटना का होना अनिवार्य है ।)

विज्ञापन

निम्न विषयों पर विज्ञापन तैयार किए जा सकते हैं ।

(१) वस्तुओं की उपलब्धि :– नवनिर्मित (किसी भी वस्तु संबंधी)
जैसे– किताबें, कपड़े, घरेलू आवश्यक वस्तुएँ, उपकरण, फर्नीचर, स्टेशनरी, शालोपयोगी वस्तुएँ तथा उपकरण आदि ।

(२) शैक्षिक :– शिक्षा में संबंधित योगासन तथा स्वास्थ्य शिविर, स्वच्छ, सुंदर शुद्ध लिखावट, चित्रकला, इंटरनेट तथा विविध ऐप्स आदि कलाओं से संबंधित अभ्यास वर्ग, व्यक्तित्व विकास शिविर आदि ।

(३) आवश्यकता :– वाहक–चालक, सेवक, चपरासी, द्‌वारपाल, सुरक्षा रक्षक, व्यवस्थापक, लिपिक, अध्यापक, संगणक अभियंता, आदि ।

(४) व्यापार विषयक :– दूकान, विविध वाहन, उपकरण, मकान, मशीन, गोदाम, टी. वी., संगणक, भूखंड, रेफ्रीजरेटर आदि ।

(५) मनोरंजन तथा ज्ञानवर्धन :– व्याख्यानमाला, परिसंवाद, नाटक वार्षिकोत्सव, विविध विशेष दिनों के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम समारोह आदि ।

(६) पर्यटन संबंधी :– यात्रा विषयक, आरक्षण आदि

(७) वैयक्तिक :– श्रद्‌धांजली, शोकसंदेश, जयंती, पुण्यतिथि, गृहप्रवेश, बधाई आदि ।

निबंध लेखन

निबंध

वैचारिक	वर्णनात्मक	कल्पनाप्रधान	चरित्रात्मक	आत्मकथात्मक
(१) सेल्फी : सही या गलत	विज्ञान प्रदर्शनी का वर्णन	यदि श्यामपट बोलने लगा	मेरा प्रिय रचनाकार	भूमिपुत्र की आत्मकथा
(२) अकाल : एक भीषण समस्या	नदी किनारे एक शाम	यदि किताबें न होती	मेरे आदर्श	मैं हूँ भाषा

विद्‌यार्थियों द्‌वारा बनाई गईं हस्तकला तथा चित्रकला की वस्तुओं की प्रस्तुति करने के लिए विज्ञापन

- विशेषताएँ तथा उद्‌देश्य
- स्थान, समय, तिथि

गद्‌य आकलन–प्रश्न तैयार करना

विवेकानंद की आत्मकथा से

निम्नलिखित गद्‌यांश पर ऐसे पाँच प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर एक–एक वाक्य में हो ।

मेरा विश्वास है कि नेता गढ़े नहीं जाते । वे जन्म लेते हैं । नेता का असली लक्षण है कि वे भिन्न मतावलंबियों को आम संवेदना के जरिए इकट्‌ठा कर सकते हैं । यह काम स्वाभाविक क्षमतावश अपने आप संपन्न हो जाता है, कोशिश करके यह संभव नहीं है । पश्चिमी देश से प्रत्यावर्तन से कुछ पहले एक अंग्रेज मित्र ने मुझसे सवाल किया था, ''स्वामी जी, चार वर्ष विलास की लीलाभूमि, गौरव के मुकुटधारी, महाशक्तिशाली पाश्चात्य भूमि पर भ्रमण के बाद मातृभूमि आपको कैसी लगेगी ?''

मैंने उत्तर दिया, ''पाश्चात्य भूमि में आने से पहले मैं भारत से प्यार करता था । अब भारत भूमि का धूल कण तक मेरे लिए पवित्र है । भारत की वायु मेरे लिए पवित्रता युक्त है । मेरे लिए वह देश अब तीर्थ–स्वरूप है ।'' इसके अलावा मेरे मन को अन्य कोई उत्तर नहीं सूझा ।

नमूना प्रश्न ः

(१) लेखक का विश्वास किस बात में है ?
(२) नेता के असली लक्षण कौन–से होते हैं ?
(३) स्वामी जी कितने साल पाश्चात्य भूमि पर रहे ?
(४) लेखक के लिए भारत की वायु कैसी है ?
(५) लेखक किसे तीर्थ स्वरूप मानते हैं ?

व्याकरण विभाग

शब्द

(१) विकारी शब्द और उसके भेद

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया
जातिवाचक	पुरुषवाचक	गुणवाचक	सकर्मक
व्यक्तिवाचक	निश्चयवाचक	परिमाणवाचक १.निश्चित २.अनिश्चित	अकर्मक
भाववाचक	अनिश्चयवाचक निजवाचक	संख्यावाचक १. निश्चित २. अनिश्चित	संयुक्त
द्रव्यवाचक	प्रश्नवाचक	सार्वनामिक	प्रेरणार्थक
समूहवाचक	संबंधवाचक	–	सहायक

(२) अविकारी (अव्यय) और उसके भेद

क्रियाविशेषण
संबंधसूचक
समुच्चयबोधक
विस्मयादिबोधक

(३) **काल और उनके भेद**

- वर्तमान काल → सामान्य, अपूर्ण, पूर्ण
- भूतकाल → सामान्य, अपूर्ण, पूर्ण
- भविष्य काल → सामान्य

(४) **वाक्य के प्रकार**

रचना की दृष्टि से
१. साधारण
२. मिश्र
३. संयुक्त

अर्थ की दृष्टि से
१. विधानार्थक
२. निषेधार्थक
३. प्रश्नार्थक
४. आज्ञार्थक
५. विस्मयाधिबोधक
६. संदेशसूचक

(५) **शुद्‌धाक्षरी–** शब्दों को शुद्‌ध रूप में लिखना ।

(६) **मुहावरों का प्रयोग/चयन करना**

(७) **संधि और उसके भेद**

स्वर संधि, व्यंजन संधि, विसर्ग संधि

(८) **अलंकार और उनके भेद**

शब्दालंकार
(१) अनुप्रास
(२) यमक
(३) श्लेष

अर्थालंकार
(१) उपमा
(२) उत्प्रेक्षा
(३) रूपक

(९) **छंद और उनके प्रकार**

दोहा, चौपाई, सोरठा, गीतिका

(१०) **शब्द संपदा–** व्याकरण ५ वीं से ८ तक

शब्दों के लिंग, वचन, विलोमार्थक, समानार्थी, पर्यायवाची, शब्दयुग्म, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, भिन्नार्थक शब्द, कठिन शब्दों के अर्थ, विरामचिह्‌न, उपसर्ग-प्रत्यय पहचानना/अलग करना, लय-ताल युक्त शब्द ।

—०—

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

हिंदी कुमारभारती इयत्ता ९ वी (हिंदी माध्यम)

₹ 65.00